स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

अक्टूबर 2025, पृष्ठ : 50, मूल्य 6:00 रूपये

प्रकाश पर्व दीपावली - 2025

श्रमण भगवान महावीर स्वामी के 2552वें निर्वाण कल्याणक

अमृत पुरुष, साहित्य मनीषी, श्रमण संघ के तृतीय पटट्धर आचार्य सम्राट

पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज सा.

(95वाँ जन्मोत्सव - कार्तिक कृष्ण तेरस, वि.सं. 1988) पर

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से

कोटिशः वन्दन नमन - हार्दिक शुभेच्छाएं

।। श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ ।।

सूरत में विराजित आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. से जैन विजनरी काउंसिल (JVC) के संदर्भ में आशीर्वाद प्राप्त करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन।

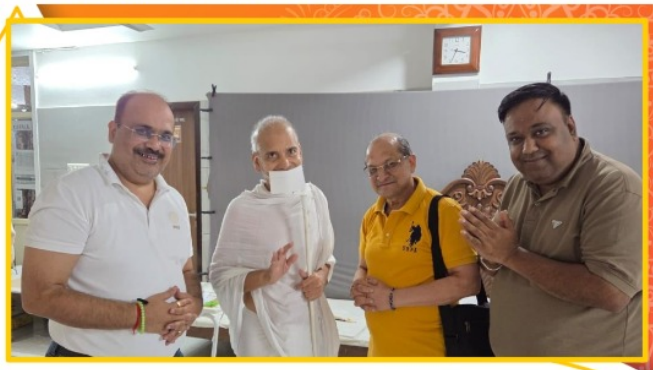

प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनि जी म.सा. से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन।

युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. से जैन विजनरी काउंसिल (JVC) के संदर्भ में आशीर्वाद प्राप्त करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन।

युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन।

युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. अपने 59वें जन्मोत्सव पर उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को उद्‌बोधन प्रदान करते हुए।

युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. के जन्मोत्सव पर राष्ट्रीय महिला चेयरमैन श्रीमती अनामिका कुलदीप जी तलेसरा जैन अपने भाव अभिव्यक्त करते हुए।

पनवेल में युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. के जन्मोत्सव के अवसर पर उपस्थित श्रावक-श्राविकाएं।

युवाचार्य श्री के जन्मोत्सव पर तपस्वी बहन का अभिनंदन करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला शाखा की पदाधिकारीगण एवं स्थानीय श्राविकाएं।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 69 | अंक - 10 | अक्टूबर - 2025 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक

प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन
बड़ौत / दिल्ली

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट,
नई दिल्ली-110 001

011-23363729, 23365420

+91 90197 31906

E-mail : aissjc1906@gmail.com

Website : www.jainconference.org

youtube.com/@aissjc

facebook.com/aissjc1906

x.com/aissjc1906

instagram.com/aissjc1906

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

aissjc137342@cnrb

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

अनुक्रमणिका

अध्यक्षीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	09-10
सम्पादकीय	- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	11
भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव	- आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	12
जैन कॉन्फ्रेंस के भविष्य की दृष्टि जैन विजनरी काउंसिल (JVC)		13-17
भगवान महावीर का निर्वाण...	- वाचनाचार्य पू. श्री विशालमुनि जी म.सा.	18-19
श्री वर्धमान स्थानकवासी...	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा.	20-21
विश्व संत पुष्करमुनि जी...	- प्रवर्तक पू. श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा.	22-23
साहित्य दिवाकर...	- सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म.सा.	24-25
खद्दरधारी गणेशीलाल जी...	- उप-प्रवर्तक पू. श्री श्रुतमुनि जी म.सा.	26-27
जैन दिवाकर चौथमल जी...	- श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर	28-29
प्रज्ञा पुरुष देवेन्द्रमुनि जी...	- श्री प्रशान्त जैन 'गांधरा', दिल्ली	31
क्या आप सामाजिक...	- श्री शशिकान्त 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	32
मेवाड़ गौरव अम्बालाल जी...	- श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	33-34
युवाचार्य मधुकरमुनि जी...	- श्रीमती कमला सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई	35-36
क्या आप चुनौतियों...	- श्री अंकुर जैन, नई दिल्ली	37
एकता आध्यात्मिकता...	- श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा जैन, सूरत	38-39
संयम और समय के प्रहरी...	- डॉ. दिलीप धींग जैन, चेन्नई	40
मरने के बाद भी...	- सी.ए. अजीत जैन पटवा, फरीदाबाद	41
समाचार प्रकाश		42-48

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश'
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817	09.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
02.	श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838	10.	श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
03.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015	11.	श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
04.	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440	12.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	13.	श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
06.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	14.	श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
07.	प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448	15.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
08.	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795	16.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली - मो. : 98110 75336

राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली
मो. 98373 94448	मो. 83968 00000	मो. : 98116 14567

राष्ट्रीय चेयरमैन	राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री विजय जैन, पानीपत : 98966 00022	श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई : 76665 40600	श्री जसवंत जैन, दिल्ली : 98104 35108

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष: श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, औरंगाबाद	94207 64456

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़बाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

श्री विपुल जैन, दिल्ली - अध्यक्ष	87662 14456
श्री अंकुर जैन, दिल्ली - चेयरमैन	98711 98111
श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद - कार्याध्यक्ष	93767 37111
श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत - वरिष्ठ उपाध्यक्ष	93745 44138
श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद - महामंत्री	91522 11555
श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली - कोषाध्यक्ष	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली - अध्यक्षा	98687 04326
श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत - चेयरमैन	94278 08401
श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली - वाईस चेयरमैन	98187 44166
श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत - वरिष्ठ उपाध्यक्षा	92515 74016
श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना - महामंत्री	79737 96548
श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली - कोषाध्यक्षा	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री बी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाबिया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, औरंगाबाद	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

संविधान संशोधन समिति

श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
डॉ. अशोक पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री एस. के. जैन, दिल्ली	98102 78217
श्री सुनील चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अनुशासन समिति

राष्ट्रीय संयोजक : श्री एस. के. जैन 'सी. ए.', दिल्ली	98102 78217
सदस्य : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
सदस्य : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
सदस्य : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
सदस्य : श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
सदस्य : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
सदस्य : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

हर्षोल्लास एवं प्रकाश के पावन पर्व **दीपावली**

भगवान महावीर स्वामी - 2552वाँ निर्वाण कल्याणक

गणधर गौतम स्वामी केवल ज्ञान दिवस की

आप सभी को

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस

के समस्त राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से

...हार्दिक बधाई शुभकामनाएँ...

अतुल जैन — राष्ट्रीय अध्यक्ष
विजय जैन — राष्ट्रीय चेयरमैन
नरेश बोहरा जैन — राष्ट्रीय बाईस चेयरमैन
सुभाष ओसवाल जैन — राष्ट्रीय पर्यवेक्षक
सत्यभूषण जैन — राष्ट्रीय पर्यवेक्षक
प्रशान्त जैन — राष्ट्रीय मुख्य समन्वयक
जसवंत जैन — राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
महेन्द्र बोकरिया जैन — राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. अमितराय जैन — राष्ट्रीय महामंत्री
विनय कुमार जैन — राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
रजनीश जैन 'राज' — राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
संतोष जैन — राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा
विपुल जैन — राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष

एवं समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय वरिष्ठ मार्गदर्शक समिति - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

:: वरिष्ठ मार्गदर्शक ::

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा) 92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक) 98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक) 98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु) 98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु) 94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु) 94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब) 95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब) 98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब) 98140 88391
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा) 94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा) 98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा) 93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा) 99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा) 98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा) 99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा) 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तद प्रदेश) 98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) 98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश) 99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश) 99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली 93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली 98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली 99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली 98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली 93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली 98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली 88266 78626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली 98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली 98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली 98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली 98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली 88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली 98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली 98112 33462
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान) 94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान) 98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान) 94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान) 94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान) 88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान) 94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान) 94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान) 98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान) 94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान) 98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश) 73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश) 98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश) 98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश) 98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश) 94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश) 94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र) 98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र) 99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र) 94224 29611
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र) 98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र) 98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र) 98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र) 87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र) 98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र) 97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात) 99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात) 93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात) 98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात) 93277 57610
श्री हीरालाल खाबिया जैन, अहमदाबाद (गुजरात) 94270 31776
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)

अध्यक्षीय

अहिंसा से आलोक तक : जीवन बने साधना

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय पाठकों सादर जय जिनेन्द्र !

हाल ही में श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की नवगठित जैन विजनरी काउंसिल (JVC) की प्रथम बैठक जैन भवन, नई दिल्ली में संपन्न हुई। पूज्य युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म.सा. के पावन सान्निध्य और आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के मंगल आशीर्वाद से यह बैठक संगठन के भविष्य की दिशा तय करने वाली सिद्ध हुई।

JVC का उद्देश्य है - श्रमण संघ, जैन कॉन्फ्रेंस और प्रोफेशनल वर्ग के बीच संवाद एवं समन्वय स्थापित कर संगठन को नई सोच और दिशा प्रदान करना। बैठक में संविधान एवं नीति सुधार, महिला-युवा सशक्तिकरण, डिजिटल योजना, मीडिया सुदृढ़ीकरण और दीर्घकालिक परियोजनाओं पर सार्थक चर्चा हुई।

JVC का विजन - "एक क्लिक में पूरा संगठन" - डिजिटल युग में संगठनात्मक एकता का प्रतीक है। इसके अंतर्गत ग्लोबल पीस समिट, 1008 कन्याओं का सामूहिक विवाह, विहारधाम श्रृंखला तथा रिसर्च व एजुकेशन प्रोजेक्ट्स जैसी योजनाओं का क्रियान्वयन प्रस्तावित है। हमारा लक्ष्य केवल संगठन नहीं, बल्कि समाज का जागरण, समन्वय और आत्मविकास है।

पर्वों का, प्रेरणाओं का और पुनर्जागरण का समय : अक्टूबर भारतीय संस्कृति का विशेष महीना है - ऋतु परिवर्तन का, आत्मजागरण का और साधना के नवप्रारंभ का समय। इस माह का प्रत्येक दिन किसी न किसी महापुरुष, आदर्श या पर्व से जुड़ा है।

इस वर्ष अक्टूबर और भी पावन है - विश्व अहिंसा दिवस, युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. का 59वाँ जन्मोत्सव, दशहरा, आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. का 95वाँ जन्मोत्सव, धनतेरस, दीपावली और भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक वर्ष का संगम।

इन सभी अवसरों का सार एक ही है - अहिंसा, संयम और सेवा।

अहिंसा - मनुष्य के भीतर की करुणा का उत्सव : अक्टूबर का आरंभ विश्व अहिंसा दिवस से होता है - यह केवल एक तिथि नहीं, बल्कि मानवता के आत्मपरीक्षण का क्षण है। भगवान महावीर स्वामी ने कहा -**"अहिंसा परम धर्मः।"** अहिंसा केवल हिंसा से बचना नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म में कोमलता, सहिष्णुता और करुणा का समावेश है।

आज जब संसार प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ से ग्रस्त है, तब जैन समाज की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यदि हमारे शब्द शांति के हों, कर्म सेवा के हों और विचार सह-अस्तित्व के हों, तो वही सच्ची अहिंसा है।

युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.-युवा चेतना के संवाहक : इस माह हम युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. का 59वाँ जन्मोत्सव मनाते हैं।

उनका जीवन त्याग, अनुशासन और नवविचार का उदाहरण है। वे आधुनिकता और अध्यात्म को विरोधी नहीं, बल्कि पूरक मानते हैं।

उनका संदेश स्पष्ट है - "युवा वही है जो आत्मसंयम से समाज का नेतृत्व करे।"

आज के युवा के लिए यह आह्वान दिशा-सूचक है - ज्ञान को आचरण बनाओ, तकनीक को सेवा का माध्यम बनाओ और संवाद को समाज का सेतु बनाओ।

दशहरा : आत्मविजय का पर्व : दशहरा केवल रावण-वध की कथा नहीं, बल्कि अहंकार, क्रोध, लोभ और ईर्ष्या पर विजय का प्रतीक है।

प्रत्येक व्यक्ति के भीतर के "दहा सिर" तब शांत होते हैं जब आत्मसंयम प्रबल होता है। विजयदशमी हमें सिखाती है कि धर्म कोई तर्क नहीं, आचरण है, सत्य कोई शब्द नहीं, साधना है। सच्ची विजय तब होती है जब हम अपने भीतर के अंधकार को पहचानकर उसका अंत करते हैं।

आचार्य सम्राट पूज्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. - ज्ञान और संयम के शिखर : श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. का 95वाँ जन्मोत्सव इस माह श्रद्धा से मनाया जा रहा है। उनका जीवन अनुशासन, ज्ञान और करुणा का अद्वितीय संगम था।

उन्होंने श्रमण संघ को एकता, निष्ठा और सेवा की सुदृढ़ नींव दी। उनकी प्रेरणा आज भी प्रत्येक साधु-साध्वी और श्रावक के जीवन में प्रकाश बनकर विद्यमान है।

धनतेरस - समृद्धि नहीं, संतुलन का संदेश : धनतेरस आत्ममूल्यांकन का पर्व है। भगवान महावीर ने कहा - "धन का उद्देश्य उपभोग नहीं, उपकार है।" जब धन धर्म से संचालित होता है, तो वह कल्याणकारी बनता है। सच्ची समृद्धि वही है जो सेवा में लगे, लोभ से मुक्त रहे और विनम्रता में झुके।

दीपावली - अंधकार से नहीं, अज्ञान से मुक्ति का पर्व : दीपावली वह क्षण है जब भगवान महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया। उनके 2552वें निर्वाण वर्ष पर हमें यह स्मरण करना चाहिए कि प्रकाश बाहर नहीं, भीतर जलाना है। हमारा मन ही दीप है, विचार उसका तेल है, और साधना उसकी ज्योति। महावीर का दर्शन सिखाता है - अहिंसा नीति है, सत्य व्यवहार है और मुक्ति भीतर की निर्मलता में निहित है।

श्रमण संस्कृति - त्याग में आनंद का संदेश : श्रमण संस्कृति भारतीय आत्मा की धरोहर है। त्याग, संयम और आत्मशुद्धि का यह मार्ग आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

हमारा कर्तव्य है कि हम अपने बच्चों को साधु-साध्वी भगवंतों के सान्निध्य में ले जाकर यह संस्कार दें कि सफलता डिग्री से नहीं, संस्कार से मिलती है।

जैन समाज की भूमिका - नेतृत्व, सेवा और एकता : आज जैन समाज शिक्षित और समृद्ध है, पर उसकी वास्तविक शक्ति उसकी सेवा भावना और एकता में है।

जैन कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य है - धर्म, शिक्षा और सेवा को एक सूत्र में जोड़ना : हर श्रावक-श्राविका अपने समय, क्षमता और संसाधन से समाज निर्माण में योगदान दे - यही संगठन की सच्ची साधना है।

यह माह हमें आत्मचिंतन का अवसर देता है, क्या हमारे कर्मों से समाज में शांति बढ़ती है? क्या हमारे निर्णय धर्म पर आधारित हैं? परिवर्तन की शुरुआत स्वयं से हो-यही सच्ची साधना है। भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर हम प्रतिज्ञा लें-क्रोध नहीं, करुणा से बोलेंगे, हिंसा नहीं, सह-अस्तित्व का मार्ग चुनेंगे, स्वार्थ नहीं, सेवा को जीवन का आधार बनाएंगे।

आप सभी को विश्व अहिंसा दिवस, युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. के 59वें जन्मोत्सव, दशहरा, आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. के 95वें जन्मोत्सव, धनतेरस, दीपावली और भगवान महावीर स्वामी के 2552वें निर्वाण कल्याणक वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

❖❖

सम्पादकीय

विजय का पर्व - आत्म जागरण की प्रेरणा

- प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री
E-mail : amitraijain78@gmail.com

अक्टूबर का यह महीना जैन समाज और समस्त भारतवर्ष के लिए आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र है। एक ओर यह विजयदशमी का संदेश लेकर आता है - जहाँ असत्य, अहंकार और अन्याय पर सत्य, विनम्रता और धर्म की विजय का उत्सव मनाया जाता है, वहीं दूसरी ओर यह हमें भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक की स्मृति में मुक्ति और प्रकाश के मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

इसी कालखंड में आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज की 98वीं जन्म जयंती का शुभ अवसर भी आता है - वह विभूति, जिन्होंने श्रद्धा, अध्ययन, अनुशासन और अध्यात्म के माध्यम से संघ, समाज और साधना तीनों को एक दिशा और दृष्टि प्रदान की। उनकी वाणी में करुणा थी, दृष्टि में ज्ञान और जीवन में आत्मबल। उन्होंने सिखाया कि विजय केवल शत्रु पर नहीं, बल्कि स्वयं पर प्राप्त करनी होती है - यही आंतरिक विजय विजयदशमी का वास्तविक संदेश है।

भगवान महावीर स्वामी का 2652वाँ निर्वाण कल्याणक हमें स्मरण कराता है कि जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण - अर्थात् कर्मबंधन से मुक्ति ही है। उनकी अंतिम उपदेश-वाणी "अप्पा दीपो भव" - 'स्वयं अपना दीपक बनो' - आज भी आत्मज्योति प्रज्वलित करने का आह्वान है। दीपावली का पर्व उसी निर्वाण-प्रकाश का प्रतीक है, जब सम्पूर्ण सृष्टि महावीर के मोक्ष के आलोक में नहाई थी। इसलिए दीपावली केवल दीपों का नहीं, बल्कि दीप्त आत्माओं का उत्सव है।

जब हम इस काल में इन सभी पर्वों को साथ मनाते हैं- विजयदशमी का उत्साह, आचार्य देवेन्द्र मुनि जी की जन्मजयंती का प्रेरणादायी स्मरण, महावीर निर्वाण का मोक्ष संदेश और दीपावली की उजास - तब यह हमें एक ही दिशा में ले जाता है -"अंधकार से प्रकाश की ओर और बाह्य विजय से आंतरिक विजय की ओर।"

आज आवश्यकता है कि हम इन पर्वों को केवल उत्सव के रूप में न मनाएँ, बल्कि उनके तत्वार्थ को आत्मसात् करें। हमारे भीतर जो आलस्य, असंयम और असहिष्णुता के रावण हैं - उन पर संयम, सहिष्णुता और आत्मचेतना के श्रीराम को विजय दिलाएँ।

हमारे भीतर जो अज्ञान का तम है - उसे महावीर के निर्वाण-ज्योति से आलोकित करें।

और जो जीवन कर्मजाल में उलझा है - उसे आचार्य देवेन्द्र मुनि जी की साधना से प्रेरित होकर धर्म और सेवा के मार्ग पर प्रवाहित करें।

श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य भी इसी भाव को आगे बढ़ाना है - जहाँ संगठन के माध्यम से संयम, सेवा और संवाद का विस्तार हो और समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर के महावीर को पहचान सके। इस दीपावली पर हम सबके अंतःकरण में आत्मज्योति, आत्मविजय और आत्मशांति का दीप प्रज्वलित हो - इसी मंगल भावना के साथ,

आप सभी को - विजयदशमी, आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. की जन्म जयन्ती, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक एवं दीपावली पावन पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएँ।

"आओ, भीतर के दीप जलाएँ
और संसार को प्रकाश दें।" ❖❖

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव

- आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी महाराज सा.

वीर निर्वाण महोत्सव का अवसर आ रहा है। प्रत्येक आत्मार्थी साधक की साधना में तीव्रता लाने का ये अवसर है। जब-जब महापुरुषों के कल्याणक आते है तब आत्मार्थी साधकों के त्याग, वैराग्य और वीतरागता के भाव चरम शिखर की ओर बढ़ते हैं।

भीतर भाव जागृत होते है कि मैं अपने सर्व कर्मों को क्षय कर तीव्रता से अपने लक्ष्य सिद्धालय की ओर आगे बढ़ूं।

निर्वाण कल्याणक की साधना : नवरात्र, दशहरा, दीपावली के अवसर पर साधक अपनी साधना में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि करता है। नवरात्रि में साधक ६ दिनों तक उत्कृष्ट आत्म-साधना के द्वारा अपने संकल्प के बल पर साधना में आगे बढ़ता है। दशहरे के दिवस पर अपनी शक्ति को पहचानता है और मोह कर्म को क्षय करने का संकल्प करता है। दशहरे से दीपावली तक उत्कृष्ट साधना कर निर्वाण कल्याणक की ओर बढ़ता है। आचारांग सूत्र के दूसरे अध्ययन में भगवान फरमाते है -

अरइ आउट्टे से मेहावी, खणंसि मुक्के।

आत्मार्थी साधक जब साधना करते हुए अरति अर्थात् चिन्ता से मुक्त हो जाता है तब वह क्षणभर अर्थात् स्वकल्प काल में अष्ट कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

इस सूत्र में रहस्य छिपा हुआ है। साधक अरति अर्थात् अप्रिय संयोग से द्वेष और रति अर्थात् प्रिय संयोग में आसक्ति, इन दोनों को समझ लेताहै कि ये दोनों ही मन की कल्पना मात्र है। इन दोनों से परे होकर वह यह देखता है कि दोनों ही वेदना स्वरूप है। ऐसा मेधावी तटस्थ व्यक्ति क्षण भर में, स्वल्प काल में मुक्त हो जाता है। इस प्रकार की तटस्थता, असंगत्व के लिए आवश्यक है - सम्यक् आलंबन में एकाग्रता। त्रिगुप्ति की साधना से तटस्थता आती है। यहां क्षण का अर्थ अल्प समय है। इस अनंतकाल चक्र के सामने सम्पूर्ण जीवन भी क्षण मात्र है।

महावीर की साधना : प्रभु महावीर ने अपने सम्पूर्ण जीवन काल में एकान्त व एकत्व में रहते हुए अपने मोह कर्म को क्षय किया। रति - अरति से ऊपर उठकर मन, वचन, काया के पार जाकर मन को गौण किया। अरति को दूर हटाकर जो कार्य अनंत काल में नहीं कर पाए थे, उस कार्य को स्वल्प काल में सम्पूर्ण कर लिया।

प्रभु पूर्व भव से ही क्षायिक समयक्त्व साथ लेकर आए थे, मात्र साढ़े बयालीस वर्षों के अथक पुरुषार्थ से, मोहकर्म को क्षय कर केवलज्ञान को प्रकट किया। शेष रहे 30 वर्ष के अंतर्गत अघाति कर्म क्षय कर निर्वाण को प्राप्त हुए। सिद्धालय में जा विराजे।

हम सभी साधकों के मध्य अशरीरी सिद्ध परमात्मा विराजमान है। बस चिन्ताओं से मुक्त होकर स्वल्प काल में हमने अष्ट कर्मों से मुक्त होना है, अतः इस पंचम काल में चतुर्थ काल की साधना के अन्तर्गत मन, वचन, काया के पार जाकर प्रभु महावीर की भांति, निज में स्थिर होगा व स्थिरता का अीयास बढ़ाएगा, वह अपने द्वारा बनाए संसार को सीमित करता हुआ अष्ट कर्म क्षय कर स्वल्प काल में निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। अतः हम सभी आत्म साधना द्वारा अपने निर्वाण की तैयारी करें।

जैन कॉन्फ्रेंस के भविष्य की दिशा तय करता ऐतिहासिक कदम
जैन विजनरी काउंसिल (JVC) की प्रथम बैठक सम्पन्न
जैन समाज के समग्र उत्थान हेतु नई सोच, नई नीति और नए युग की शुरुआत

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की नवगठित जैन विजनरी काउंसिल (JVC) की प्रथम दो दिवसीय बैठक जैन भवन, नई दिल्ली के सुश्रावक डॉ. महेश जैन 'गंधरवाल' सम्मेलन कक्ष में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन की अध्यक्षता एवं श्रमण संघीय युवाचार्य परम श्रद्धेय पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. का पावन सान्निध्य जूम लिंक के माध्यम से प्राप्त हुआ।

अध्यक्ष महोदय जी ने जूम लिंक से बैठक में जुड़े श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋशि जी म.सा. से जे. वी.सी. की प्रथम बैठक का शुभारंभ करने के लिए मंगलाचरण प्रस्तुत करने का निवेदन किया। युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. द्वारा नवकार महामंत्र के उच्चारण द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत कर सभा की विधिवत् शुरुआत करने का आव्हान किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् अतुलजी जैन ने आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के श्रीचरणों में वंदन, नमन करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामना की। उन्होंने कहा कि आचार्य भगवन् ने जे.वी.सी. के कार्यक्रम को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया है, उसके लिए आपश्री जी का बहुत-बहुत धन्यवाद। युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. के पावन श्रीचरणों में कोटिशः वंदन, नमन। आप आज की बैठक में अपना आशीवार्द प्रदान करने के लिए हमारे बीच उपस्थित है, उसके लिए आपश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

उन्होंने कहा कि आज की इस बैठक में सबसे पहले मैं एक संकल्प सभी को दिलाना चाहूंगा कि जो भी आज की बैठक में उपस्थित है वे ध्यान रखें कि इस बैठक में काफी चर्चाएं आतंरिक होंगी, जिसके लिए सभी गोपनीयता की शपथ लेकर बैठक की शुरुआत करें। इतना व्यापक संगठन होने के बाद भी हम सभी कहीं न कहीं दिशाहीन होकर अन्य कार्यों में लगे हुए है। हमारी एक संगठन के रूप में जो पहचान होनी चाहिए थी, वहां तक हम अभी नहीं पहुंच पाएं है। इसके लिए सर्वप्रथम एक आवश्यकता समझी गई कि श्रमण संघ और जैन कॉन्फ्रेंस एक ही है, एक दूसरे के पूरक है। एक तरफ आध्यात्मिक ऊर्जा है, एक तरफ सामाजिक ऊर्जा है। इन दोनों का समन्वय, इन दोनों का मिलन, संगठन के चहुंमुखी विकास के लिए बहुत आवश्यक है। इस तरह की आवश्यकता महसूस की गई, इसी के अनुरूप तालमेल बैठाने के लिए एक पहल जैन कॉन्फ्रेंस की तरफ से की गई। जिसमें पूज्य आचार्य भगवन् का जन्मोत्सव विशाल रूप में मनाना और उसका पूरे देश में संदेश देना एक महत्वपूर्ण कार्य था। इसी कड़ी में जे.वी.सी. का गठन किया गया है, जिसकी आज प्रथम बैठक आयोजित की जा रही है। इस बैठक में कार्यों की जिम्मेदारियां और कार्यों का निरूपण किया जाएगा। साथ ही भविष्य के आगामी 20-25 वर्ष का विजन लेकर हमें चलेंगे। इस टीम में हमारे साथ जो महानुभाव जुड़े है, वे अपने क्षेत्र के सक्षम जानकार है। सबसे बड़ी बात यह है कि पूज्य आचार्य भगवन् और पूज्य युवाचार्यश्री भगवन् का मार्गदर्शन और आशीर्वाद जे.वी. सी. के माध्यम से हमें निरंतर मिलने वाला है, जिसके लिए हम बहुत सौभाग्यशाली है। मैं कुछ मुख्य बिन्दुओं को आप सभी के समक्ष यहाँ विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करने जा रहा हूँ।

आज के दिन का जो महत्व है, जिसमें जे.वी.सी. का प्रथम अधिवेशन केवल संगठन की बैठक नहीं, बल्कि एक सोच, एक नई दिशा और एक नए युग की शुरुआत है। यह परिषद श्रमण संघ, जैन कॉन्फ्रेंस और प्रोफेशनल्स तीनों के बीच संवाद, समन्य का केन्द्र बनेंगी। हम आज यहां एक साझा उद्देश्य लेकर आए है कि संघ की मर्यादा, समाज की भावना और संगठन की दृष्टि एक ही पथ पर आगे बढ़ें। परिषद के गठन को लेकर जो भाव हैं जे.वी.सी. का उद्देश्य है संविधान

से लेकर डिजिटल प्लेटफार्म तक सब कुछ एकीकृत और पारदर्शी रूप में विकसित करना। यह परिषद केवल कर्म की व्यवस्था बनें, यही हमारा लक्ष्य है। हमारे संघीय आचार्यों से हमें जो अनुशासन मिला और समाज के कार्यों से जो अनुभव मिला, उन्हें आज हम आधुनिक निधि और तकनीक के साथ जोड़ रहे हैं। जे.वी.सी. का प्रत्येक निर्णय संतों के आशीर्वाद, समाज की सहभागिता और प्रोफेशनल्स की योजना से साफ होगा। परिषद की दृष्टि एक ऐसा डिजिटल प्लेटफार्म जहां हर सदस्य, हर योजना और हर दानदाता एक क्लिक पर जुड़ा हो। हर निर्णय, नीति का आधार मजबूत हो, इसमें उत्तरदायित्व और समय पालन सर्वोपरि हो। परिषद की शक्ति और भविष्य हमारे युवा और महिला है। इन सभी मुद्दों पर व्यापक चर्चाएं दो दिवसीय बैठक के दौरान की जाएगी और सभी मुद्दों पर चर्चा कर उसे अंतिम रूप प्रदान किया जाएगा।

परिषद का कार्य क्षेत्र, संविधान संशोधन और नीति सुधार, डिजिटल समग्र योजना एक क्लिक में पूरा संगठन, महिला और युवा सशक्तिकरण, आयोजन और मीडिया एस.ओ.पी. के साथ लक्ष्य निर्धारण करेंगे कि उस आयोजन से हम क्या हासिल करना चाहते हैं, हमारी संस्था, संगठन को होने वाले लाभ क्या होंगे, इसका मैनेजमेन्ट कैसा होगा, कौन कितनी जिम्मेदारी लेंगे, कैसे उसका फाइनेंस होगा, मीडिया कैसा होगा-यह सभी कार्य एस.ओ.पी., आई.टी. और सॉफटवेयर के माध्यम से व्यवस्था जे.वी.सी. के द्वारा की जाएगी।

दीर्घकालिक योजनाएं और भविष्य दृष्टि के अंतर्गत भविष्य में दीर्घकालिक योजनाएं श्रमण संघ और जैन कॉन्फ्रेंस दोनों के लिए विहारधाम की कड़ी, व्यवस्था, रिसर्च सेंन्टर, यूनिवर्सिटी, एजुकेशन, स्वास्थ्य, विदेशों में स्थानकवासी परंपरा को मजबूत करना, श्रमण-श्रमणियों को विदेशों में पहुंचकर प्रचार करना, हमारा स्थानकवासी समाज का साहित्य विदेश में पहुंचे आदि ऐसे विजन को हम इसमें शामिल करेंगे। हमारे जो भी कायक्रम होंगे, उसका बेस तैयार करते हुए आगे बढ़ते चलेंगे। हम लोगों के मन में एक बहुत बड़ा सवाल उत्पन्न होता है कि जैन कॉन्फ्रेंस का हर दो वर्ष में कार्यकाल बदल जाता है, आपस की खींचतान और राजनीति में समय बर्बाद होता है तो इस पर भविष्य में कैसे इसका निर्धारण कर सकते है, इसको भी एक व्यवस्था का निर्धारण किया जा सकता है। इसके लिए दीर्घकालिक निर्णय लेने के लिए हमें एक अपर हाऊस का गठन करना पड़ेगा। अपर हाऊस का स्वरूप कैसा होना चाहिए? लोअर हाऊस का स्वरूप कैसा होना चाहिए? हमारी जो भी दीर्घकालिक योजनाएं है, जो भी स्थायी योजनाएं है वे सब अपर हाऊस में रहें और अपर हाऊस भी ऐसा बने कि इसमें हमारे गुरु भगवंतों का मार्गदर्शन रहे और संस्था के जो प्रतिनिधि है, उनका भी इसमें सहयोग रहे। इसके साथ ही हमारे समाज का जो भी बुद्धिजीवी वर्ग है, जो समाज का विशेष वर्ग है, वह भी इसमें जुड़ा रहे। किसी भी एक वर्ग का कंट्रोल इस अपर हाऊस में न रहे। यह अपर हाऊस सबको साथ लेकर चलने वाली व्यवस्था के रूप में लेकर चले और दीर्घकालिक जो पालिसी है, उनको इम्पीलिमेन्ट कराने का कार्य करता रहे।

अप्रैल माह में भगवान महावीर जयंति के दिन ग्लोबल पीस समिट का आयोजन करने जा रहे है। इसके माध्यम से भगवान महावीर के अहिंसा के सिद्धांत को विश्व में प्रचार-प्रसार कर पाएं, ऐसा आयोजन करने का मानस है। इसमें राजनीतिक वर्ग भी जुड़े, समाज का कमजोर वर्ग भी जुड़े और इसकी एक अलग पहचान पूरे देश में बनें, जिससे हमारा जो उद्देश्य है वह मजबूत होने का कार्य हो। इसके अलावा 1008 गरीब लड़कियों की शादी पूरे देश में कराएं जाने का भी हमारा मानस है, इसमें महिला शाखा भी जुड़ने के लिए तैयार है। जिसके डोनेशन के लिए समाज से ही प्रायोजक मिल जाते हैं। इस कार्य से जैन कॉन्फ्रेंस का समाज को एक अच्छा संदेश पहुंचेगा, इसके लिए जनवरी-फरवरी माह का चयन किया गया है। इन सभी उपरोक्त कार्यों को एस.ओ.पी. के माध्यम से किया जाएगा। इसकी व्यवस्था तैयार करके ऑनलाईन करेंगे और उसी के अनुरूप सभी कार्यों को किया जाएगा।

इसके अलावा Co-Being एक अभियान है मतलब सबका अस्तित्व, सबका सहयोग। पूरा विश्व एक चेन में जुड़ा हुआ है तथा प्रकृति पर भी समान रूप से निर्भर है, पंच तत्व पर हम सभी निर्भर है। इसमें कोई भी एक कड़ी कमजोर होती

है तो व्यक्ति का अस्तित्व ही खतरे में आ जाता है। आज विश्व के सामने बड़ी-बड़ी चुनौतियां आ रही है, चाहे कुपौषण हो, जातिवाद हो, सम्प्रदायवाद हो, लडाई-झगड़े आदि कहीं न कहीं अपने प्रभुत्व के लिए हो रहे है। हम जब सभी का अस्तित्व स्वीकार करने और सभी सहयोग करने और उसकी आधुनिक रूप में एक चेन बनाने का प्रयास करते हैं कि आप आओ, सभी के सहयोगी बनों और अपने सहयोग को ऑनलाईन रजिस्टर करों, हमारा सिस्टम उसको रजिस्टर करेंगे, उसमें रेटिंग प्रदान कर मेडल/अवार्ड प्रदान करेगा। इसमें किसी जाति धर्म का भेद नहीं रखा गया है, कोई राजनीतिक भूमिका नहीं रहेगी। इसके लिए अगर हम एक अच्छा प्लेटफार्म का रूप प्रदान कर दे तो भारत सरकार भी इस प्लेटफार्म को अडोप्ट कर सकती है। इसका शुरूआती लक्ष्य हम एक साल का कम से कम 10 हजार सदस्य रजिस्टर करने का रखें और एक लाख वीडियो अपलोड़ करने का रखे। इसके मैनेजमेन्ट का कोई ज्यादा खर्च होने वाला नहीं है, इसके लिए कोई भी प्रायोजक तैयार किया जा सकता है।

डिजिटल समग्र योजना - एक क्लिक में पूरा संगठन जे.वी.सी. की सबसे बड़ी प्राथमिकता है कि पूरे जैन समाज और उसके संगठनात्मक ढ़ांचे को एक ही डिजिटल छत के नीचे लाया जाए। यह केवल तकनीक नहीं बल्कि नीति का सशक्त माध्यम होगा। इसमें काफी चीजे सम्मिलित की जा सकती है, जिनमें विशेष रूप से मेंबर एण्ड आर्गेनाईजेशन डायरेक्टरी, प्रोग्राम टैलेण्डर एस.ओ.पी. सहित, डोनेशन एण्ड ट्रांस्पेरेशन सिस्टम, सेवा प्रोजेक्ट डैशबोर्ड, जैन भवन लोकेटर एण्ड कोऑरडिनेशन, ऑडियो-वीडियों लिटरेचर लाईब्रेरी, गवर्नमेन्ट स्कीम इंटीग्रेशन, मीडिया एण्ड पब्लिकेशन विण्डो यह शामिल है। यह प्लेटफार्म बहुत डाइनेमिक और विस्तृत रहने वाला है। इसमें हमारे पूज्य श्रमण संघीय साधु-संतों का विहार, स्थानक, विहारधाम और सभी का डाटाबेस शामिल करने वाले है। इसके अलावा एजुकेशन, स्वास्थ्य, सेवक आदि को इस प्लेटफार्म से जोड़ा जाएगा। हमारी जैन कॉन्फ्रेंस की जो भी योजनाएं चल रही है उनके लिए भी इसी के माध्यम से एप्लाई किया जा सकता है, साथ ही गवर्नमेन्ट की माईनॉरिटी के अनुसार, बुजुर्गों के अनुसार, सोशल वेलफेयर के अनुसार, ये सभी जानकारी और लिंक इस प्लेटफार्म के माध्यम से जोड़े जाएंगे। कुल मिलाकर श्रमण संघ और जैन कॉन्फ्रेंस इन दोनों का एक साझा मंच, स्थानकवासी समाज का एक विशाल डिजिटल प्लेटफार्म तैयार करने जा रहे है। जो जानकारी का स्त्रोत तो रहेगा ही, इसके साथ ही यह हमारी आय का भी एक मुख्य, प्रमुख साधन बनने वाला है। आज का युग प्रचार का युग है, हर व्यक्ति को, हर संस्था को अपना प्रचार चाहिए। इसके लिए राष्ट्रीय प्लेटफार्म पर उनकी जानकारी अपलोड़ की जाएगी, जिसके लिए एक अच्छा अमाउंट जैन कॉन्फ्रेंस भविष्य में एकत्रित कर सकती है। इसके लिए एक समर्पण भाव दोनों तरफ रखना होगा कि किसी को भी कोई प्रेरणा अथवा महत्व दिया जाना है तो वह केन्द्रीय प्लेटफार्म के माध्यम से ही दिया जाए, पूरे देश में ऐसे दो प्लेटफार्म न रहे, यह मेरा आप सभी के श्रीचरणों में निवेदन है। अगर हम लोग यह व्यवस्था बनाने में सफल हो जाते हैं तो जे.वी.सी. का गठन करने का लक्ष्य सफल हो जाएगा।

एस.ओ.पी. : हर आयोजन के मानक प्रारूप ऑनलाइन उपलब्ध रहेंगे, जिससे समानता और गुणवत्ता दोनों सुनिश्चित होंगी। डोनेशन एवं सेवा के कार्यक्रम-शिक्षा, चिकित्सा, गौसेवा, पर्यावरण, मानव सेवा आदि सभी कार्य इसके माध्यम से किए जाएंगे। हर राज्य में जैन भवन का निर्माण हो, ऐसी व्यवस्था के लिए संविधान संशोधन का कार्य किया जा रहा है तथा प्रांतीय स्तर पर सेवा के सभी चैनल डवलप हो जाएं ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया जाएगा। मीडिया एण्ड कम्यूनिकेशन को बहुत ज्यादा मजबूत किए जाने की आवश्यकता है। हमारे सामने दुविधा यह है कि हम लोग काम बहुत करते हैं, स्थानकवासी समाज की बहुत ज्यादा एनर्जी लगती है जोकि अलग-अलग सम्प्रदाय होने के कारण भी है, श्रमण संघ में भी कहीं न कहीं हम अलग-अलग दिखने लगते हैं। ऐसे में मीडिया में दिखाने के लिए ज्यादा कुछ डाटा होता नहीं है। अतः इसके माध्यम से एक क्लिक पर पूरे देश में कवरेज हो, ऐसा प्रयास रहेगा। हरेक कार्य की समय सीमा और जिम्मेदारियों को ऑनलाईन किया जाएगा।

आज की जे.वी.सी. की प्रथम बैठक में यह भी निर्णय लिया जाए कि जे.वी.सी. में किनकी क्या जिम्मेदारियाँ रहेंगी। हर कार्य की समय सीमा और जिम्मेदारी रहे, तकनीक साधन बनें, साध्य नहीं। साध्य है संगठन का जागरण और समाज का उत्थान। प्रत्येक सदस्य की भूमिका, यह परिषद समान सहभागिता पर आधारित है। यहाँ हर व्यक्ति अपने क्षेत्र की विशेषज्ञता और दृष्टि लेकर आया है। हम सब एक-दूसरे के सहयोगी हैं, प्रतिस्पर्धी नहीं। हमारी पहचान हमारे कार्य से बनेगी और हमारे कार्य की दिशा 'समय, सत्य और साधना' से तय होगी। मेरे लिए जे.वी.सी. कोई संस्था नहीं बल्कि एक 'चेतन प्रयास' है। यह एक ऐसा संकल्प है जिसमें विचारों की शुद्धता, कर्म की निष्ठा और उद्देश्य की करुणा - तीनों का संगम है। मैं चाहता हूँ कि जे.वी.सी. केवल एक काउंसिल नहीं, बल्कि 'संवेदनशील नीति मंच' बने - जो आने वाले वर्षों तक समाज और धर्म दोनों की सेवा करे। "हमारा लक्ष्य संगठन नहीं, जागरण है।" "जहाँ नीति में करुणा और सेवा में साधना जुड़ती है वहीं जे.वी.सी की आत्मा जीवित रहती है।" उपरोक्त सभी कार्य पूर्ण निष्ठा और समर्पण भाव से जे.वी.सी. के माध्यम से किए जाएंगे।

- बैठक में श्री अतुल जी जैन ने जे.वी.सी. पैट्रन के रूप में अपना परिचय देते हुए अन्य सभी सदस्यों से अपना परिचय प्रस्तुत करने का आव्हान किया। जे.वी.सी. के सभी सदस्य श्री अतुल जी जैन के उपरांत क्रमशः डॉ. अमितराय जी जैन-बड़ौत, डॉ. अशोक कुमार जी एन. पगारिया जैन-पुणे, श्री विपुलजी जैन-दिल्ली, डॉ. अनामिका जी तलेसरा जैन-सूरत, श्री नरेशजी जैन-सिरसा (जूम लिंक के माध्यम से), श्रीमती पारूल जी जैन-दिल्ली, श्री ज्ञान जी, श्री नारायण शर्मा जी आदि ने अपना-अपना परिचय प्रस्तुत किया।

बैठक में जूम लिंक के माध्यम से उपस्थित परम श्रद्धेय युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. ने कहा कि आज की इस जे.वी.सी. की प्रथम सभा में उपस्थित सभी प्रबुद्धजनों एक वैचारिक मंच की उपलब्धि कराने का जो विचार वर्तमान कमिटी के मन में आया, उसके लिए हार्दिक अनुमोदना। हमारी यह संस्था, श्रमण संघ का निर्माण इसी वैचारिक क्रांति के साथ कर सकी। उस युग की आवश्यकता थी, संगठन की एकता, एक साथ आने की जरूरत। आज से 74 वर्ष पूर्व जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व कार्यकर्ताओं ने, पूर्व पदाधिकारियों ने, वरिष्ठ लोगों ने दूरदृष्टि का उपयोग करके श्रमण संघ का गठन किया। आज एक ऐसी पहल हो रही है कि जिस पहल में कई ऐसे आने वाले समय की आवश्यकताओं की पूर्तता का विचार करने का आप लोगों ने संकल्प लिया है। आचार्य भगवंत् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. जिनका आशीर्वाद, वात्सल्य सभी सत्कार्यों को संप्राप्त होता है, आज भी उन्हीं का आशीर्वाद हम सभी को मिलने वाला था, परन्तु अस्वस्थता के कारण वे आज की इस बैठक में अनुपस्थित है। हम उनके स्वाथ्य की हार्दिक मंगल कामना करते हैं। भगवन् ने हमारे लिए एक स्पष्ट आशीर्वाद प्रदान किया है कि इस क्षेत्र में कार्य करें और आगे बढ़े। जिन लोगों की आज मैं यहां कमिटी देख रहा हूँ, सभी अच्छे चिंतन करने वाले एक भविष्य की दृष्टि रखने वाले और अपने-अपने क्षेत्र के बड़े ही नामांकित व्यक्तित्व है। अब जरूरत है जो आपने यहां पर समग्र कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई है उसको लागू करेंगे तो सारी चीजे आने वाले समय में बहुत सुंदर ढ़ंग से मूर्त रूप लेंगी। मुख्य रूप से समय निर्धारित करें और जिम्मेदारी सौंपने के कार्यों को अगर हमने पूरा कर लिया तो मुझे लगता है कि जे.वी.सी. के गठन का जो विचार बना है वह बहुत सार्थक होगा और बहुत ताकत के साथ आगे बढ़ेगा। क्योंकि अब हमें जरूरत है अपनी शक्ति के उपयोग की, हमारी वैचारिक शक्ति के साथ-साथ क्रियान्वयन करने की शक्ति का भी हम उपयोग करेंगे। अगर हम विजन लेकर चलते है कि हमें इतने समय में लक्ष्य को पूरा करना है तो हमारी गतिविधियां हम भी सम्पन्न कर सकते है और अन्य को भी इसमें शामिल कर सकते हैं। आपने जो भी विषय इसमें शामिल किए है, उन पर आपस में चिंतन कीजिएगा। मुझे विश्वास है कि आपकी जो शक्ति है, सामर्थ्य है, वैचारिक सामर्थ्य है, सामाजिक सामर्थ्य है और बौद्धिक सामर्थ्य है उसका उपयोग हमारे श्रमण संघ के विकास के लिए होगा। आपके समग्र कार्य के लिए जो भी एस.ओ.पी. निर्धारित करें, हमारी मंगल कामना है, हमारी जहां-जहां आवश्यकता होगी अवश्य

याद कीजिएगा, सभी के लिए मंगलकामनाएं।

श्री अतुलजी जैन ने कहा कि युवाचार्य भगवन ने जो दिशा-निर्देश और मंगल आशीर्वाद आज की जे.वी.सी. की बैठक में हमें प्रदान किया है वह निश्चित रूप से हमारे इस अभियान में नई ऊर्जा और नई जान फूंकने वाला है। हम सभी मिलकर इसके लिए आगे बढ़ने वाला है। परम श्रद्धेय युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. ने मंगलपाठ प्रदान किया।

श्री अतुल जी जैन ने कहा कि आगामी दो दिवस में कार्य क्षेत्र का निर्धारण करना अनिवार्य है। डाटा डिजिटाईजेशन को मुख्य विषय के रूप में रखा जाएगा, जिसमें संतों की व्यवस्थाओं को देखते हुए डोनेशन की व्यवस्था, संगठन में डाटा बेस को शामिल करना है, सेवा कार्य में योजना, सरकारी योजना को शामिल करना है, गैलरी, फोटो, विडियों मीडिया कवरेज करना, मीडिया ब्रोडकास्टिंग, जैन भवन, विहारधाम आदि, हमारा इतिहास, संस्था के उद्देश्य, संस्था के गौरवशाली क्षण, गौरवशाली व्यक्तित्व, न्यूज ब्रोडकास्ट के अंतर्गत श्रमण संघ के कार्यक्रमों को शामिल करना तथा विशेष कार्यक्रमों की लाईव कवरेज को प्राथमिकता देना होना चाहिए। एस.ओ.पी. को भी इसी प्रोग्राम के अंतर्गत शामिल करना होगा।

मेरा एक विशेष आग्रह है कि जे.वी.सी. की नींव को सर्वप्रथम आगामी तीन माह के अंदर मजबूत करना है, उसके उपरांत जे.वी.सी. के अंतर्गत आने वाले सभी कार्य सुचारू रूप से होने शुरू हो जाएंगे।

जे.वी.सी. के दूसरे दिवस की शुरुआत नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ करते हुए चीफ पैट्रन श्री अतुलजी जैन ने कहा कि जे.वी.सी. के गठन और उद्देश्य पर हमने चर्चा की है। आज का युग तकनीकी का युग है। हमें आगे बढ़ने के लिए एक सी.ओ.एस. और एक आई.टी. मैनेजर की आवश्यकता है। हम आगामी तीन कार्यदिवस में सी.ओ.एस. और आई.टी. मैनेजर को अपाईंट कर लेते है। श्रमण संघ में एजुकेशन का सिस्टम, स्वास्थ्य हेतु, विहारधाम, सेवकों की सैलरी, सभी साधु-संतों की प्रोफाईल एवं उसका तरीका, चातुर्मास का विवरण, पूरे देश की श्रमण संघीय एस.एस. जैन सभा के साथ अन्य का भी डाटाबेस, साहित्य, प्रवचन, अन्य सामाजिक संस्थाओं का विवरण, जिनमे चैरिटेबल हो, हॉस्पिटल आदि शामिल हो। डाटा डिजिटाईजेशन में आर्गेनाईजेशन-अबाउट अस, ऑफिस पदाधिकारीगण-लोअर हाऊस+अपर हाऊस, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष पूर्व राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, संस्था का लोकेशन, संस्था का इतिहास और संस्था में उपलब्ध सुविधाओं का विवरण मौजूद होना चाहिए। सदस्य का सम्पूर्ण डाटा बेस, नए सदस्य का सदस्यता फार्म ऑनलाईन उपलब्ध रहेगा। सभी योजनाओं के फार्म, ऑनलाईन सबमिशन की प्रक्रिया को अपनाया जाए। बैठक का समापन नवकार महामंत्र के उच्चारण और मंगलपाठ के साथ हुआ। सभी उपस्थित सदस्यों ने यह संकल्प लिया कि JVC केवल एक काउंसिल नहीं, बल्कि संवेदनशील नीति मंच बनेगी, जो आने वाले वर्षों तक समाज और धर्म दोनों की सेवा करेगी। ❖❖

सिद्धि का अभिमान मनुष्य को पराजित कर देता है।

कई बार मनुष्य को तप एवं जप की साधना से कई लब्धियाँ, सिद्धियाँ या शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। पर उन्हें पचाना सहज नहीं है। बड़े-बड़े साधक इस संबंध में असफल हो जाते हैं। अभिमान के हाथी पर बैठकर मानव अपने आपको सारी दुनिया से श्रेष्ठ समझने लगता है, तब वह दूसरों को पराजित करने के प्रयत्न में लगता है, परन्तु शीघ्र ही उसका अभिमान चूर-चूर हो जाता है, इसीलिए कहा है - 'अभिमानी' का सिर नीचा।'वह किसी दिन पराभूत हुए बिना नहीं रहता है। पराभूत होने पर वह चिन्तित और शोकमग्न होता ही है।

जहां अभिमान समाप्त होता है वहां से बडप्पन या महानता शुरू होती है। परन्तु अहंकारी मनुष्य इस बात को देवशर्मा की तरह भूल जाता है, वह अपनी सिद्धि के अहंकार में महान् व्यक्तियों की अवहेलना कर देता है, दूसरों की आध्यात्मिक सिद्धियों का तिरस्कार कर देता है। ❖❖

भगवान महावीर का निर्वाण : आत्मज्ञान, करूणा और मोक्ष का अमर संदेश

- वाचनाचार्य उपाध्याय पू. श्री विशालमुनि जी म.सा.

भारत की आध्यात्मिक परंपरा में कुछ ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनकी वाणी और जीवन आज भी मानवता को दिशा दिखा रहे हैं। उनमें अग्रणी स्थान है भगवान महावीर स्वामी का, जिन्होंने सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य के सिद्धांतों पर आधारित जीवन-पद्धति का उपदेश दिया। उनका जीवन न केवल जैन धर्म का, बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज का मार्गदर्शक बन गया।

उनके निर्वाण दिवस को हम केवल एक धार्मिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि आत्मा की परम मुक्ति और प्रकाश का उत्सव मानते हैं। यह वही दिन है जब मनुष्य ने अपने भीतर की अज्ञानता के अंधकार पर आत्मज्ञान का दीप जलाया था।

जन्म और प्रारंभिक जीवन : भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व 599 में वैशाली गणराज्य के कुंडलपुर नामक नगर में हुआ था। उनके पिता सिद्धार्थ राजा लिच्छवि कुल के प्रमुख थे और माता त्रिशला वंश की अत्यंत पुण्यवती रानी थी। महावीर का बाल्यकाल अत्यंत तेजस्वी और विवेकी था। बचपन से ही उनमें अहिंसा और करुणा की भावना प्रबल थी।

कहा जाता है कि एक बार बालक महावीर ने एक सर्प को भी मारने से इनकार कर दिया और कहा - सभी जीवों में वही आत्मा है जो मुझमें है, तो मैं किसी को कैसे पीड़ा दूँ? इस वाक्य में उनके समग्र दर्शन का बीज छिपा है, आत्मा का एकत्व और अहिंसा का सर्वोच्च मूल्य।

संन्यास और तपस्या का मार्ग : तीस वर्ष की आयु में महावीर ने राजसी वैभव, परिवार और सुख-सुविधाओं का त्याग कर संन्यास ले लिया। उन्होंने कहा - जिन जीवन में आसक्ति है, वहाँ मुक्ति असंभव है। संन्यास के पश्चात् उन्होंने बारह वर्षों तक अत्यंत कठोर तप किया। जंगलों में, निर्जन स्थलों में, धूप, वर्षा और ठंड के बीच उन्होंने अपने भीतर के विकारों को समाप्त करने का प्रयत्न किया। यह तप केवल शरीर का कष्ट नहीं था, बल्कि आत्मा की शुद्धि का महान प्रयोग था।

इन वर्षों में उन्होंने मौन को वाणी बनाया, संयम को जीवन बनाया और आत्मनिरीक्षण को धर्म का आधार बनाया।

केवलज्ञान की प्राप्ति : बारह वर्ष की कठोर साधना के बाद, ऋजुपालिका नदी के किनारे एक वृक्ष के नीचे, महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई, अर्थात् सम्पूर्ण सत्य का अनुभव। उस क्षण वे 'ज्ञान के परम स्रोत' बन गए। अब उनके लिए संसार का कोई रहस्य शेष नहीं था। उन्होंने देखा कि हर जीव आत्मा है, जो जन्म और मृत्यु के चक्र में बंधा हुआ है। कर्म ही इस बंधन का कारण है और आत्मज्ञान ही इससे मुक्ति का मार्ग। उन्होंने कहा - 'जीव कर्म से बंधता है और ज्ञान से मुक्त होता है।'

उपदेश और समाज सुधार : महावीर ने अपने उपदेशों के माध्यम से समाज में एक नई चेतना जगाई। उन्होंने वर्ण, जाति या धर्म के भेदभाव से परे, सभी को समान माना। उनके अनुसार, 'किसी का जन्म नहीं, कर्म ही मनुष्य को महान बनाता है।'

उन्होंने अहिंसा को सर्वोच्च धर्म बताया - न केवल कर्म से, बल्कि वाणी और विचार से भी किसी को कष्ट पहुँचाना हिंसा है। यह विचार आज के युग में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना 2600 वर्ष पहले था। महावीर ने महिलाओं को भी समान अधिकार दिए। जैन संघ में उन्होंने भिक्षुणियों को प्रमुख भूमिका दी, जो उस समय के सामाजिक ढाँचे के लिए क्रांतिकारी कदम था।

महावीर का दर्शन : आत्मा से परमात्मा तक महावीर का दर्शन सरल, लेकिन अत्यंत गहरा है। उनके अनुसार हर आत्मा में परमात्मा बनने की क्षमता है। उन्होंने कहा - 'आप स्वयं अपने उद्धारक हैं। कोई और आपका उद्धार नहीं कर सकता।' यह वाक्य आत्मनिर्भरता और आत्मशक्ति का सर्वोच्च संदेश देता है। महावीर का धर्म बाहरी कर्मकांड से अधिक आंतरिक परिवर्तन पर आधारित था।

उन्होंने बताया कि मनुष्य के जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख नहीं, बल्कि आत्मा की शांति और मोक्ष प्राप्ति है। इसके लिए आवश्यक है, सम्यक दर्शन (सही दृष्टिकोण), सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान), सम्यक चारित्र (सही आचरण), ये तीनों मिलकर मोक्षमार्ग की नींव बनाते हैं।

निर्वाण की घटना : आत्मा का परम विसर्जन ईसा पूर्व 527 में, कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि में, बिहार राज्य के पावापुरी नामक स्थान पर महावीर स्वामी ने अपने भौतिक शरीर का त्याग किया। उस समय वे 72 वर्ष के थे।

कहा जाता है कि उनके निर्वाण के क्षण में आकाश में दिव्य प्रकाश फैल गया। असंख्य आत्माएँ उस रात मुक्ति को प्राप्त हुई। उनके शिष्यों ने जब यह देखा, तो उन्होंने दीप प्रज्वलित किए, ज्ञान के दीप, मुक्ति के दीप। यही परंपरा आगे चलकर दीपावली के रूप में स्थापित हुई।

जैन परंपरा के अनुसार, यह दिन 'मोक्ष कल्याणक दिवस' कहलाता है, अर्थात् वह शुभ दिवस जब आत्मा ने समस्त कर्मबंधन से मुक्त होकर शुद्ध चौतन्य का स्वरूप धारण किया।

पावापुरी : निर्वाणस्थली का महत्व : पावापुरी आज भी जैन धर्म का प्रमुख तीर्थ है। यहाँ जलमंदिर स्थित है, जो भगवान महावीर की निर्वाणस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि जब उनके अंतिम संस्कार के पश्चात् उनकी अस्थियाँ लेने लोग आए, तो इतनी मिट्टी निकाल ली गई कि वहाँ एक बड़ा सरोवर बन गया।

हर वर्ष हजारों श्रद्धालु यहाँ आकर भगवान के उपदेशों का स्मरण करते हैं और अपने भीतर की शांति को खोजते हैं।

महावीर का निर्वाण और दीपावली का संबंध : बहुत से लोग नहीं जानते कि दीपावली केवल श्रीराम के अयोध्या लौटने का उत्सव नहीं, बल्कि भगवान महावीर के निर्वाण का भी प्रतीक है। जब उन्होंने देह का त्याग किया, तब उनके अनुयायियों ने ज्ञान के प्रकाश को बनाए रखने के लिए दीप जलाए। इसलिए जैन धर्म में दीपावली 'ज्ञान दीपोत्सव' के रूप में मनाई जाती है, यह वह रात्रि है जब अंधकार नहीं, बल्कि आत्मज्ञान का प्रकाश फैला था।

महावीर के निर्वाण का दार्शनिक अर्थ : महावीर का निर्वाण केवल मृत्यु नहीं, बल्कि पूर्ण मुक्ति है। यह वह अवस्था है जहाँ आत्मा सभी बंधनों से मुक्त होकर अनंत सुख, ज्ञान और शांति में स्थित होती है। निर्वाण हमें यह सिखाता है कि जब हम अपने भीतर के राग-द्वेष, मोह, क्रोध और लोभ को समाप्त कर देते हैं, तब हम भी उसी आत्मिक प्रकाश की ओर बढ़ सकते हैं। महावीर का यह संदेश शाश्वत है, 'जीवन का उद्देश्य दूसरों को हराना नहीं, बल्कि स्वयं को जीतना है।'

आज के युग में महावीर का संदेश : आज जब संसार हिंसा, द्वेष और असहिष्णुता से जूझ रहा है, तब महावीर का दर्शन पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। उनकी शिक्षाएँ हमें सिखाती हैं कि अहिंसा केवल न मारना नहीं, बल्कि किसी को दुःख न देना है। सत्य बोलना केवल वाणी का गुण नहीं, आत्मा की पवित्रता का परिचायक है। अपरिग्रह केवल त्याग नहीं, बल्कि संतोष की अवस्था है। यदि हम इन सिद्धांतों को जीवन में उतार लें, तो न केवल व्यक्तिगत शांति, बल्कि सामाजिक समरसता भी संभव है।

अमर प्रकाश का उत्सव : भगवान महावीर का निर्वाण मानवता के लिए एक अमर संदेश है, आत्मा की स्वतंत्रता और सत्य की विजय का प्रतीक। उन्होंने दिखाया कि मोक्ष किसी दूरस्थ स्वर्ग में नहीं, बल्कि हमारे अपने भीतर है।

हर दीपावली पर जब दीप जलते हैं, तो वे हमें यही स्मरण कराते हैं कि ज्ञान का प्रकाश कभी बुझना नहीं चाहिए। महावीर का निर्वाण उस अनंत शांति का प्रतीक है जहाँ आत्मा स्वयं से मिलती है और संसार के समस्त दुःख समाप्त हो जाते हैं।

'अहिंसा परमो धर्मः', यह वाक्य केवल उपदेश नहीं, बल्कि भगवान महावीर के सम्पूर्ण जीवन और निर्वाण का सार है। उनका प्रकाश आज भी अनंत काल तक मानवता को राह दिखाता रहेगा। ❖❖

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ : एक आध्यात्मिक और सामाजिक यात्रा

- उपाध्याय पूज्य श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा.

भारत की भूमि सदैव से आध्यात्मिकता, अहिंसा और साधना की भूमि रही है। इस पवित्र धरती पर समय-समय पर अनेक धर्म-प्रवर्तक, संत, आचार्य और मुनि उत्पन्न हुए जिन्होंने समाज को नैतिकता, संयम और आत्मकल्याण की दिशा दिखाई। इन्हीं महापुरुषों की श्रेणी में आते हैं भगवान महावीर, जिन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों - अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य के माध्यम से मानवता को नया दृष्टिकोण दिया। भगवान महावीर की शिक्षा पर आधारित जैन धर्म के अनेक पंथ और परंपराएँ समय के साथ विकसित हुई। इन्हीं में से एक प्रमुख और अनुशासित शाखा है - श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ।

पृष्ठभूमि और स्थापना काल : सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जैन समाज में मूर्तिपूजा की परंपरा का बहुत प्रभाव था। उस समय कुछ ज्ञानी साधकों को लगा कि भगवान महावीर की मूल भावना - आत्मशुद्धि और ध्यानसाधना - कहीं मूर्तिपूजा और बाह्याचार के नीचे दब गई है।

'स्थानक' शब्द का अर्थ है - बैठक या ध्यान स्थल, जहाँ साधक ध्यान और प्रवचन करते हैं। अतः यह पंथ मूर्तिरहित और ध्यान प्रधान पंथ के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

संघ का विकास और संगठनात्मक स्वरूप : समय के साथ यह परंपरा अधिक संगठित रूप में विकसित हुई और 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

इस संघ का नाम भगवान महावीर के वास्तविक नाम 'वर्धमान' पर रखा गया, जिससे यह दर्शाया गया कि यह संघ उन्हीं की शिक्षाओं का जीवंत रूप है।

संघ के संगठनात्मक ढांचे में मुख्यतः तीन स्तर हैं -

1. आचार्य और उपाध्याय परंपरा - जो धर्म की दिशा तय करते हैं।

2. मुनि, आर्यिका और श्रमण-श्रमणियाँ - जो संयमित जीवन जीकर साधना करते हैं और समाज को मार्गदर्शन देते हैं।

3. श्रावक-श्राविकाएँ - जो गृहस्थ जीवन में रहकर धर्म के आचरण को अपनाते हैं।

संघ के सिद्धांत हैं : अहिंसा परमो धर्मः किसी जीव को हानि न पहुँचाना।

संयम और साधना : जीवन में आत्मानुशासन और विवेक रखना।

सत्य और अपरिग्रह : लोभ और आसक्ति से दूर रहना।

ज्ञान और ध्यान : आंतरिक शुद्धि के लिए निरंतर आत्मचिंतन करना।

महान आचार्यों का योगदान : संघ की स्थापना के बाद कई महान आचार्यों ने इसे नई ऊँचाइयाँ दी। आचार्य तुलसी ने संघ में अनुव्रत आंदोलन की शुरुआत कर धर्म को सामाजिक जीवन से जोड़ा। आचार्य भिक्षु को इस पंथ का प्रथम महाआचार्य माना जाता है। उन्होंने 'भिक्षु परंपरा' की नींव रखी, जिसमें ध्यान, तप, और आत्म सुधार को केंद्र में रखा गया। आचार्य महाप्रज्ञ ने 'जीवन विज्ञान' का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें धर्म और विज्ञान का सुंदर संगम दिखाई देता है।

अन्य आचार्य जैसे आचार्य आनंद रत्नसागर, आचार्य जयंतविजय, आचार्य कर्मचंद्र आदि ने संघ की मर्यादा और शुद्ध परंपरा को आगे बढ़ाया।

संघ के प्रमुख उद्देश्य : **1.** आध्यात्मिक उत्थान - आत्मा की शुद्धि ही सर्वोच्च साध्य है। **2.** अहिंसा और करुणा का प्रचार - सभी प्राणियों में समानता और दया की भावना। **3.** शिक्षा और संस्कारों का प्रसार - जैन शालाएँ और प्रवचन केंद्रों के माध्यम से समाज में नैतिक मूल्यों का प्रचार। **4.** नशामुक्त और सदाचारपूर्ण जीवन - संयम, सत्य और सरलता का जीवन जीने की प्रेरणा। **5.** सामाजिक एकता और सेवा - रक्तदान, नेत्रदान, शिक्षादान, जलसेवा जैसे कार्यों में सक्रिय भागीदारी।

ध्यान और साधना की परंपरा : स्थानकवासी

परंपरा का केंद्र बिंदु है - ध्यान और आत्मनिरीक्षण। यहाँ ध्यान को केवल शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि आत्मा की गहराई तक उतरने की प्रक्रिया माना गया है। संघ में प्रतिक्रमण, सामायिक, कायोत्सर्ग और प्रार्थना जैसे साधन दैनिक आचरण का हिस्सा हैं। संघ के साधक प्रातः और सायं ध्यान करते हुए क्षमा याचना और आत्मावलोकन करते हैं, जिससे मन की शुद्धि होती है।

संघ की सामाजिक भूमिका : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ ने समाज में अनेक रचनात्मक कार्य किए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में देशभर में विद्यालय, गुरुकुल और पुस्तकालय स्थापित किए। महिलाओं के उत्थान में श्रमणियाँ और आर्यिकाएँ समाज में नैतिकता और शिक्षा का दीप जलाती हैं। पर्यावरण संरक्षण में संघ ने 'जीव दया' और 'प्रकृति पूजन' की भावना को जीवन में उतारा। आध्यात्मिक शिविरों के माध्यम से युवा पीढ़ी को संयम, ध्यान और नैतिकता की शिक्षा दी जाती है।

संघ की वर्तमान स्थिति और विस्तार : आज श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ भारत के अनेक राज्यों राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा आदि में सक्रिय है। विदेशों में भी संघ की शाखाएँ स्थापित हैं, जैसे अमेरिका, केन्या, यू.के. और दुबई में। संघ के मुनिगण और आर्यिकाएँ गाँव-गाँव, शहर-शहर घूमकर धर्म प्रचार करते हैं और लोगों को जीवन की सच्ची दिशा बताते हैं।

आधुनिक युग में संघ की प्रासंगिकता : आज के युग में जहाँ भौतिकता और प्रतिस्पर्धा ने मानव को तनावग्रस्त बना दिया है, वहाँ संघ की शिक्षाएँ अत्यंत प्रासंगिक हैं। संघ कहता है 'सच्चा सुख बाहर नहीं, भीतर है।' ध्यान, संयम और करुणा के माध्यम से ही मनुष्य आंतरिक शांति प्राप्त कर सकता है।

संघ के आचार्य और साधक यह सिखाते हैं कि धर्म केवल पूजा नहीं, बल्कि जीवन का व्यवहार है।

संघ की उपलब्धियाँ और प्रेरणाएँ : अनेक अहिंसा यात्राएँ और नशामुक्ति अभियान चलाए गए। जीवन विज्ञान केंद्रों की स्थापना हुई, जहाँ मानसिक शांति और ध्यान प्रशिक्षण दिया जाता है। संघ के प्रवचनों के माध्यम से हजारों लोग नकारात्मक जीवन से सकारात्मकता की ओर बढ़े। बच्चों के लिए 'संस्कार शिविर' और युवाओं के लिए 'संयम शिविर' आयोजित किए जाते हैं।

संघ का आदर्श वाक्य : 'जीयो और जीने दो, यही सच्चा धर्म है।' यह वाक्य संघ की आत्मा है - इसमें निहित है अहिंसा, करुणा और सह-अस्तित्व की भावना। संघ का प्रत्येक अनुयायी इस सिद्धांत को जीवन में उतारकर समाज में शांति और सद्भाव फैलाने का कार्य करता है। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ केवल एक धार्मिक संगठन नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण का आंदोलन है।

इसने व्यक्ति को भीतर से शुद्ध, समाज को नैतिक और विश्व को शांतिपूर्ण बनाने का प्रयास किया है। भगवान महावीर की शिक्षाओं पर चलते हुए यह संघ आज भी अहिंसा, सत्य और आत्म साधना का दीपक प्रज्वलित किए हुए है। इसकी यात्रा न केवल धर्म की दिशा में, बल्कि मानवता के उत्थान की ओर अग्रसर है।

❖❖

चिन्तन-मनन करें

धार्मिक प्रवचन सुनते समय या भजन कीर्तन करते समय, श्मशान में अपने किसी स्वजन की चिता को जलते हुए देखने पर, बहुत बुरी तरह से रोगग्रस्त किसी रोगी से मिलते समय और क्रोध शान्त होने पर पश्चाताप करते हुए जो भावना हृदय में उत्पन्न होती है वह स्थायी नहीं होती। यदि स्थायी हो सकी होती तो ऐसे आदमी का जीवन कुछ और ही ढंग का हो जाता। उसका आचार-विचार ऐसा नहीं रह पाता जैसा कि दुनिया के प्रपंचों में उलझे हुए और नाना प्रकार की तिकड़ में लगाने वाले व्यक्ति का होता है। थोड़ी देर का ऐसा मरघटिया वैराग्य लुप्त हो जाता है और फिर पुराने ढर्रे में उलझ जाते हैं। चिन्तन - मनन करें। ❖❖

जन्म दिवस पर विशेष...

विश्व संत परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा.

- प्रवर्तक पू. डॉ. श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा.

व्यक्तित्व गरिमा : अमिताभ-तेज मण्डित मुखमण्डल, तपःपूत स्थूल देह-यष्टि, हृदय-कल्पकारी, गुरु गंभीर, वात्सल्यवती कोमल वाणी, अलौकिक सिद्धि का स्वामित्य, नीर-क्षीर विवेक के धनी, संसार जल में पुरईन के पात सदृश, जल से सर्वथा अप्रभावित नहीं, अपने शुभ स्पर्श से स्वयं जल को धन्य कर देने वाले अस्तित्व का ही कुछ महिमायुक्त चित्र है। गुरुवर परन्तप राजस्थान केसरी पुष्करमुनिजी महाराज कर, किन्तु नहीं, उस अलौकिक व्यक्ति के अदभुत प्रभाव को इस शब्द छवि में मर्यादित कर लेने का प्रयास विफल होता जा रहा है परास्त होता जा रहा है। यह पराभव लेखक के लिए खेद का नहीं, गौरव का ही विषय है, क्योंकि इस हार और असमर्थता का कारण है गुरुदेवश्री की अपरिमेय दिव्यता परिधिहीन भव्यता। यह आभास बार-बार विभोर किए देता है कि वह दिव्य चरणाश्रय इस जन को कोटि-कोटि जन्मों में अर्जित सुकृत के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ।

'व्यक्तित्व' मनुष्य के जीवन की उपलब्धियों को मूल्यांकित कर प्रस्तुत कर देने वाला एक व्यक्त साधन है। व्यक्ति की कर्मक्षेत्र में अनेक आकांक्षाएं, कल्पनाएं और योजनाएं रहती हैं, किन्तु उसके व्यक्तित्व का धन उसका कृतित्व ही बन पाता है। कल्पनाएं गौण रह जाती है-जब तक कि क्रियान्वित नहीं हो जाती। चिन्तनीय प्रसंग एक और भी है - स्वार्थधारित कर्मपुंज महत्वहीन होकर सर्वहितकारी व्यक्तित्व के विकास में योग नहीं दे पाते, अपितु बाधक ही अधिक रहते हैं। लोकहित की कामनाओं से अनुप्रेरित कर्मयोगी विरले ही होते हैं। गुरुदेव श्री पुष्करमुनिजी म.सा. इस गरिमा से अलंकृत सिद्ध थे। इस कथन में रंचमात्र भी न तो संकोच का अनुभव होता है, और न ही अतिशयोक्तियों का संदेह ही।

राजस्थान केसरी : इस अलंकार से गुरुदेवश्री को सम्मानित करने के प्रयास में समाज ने अपने हृदय की समस्त श्रद्धा और अपार भक्ति भाव को व्यक्त किया है। प्रतीत होता है कि गुरुवर को प्रतिभा और व्यक्तित्व के साथ संयुक्त होकर यह अलंकार स्वयं अलंकृत हो गया है, सार्थक हो गया है - इस अलंकार का मूल्य ही जैसे स्पष्टतः निर्धारित हो गया है। विपिन बिहारी केसरी अपनी सीमा में सर्वोच्च सत्ता का स्वामी, सर्वश्रेष्ठ और 'एकमात्र' होता है। 'राजस्थान केसरी' से भी यही संकेत अभीष्ट है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आप केसरीवत् असाधारण, सर्वोच्च, एकमात्र एवं श्रेष्ठतम में अर्जित गौरव, यश और विक्रम का द्योतक ही है।

वाणी-चमत्कार गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व की एक अन्यतम विशेषता थी। यही वह चमत्कार है, जिसके कारण मात्र कुछ क्षण का श्रोता सदा-सदा के लिए आपका अनुगामी हो जाता था। आपश्री की वाणी में पारस-स्पर्श था। जो लौहचित्त की मूल्यवान, कान्तिपूर्ण स्वर्ण में परिणत कर देता था। गुरुवर पुष्करमुनिजी म.सा. वस्तुतः वाणी के प्रभु थे। वाणी का प्रभु वह है, जिसके स्वर में युग मुखरित होता है, जिसके प्रवचन से वर्तमान की समस्याओं के निराकरण के निश्चित पथ सूझते हो एवं संस्कृति व सभ्यता प्रतिनिधित्व पाती हो, ओज और तेज से सम्पन्न हो, जिसमें जोश के साथ-साथ होश भी हो। वह चेटक (जादू) पूज्य गुरुदेव की वक्तृत्ता में विद्यमान था। जिससे हृदय का उपमान पत्थर के स्थान पर कोमल मोम हो जाता है। सामान्यतः आपश्री की समकक्षता का वत्ता अन्यत्र दुर्लभ ही था।

जैन समाज की इस अनुपम विभूति का नाम 'पुष्कर मुनि' आपश्री के गुरुदेव महास्थविर श्री ताराचंदजी महाराज साहब द्वारा प्रदत्त है, जिससे स्पष्ट है कि इस नामकरण के रूप में श्रद्धेय महाराज साहब ने आपश्री की अद्भुत व अपूर्व शक्ति सामर्थ्य और प्रतिभा के संबंध में अपने हृदयस्थ विश्वास को ही व्यक्त किया था। 'पुष्करमुनिजी' कितनी अर्थपूर्ण संज्ञा के स्वामी थे आपश्री। आपकी उपलब्धि जैन समाज को कृतकृत्य कर देने में अपर्याप्त नहीं प्रसिद्ध है कि 'पुष्करं दुर्लभं लोके'!

जब लोक में ही पुष्कर की प्राप्ति दुर्लभ मानी जाती है, तब राजस्थान प्रदेश के जैन समाज के लिए वह सुलभ हो गया, यह समाज का अहोभाग्य नहीं तो और क्या था। यह दुर्लभ रत्नप्राप्ति समाज के अभ्युदय और प्रगति के पक्ष में जो महिमामय नेतृत्व प्रदान कर रही थी। उससे प्रत्येक सामाजिक गद्गद था, उपकृत था। समाज के सुकृत ही इस उपलब्धि के रूप में प्रकट हुए थे। यह सत्य है कि समाज को शताब्दियों के तप के फलस्वरूप ही ऐसी विभूतियों का सान्निध्य लाभ

होता है। सर्वविदित है कि वैष्णव समाज में 'पुष्कर' की मान्यता 'तीर्थराज' अथवा 'तीर्थ गुरु' के रूप में स्वीकार की गई है। वस्तुतः सम्पूर्ण तीर्थों की यात्रा का फल 'तीर्थ गुरु' की यात्रा कर लेने पर ही सम्पन्न और सफल माना जाता है, अन्यथा तीर्थ भ्रमण का समस्त पुण्य निष्फल और प्रभावहीन रह जाता है। पूज्य गुरुदेव के विषय में इसी प्रकार की गरिमा स्वीकारते हुए हमें तनिक भी अतिशयोक्ति की प्रतीति नहीं होती। आध्यात्मिक साधकों के लिए यह लगभग अनिवार्य-सा है कि मोक्ष-लाभ की प्रयोजन पूर्ति के लिए श्री पुष्करमुनिजी के चरणाश्रय को स्वीकारें, आपश्री की प्रसाद प्राप्ति करें।

देववाणी संस्कृत में 'पुष्कर' का समानार्थक शब्द 'मेष' है। मेघ जल वर्षण द्वारा प्यासी धरती की प्यास बुझाता, तप्त जगत को शीतलता का सुख देता, वसुंधरा को सरल बनाकर 'अन्नदा' का रूप देता, उसके माता-रूप को समृद्ध करने में सहयोग करता और पृथ्वी तल पर नाना वृक्ष-लताओं को पल्लवित, पुष्पित और फलित करता है। आपश्री भी लोकरंजन में मेघावली से कम नहीं थे। पूज्य गुरुदेव जिनवाणी के निरंतर वर्षण से जन-जीवन को शीतलता, शांति, निर्मलता और उज्ज्वलता प्रदान करने में सतत् व्यस्त थे।

अस्तु, 'पुष्कर मुनि' की संज्ञा आपश्रीजी के हेतु सर्वथा समीचीन थी। यही नहीं, इस विभूति के लिए इसके अतिरिक्त अन्य सार्थक संज्ञान वस्तुतः संभव ही नहीं है। महास्थविर श्रद्धेय श्री ताराचंदजी महाराज साहब का पूर्वानुमान कितना सत्य और तथ्यपूर्ण सिद्ध हुआ।

श्रद्धेय गुरुदेव चिर अतीत से ही समाज में अगाध, असीम श्रद्धा के केंद्र बिन्दु बने रहे। मुझे अपनी किशोरवय का एक प्रसंग आज भी स्मरण है। पूज्य माता धापूकुंवरजी आपश्री की यशोगाथा सुनाया करती थी। इस अद्भुत गाथा से प्रेरित हो मेरा मन आपश्री के दर्शनार्थ लालायित रहने लगा। इस सहज जिज्ञासा के अभिभूत चित्त अत्यंत अशान्त रहता। दुर्भाग्य ही था कि यह उत्कृष्ट कामना पर्याप्त दीर्घकाल तक पूर्ण नहीं हो पायी। मेरी आकुल-व्याकुल स्थिति कुछ ऐसी थी कि बार-बार सोचता कब यह अवसर मिलेगा कि गुरुदेव के श्रीचरणों में समर्पित हो विनय कर सकूं।

विलम्ब से सही, अन्ततः यह सुयोग भी आया ही। इस अप्रतिम सापक-जलद के दर्शन से मेरा मन मयूर नाच उठा। सौभाग्य के वे परम पावन पल कितने स्वर्णीय, सुखद, सुन्दर, मादक-मधुर थे, जअ चिर तृपा को सुधा सागर की प्राप्ति हुई थी। बात यों बनी कि अजमेर नगर में सन्त शिखर सम्मेलन का आयोजन था, माताजी तथा भाताश्री रमेशकुमारजी के संग इस अवसर पर मैं भी अजमेर गया। जैसा सुना था-महाराज साहब के प्रति समाज की भक्ति और श्रद्धा का वैसा ही अगाध भाव मैंने पाया भी। सम्मेलन में अपार जन-समूह उमड़ पड़ा था। गुरुदर्शन को चिरकाल से छटपटाते, आकुल-व्याकुल मेरे नेत्रों को यह जमघट घानघटा की ओट-सा प्रतीत हुआ, किन्तु क्षणिक ही। चिरभिलपित चिरप्रतिक्षित यह क्षण आ ही पहुँचा, जअ निकट से गुरुदेवश्रीजी के दर्शन का लाभ लेकर अतृप्त नेत्रों को अनिर्वचनीय शान्ति का अनुभव हुआ। युग-युगान्तरों से चंद्रिका के प्यासे मेरे युगल नयन-चकोर एकटक गुरुदेव के मुखचंद्र की ओर निहारते ही रहे। सुधाकेंद्र चंद्र से नयनों की राह सुधा हृदय को आप्लावित करने लगी। उस अगााय सुधासिन्धु से मेरा मन मराल मुखरित हो उठा।

तेज-पुंज के सामीप्य मात्र से ही मन में एक अद्भुत शीतलता और पवित्रता का संचार हो गया। उस समय आपश्रीजी समाज की समस्याओं को सुलझाने में, विशृंखलित और अस्त-व्यस्त शक्ति को सुबद्ध रूप देकर उपयोगी बनाने के उपाय खोजने में, गण्यमान्य सज्जनों में विचार विनिमय करने में तल्लीन थे। अपने समक्ष दीन भक्ति भाव में सविनय किशोर (मुझ) को खड़ा देख आपश्रीजी के हृदय में सहज स्नेह की हिलोर उठी, जो अधरों पर प्रसन्न मुस्कराहट बन कर विखर गयी। मेरी और आपश्रीजी उन्मुख हुए। उस कृपा-कटाक्ष के निक्षेप मात्र से में कृतकृत्य हो गया। वे अमूल्य क्षण इस जन्म में तो क्या, जन्म-जन्मान्तरों में भी मेरे लिए कभी विस्मृति का विषय नहीं बन सकेंगे। इस मधुर संस्मरण की साक्षी में आज मुझे एक पाश्चात्य दार्शनिक की इस उक्ति में यथार्थ की प्रतीति होती है 'जो व्यक्ति छोटों से मिलकर उनका आदर-सत्कार करता है, उनसे प्रेमपूर्वक वार्तालाप करता है, वही महापुरुष हो सकता है।'

'महापुरुष' विशेषण के सर्वथा उचित और अधिकारी विशेष्य पूज्य गुरुदेव का परिचय प्रस्तुत करना मेरे जैसे अकिंचन साधक के सामर्थ्य से परे की वस्तु है। निस्संदेह रवि-रश्मियों की भांति आपश्रीजी की प्रखर प्रतिभा, गिरीन्द्राभ गरिमा और कीर्ति तो स्वयंप्रभ है, यही नहीं उनका अबाध संचरण समाज में सर्वत्र है। भला, आलोक भी कहीं व्याख्या की अपेक्षा रखता है। तथापि विनम्र शिष्य का यह विनीत प्रयास है। ये श्रद्धासुमन है, जो श्रद्धेय के पूज्य चरणों में सभक्ति समर्पित है। ❖❖

जन्म जयंती पर विशेष...

साहित्य दिवाकर आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.

- श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म.सा.

तृतीय पट्टधर आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेंद्रमुनि जी म. सा. का जन्म विक्रम संवत 1988 की कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को हुआ था। उनके पैतृक परिवार का नाम बरडिया था और निवास उदयपुर (राजस्थान) में था। उनकी माता का नाम तीज कुमारी था। दुर्भाग्यवश उनके पिता श्री जीवनसिंह जी बरडिया का देहांत उनके जन्म लेने के केवल 21 दिन बाद ही हो गया।

उनकी जन्म जयंती की पृष्ठभूमि भी रोचक है। इस दिन माँ तीजकुमारी के स्वप्न में दिव्य अनुभव हुआ और उन्हें ज्ञात हुआ कि उन्हें एक पुण्यवान पुत्र की प्राप्ति होगी। इस कारण, जन्म तेरस (त्रयोदशी) और दीक्षा (तीज) - दोनों का योग इस जीवन की शुभ सूचना के रूप में देखा जाता है।

बाल्यकाल, संस्कार एवं प्रारंभिक रूचियाँ : बाल अवस्था में ही धर्म एवं साधना में रुचि दिखने लगी थी। उनके बचपन की कहानियों में कहा जाता है कि वे खेल-खेल में प्रवचन देते दिख जाते थे तथा "झोली लेकर विहार करना" उनकी लीलाओं में शामिल था। जब वे मात्र 7 वर्ष के थे तब उन्होंने पच्चीस बोल और प्रतिक्रमण (जैन धर्म में एक प्रकार की आत्मावलोकन प्रक्रिया) कंठस्थ कर लिए थे। उनकी बहन सुंदरीकुंवर ने भी 12 फरवरी 1938 को दीक्षा धारण की और महाश्रमणी साध्वी पुष्पवती जी नाम पाई। बाल्यकाल से ही उनके अंदर तीव्र अध्ययन की शक्ति थी। एक भाषा का अध्ययन करने पर वे शीघ्र उसमें प्रवीण हो जाते थे।

दीक्षा एवं मुनि जीवन : धर्म प्रवृत्ति को देखकर उन्होंने दीक्षा लेने की इच्छा जताई। उनकी दीक्षा खंडप ग्राम (बाडमेर जिला राजस्थान) में संपन्न हुई। जब वे लगभग 9 वर्ष की आयु में थे। दीक्षा तिथि विक्रम संवत् 1997, फाल्गुन शुक्ल तृतीया (01 मार्च 1941) के दिन दी गई। दीक्षा प्रदाता थे महास्थविर ताराचंद जी महाराज और गुरुदेव पुष्करमुनि जी महाराज। दीक्षा के पश्चात उन्होंने "देवेंद्र मुनि" नाम ग्रहण किया। उनके गुरुदेव पू. श्री पुष्करमुनि जी महाराज थे और वे उनके प्रथम शिष्य माने जाते हैं। दीक्षा के समय वे इतने छोटे थे कि पद-यात्रा करना उनके लिए संभव नहीं था। उनके गुरुदेवों और अन्य वरिष्ठ साधुओं ने उन्हें कन्धे पर बिठाकर विहार कराया। इस प्रकार उनका मुनि जीवन प्रारंभ हुआ। एक साधु की कठोर जीवन शैली अपनाकर, तीव्र साधना, अध्ययन एवं सेवा की ओर अग्रसर।

अध्ययन, विद्वता एवं भाषा प्रवीणता : दीक्षा के बाद उन्होंने गुरु एवं श्रोता साधु संघ में रहकर गहन अध्ययन आरंभ किया। वे हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, पाली, गुजराती और मराठी भाषाओं सभी में प्रवीण बन गए। उनका अध्ययन विषय विविध रहा। जैन ग्रंथ, अन्य आगम, वेद, उपनिषद्, दर्शन (दर्शन शास्त्र), नीति (न्याय), साहित्य एवं इतिहास आदि। उनकी लेखन क्षमता अद्वितीय थी। वे अनेक ग्रंथों के लेखक और संपादक थे, जिनमें प्रमुख हैं: कर्म विज्ञान (भाग 1 से 9), जैन निति शास्त्र, भगवान महावीर-एक अनुशीलन, अरिष्टनेमी कर्मयोगी श्री कृष्णा, भारतीय वांग्मय में नारी, विक्रमादित्य की गौरव गाथा और अन्य कई ग्रंथ उनके लेखन-तर्क, संक्षिप्त विवेचन और संपादन कार्य प्रसिद्ध हुए। वे साहित्य सर्जक के रूप में बहुत समृद्ध माने जाते हैं। उनके द्वारा 300–400 ग्रंथों के लेखन व संपादन का उल्लेख मिलता है।

पदोन्नति एवं धार्मिक उत्तरदायित्व : आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषि जी महाराज की देख-रेख में, 12 मई 1987 को पुणे (महाराष्ट्र) में उन्हें उपाचार्य पद प्रदान किया गया। आचार्य सम्राट की मृत्यु के पश्चात, 15 मई 1992 को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। इस प्रकार वे स्थानकवासी श्वेतांबर श्रमण संघ के तीसरे आचार्य सम्राट बने। आचार्य पद ग्रहण के पश्चात उनका मुख्य उद्देश्य संघ-समाज का शुद्धीकरण, साधु-समाज का आध्यात्मिक उत्थान और जैन धर्म का व्यापक प्रचार था।

व्यक्तित्व, प्रवचन शैली एवं योगदान : आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेंद्रमुनि जी म. का व्यक्तित्व बहुत ही सरल, संयमी और मधुर था। उनकी वाणी में एक मिठास और

प्रभावकारी ताकत थी, जिससे सुनने वाले मन, बुद्धि और हृदय से प्रभावित होते। उनकी श्रमशीलता उल्लेखनीय थी। लेखन, प्रवचन, अध्ययन, स्वाध्याय और साधना, ये सभी जीवन के अंग बने हुए थे।

उन्होंने अनेक धार्मिक, साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लिया और समाज को प्रेरित किया। उनके उपदेश अमृत की तरह माने जाते थे। डॉ. श्री राजेंद्रमुनि जी म.सा. ने कहा था कि आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेंद्रमुनि जी म.सा. समन्वय, ज्ञान, दर्शन, तप, साधना और जप आदि गुणों से सम्पन्न थे और उनका वचन अमृत तुल्य था।

उदयपुर के कार्यक्रमों में लोग उनके साथ बिताए पलों को स्वर्णिम मानते हैं और नासिक जैन सम्मेलन आदि कार्यक्रमों में उनकी गरिमा विशेष अनुपम थी।

साहित्यिक प्रभाव एवं विरासत : आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेंद्रमुनि जी म.सा. ने जैन साहित्य एवं धर्म के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया है। उनका लेखन न केवल व्यापक था, बल्कि गूढ़ और अर्थपूर्ण भी था। उनकी लेखनी ने न केवल जैन समाज को बल्कि अन्य धर्मावलंबियों को भी प्रेरित किया। वे स्वयं 'ज्ञान के भण्डार' कहे गए थे। उनका जीवन ज्ञान. आचार का आदर्श था। वे उस सिद्धांत में विश्वास रखते थे कि केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं, बल्कि आचरण और आचरण की शुद्धता होनी चाहिए।

उनकी साधुता, त्याग, संयम, मधुर वाणी, ये सभी गुण आगामी साधकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

समता : साधु जीवन का मुख्य गुण

साधु जीवन के कई गुण हैं, परन्तु समता साधु-जीवन का एक ऐसा गुण है, जिसमें दया, करूणा, मृदुता, सरलता, सत्यता, संयम आदि सबका समावेश हो जाता है। जैन साधु तो जब साधु-जीवन अंगीकार करता है, तब यावज्जीवन समता के पाठ से ही करता है।

प्राकृत भाषा में 'समय' यह शब्द स्त्रीलिंग लगता है (औ द्वि-ए-व) **'करेमि भंते! समाइयं'** हे भगवन् ! मैं सामायिक अंगीकार करता हूँ।

यह दीक्षा के समय का मुख्य पाठ है, जो यह सूचित करता है कि साधु जीवन आजीवन समता से ओत-प्रोत होना चाहिए। समता साधु के अंग-अंग में, रग-रग में, उसके विचार और आचार में रम जानी चाहिए। मन, वचन और काया का कोई भी कोना ऐसा न रहे, जो समता से रहित हो। समता उसके स्वभाव, व्यवहार और जीवन की हर प्रवृत्ति में दूध और पानी की तरह घुलमिल जानी चाहिए। यह समता के ही स्वप्न देखे, समता की ही पुष्पवाटिका में विचरण करे, समता की प्रयोगशाला में, अध्ययन, मनन, निरीक्षण, आलोचन और परीक्षण करे। वह रात-दिन देखे-परखे, नापे-तोले कि मेरे जीवन में समता कहाँ तक रमा पाया हूँ। समता मेरे जीवन में किस विभाग में या व्यवहार में अभी तक पर्याप्त रूप से नहीं आ पायी है? साधु का ओढ़ना बिछज्ञना पहनना, सोना, खाना-पीना चलना-फिरना, बोलना आदि सभी क्रियाएं समता को दृष्टिगत रख कर हों। तभी समझना कि यहाँ साधु जीवन है। उत्तराध्ययन सूत्र के २४वें अध्ययन में स्पष्ट कहा है कि **'समयाए समणो होई'** समता से ही कोई साधक श्रमण होता है, सन्त होता है। साधु जीवन में और सब क्रियाएं हों, किन्तु समता न हो तो, वह सच्चे माने में साधु जीवन नहीं माना जा सकता है।

साधु जीवन में समता कहाँ कहाँ हो? प्रश्न यह होता है कि साधुचरित पुरुष जब समता से पहचाना जाता है तो समता उसके जीवन में कहाँ-कहाँ हो? वह कहाँ-कहाँ सम रहे? प्रश्न बड़ा ही महत्वपूर्ण। उत्तराध्ययन सूत्र में बहुत ही सुंदर ढ़ंग से इसका समाधान मिलता है -

'लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
समो जिंदा-पसंसु तहा माणवमाणओ ।।'

साधु पुरुष लाभ और अलाभ में, सुख और दुःख में, जीवित और मरण में, निन्दा और प्रशंसा में तथा सम्मान और अपमान में सम रहे। कितना सुंदर तथ्य शास्त्रकार ने हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। साधु दो प्रकार के होते हैं- एक गृहस्थ जीवन में अणुव्रती साधक साधु और एक मुनिजीवन में महाव्रती उच्च साधक साधु। दोनों के जीवन में लाभ और अलाभ में सम रहने की वृत्ति होनी चाहिए।

दीक्षा दिवस पर विशेष...

खद्दरधारी पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलाल जी म. जीवन एवं दर्शन

- उप-प्रवर्तक पूज्य श्री श्रुतमुनि जी म.सा.

जैन धर्म अपने त्याग, तप और आत्मशुद्धि के सिद्धांतों के लिए जाना जाता है। संसार के मोह-माया, राग-द्वेष और भौतिक सुखों से विमुख होकर जब कोई व्यक्ति आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर होता है, तब वह दीक्षा मार्ग पर प्रवेश करता है। इसी प्रकार, श्री गणेशीलाल जी म.सा. का दीक्षा ग्रहण एक प्रेरणादायक और ऐतिहासिक घटना के रूप में जैन समाज में स्मरणीय बन गया है। उनकी दीक्षा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं थी, बल्कि आत्मा की परम मुक्ति की दिशा में उठाया गया प्रथम और सर्वोच्च कदम था।

प्रारंभिक जीवन : मुनि गणेशीलाल जी म.सा. का जन्म एक धार्मिक एवं संस्कारी जैन परिवार में हुआ। बचपन से ही उनमें धार्मिक संस्कारों और जिज्ञासाओं का समावेश था। सत्य, अहिंसा, संयम और धर्म के प्रति उनकी आस्था बाल्यकाल से ही स्पष्ट झलकने लगी थी। उन्होंने सांसारिक जीवन में रहते हुए भी सदैव धर्माचरण को सर्वोपरि रखा। शिक्षा के दौरान वे कर्म, आत्मा और मोक्ष के रहस्यों पर गहराई से चिंतन करते थे। धीरे-धीरे उनका मन सांसारिक मोहजाल से विरक्त होने लगा।

वैराग्य की भावना का उदय : गणेशीलाल जी म.सा. के जीवन में एक समय ऐसा आया जब उन्होंने देखा कि संसार में सुख क्षणिक है और दुःख अनंत। यह अनुभव उन्हें भीतर तक झकझोर गया। वे समझ गए कि जब तक जीव कर्म बंधनों में उलझा रहेगा, तब तक सच्चा शांति और मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। उन्होंने अनेक धार्मिक प्रवचनों, मुनि प्रवर्तकों और आचार्यों के सान्निध्य में बैठकर आत्मचिंतन किया। धीरे-धीरे उनके भीतर एक गहन वैराग्य की भावना जाग्रत हुई। उन्होंने निर्णय लिया कि अब वे अपना जीवन केवल आत्मकल्याण और मोक्षमार्ग की प्राप्ति में समर्पित करेंगे।

दीक्षा ग्रहण की तैयारी : दीक्षा ग्रहण एक अत्यंत गंभीर एवं अनुशासित प्रक्रिया है। यह केवल वस्त्र या नाम बदलने का अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मा के पूर्ण शुद्धिकरण की यात्रा का प्रारंभ है। दीक्षा से पूर्व गणेशीलाल जी म.सा. ने अपने गुरु के मार्गदर्शन में तीव्र तप, ध्यान, स्वाध्याय और त्याग का अभ्यास किया। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों से निवृत्ति ली, परिवारजनों को समझाया और उन्हें धर्ममार्ग पर प्रेरित किया। दीक्षा से पूर्व उन्होंने क्षमा याचना कर सभी से अपने जीवन के पिछले कर्मों के लिए माफी मांगी, ताकि वे निर्मल चित्त से आत्ममार्ग पर अग्रसर हो सकें।

दीक्षा समारोह का आयोजन : दीक्षा समारोह का आयोजन अत्यंत भव्य और धार्मिक वातावरण में किया गया। सैकड़ों श्रद्धालु, साधु-साध्वियाँ और आचार्य उपस्थित थे। मंच पर जब गणेशीलाल जी म.सा. ने अपने सांसारिक वस्त्र उतारकर सफेद साधु वेश धारण किया, तब वातावरण में एक अद्भुत शांति और श्रद्धा का संचार हुआ। उनकी आंखों में चमक और मुखमंडल पर गहन शांति थी - मानो उन्होंने आत्मा के सच्चे स्वरूप का साक्षात्कार कर लिया हो। गुरु के कर-कमलों से मुनि पद ग्रहण करते समय उन्होंने संकल्प लिया कि अब जीवनभर वे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह - इन पाँच महाव्रतों का पालन करेंगे। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि अब उनका जीवन केवल आत्मज्ञान, ध्यान, और लोककल्याण के लिए समर्पित रहेगा।

दीक्षा का आध्यात्मिक अर्थ : जैन दर्शन के अनुसार, दीक्षा केवल बाह्य परिवर्तन नहीं है बल्कि यह आत्मा की अंतः यात्रा का आरंभ है। यह सांसारिक संबंधों, धन, मान, प्रतिष्ठा, और इच्छाओं से मुक्त होकर आत्मस्वरूप की ओर लौटने की प्रक्रिया है। गणेशीलाल जी म.सा. की दीक्षा इस बात का प्रतीक है कि जब मनुष्य अपने भीतर के प्रकाश को पहचान लेता है, तो वह समस्त अंधकारों से परे हो जाता है। मुनि गणेशीलाल जी म.सा. ने दीक्षा के माध्यम से यह सन्देश दिया कि आत्मकल्याण ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

उन्होंने बताया कि शरीर नश्वर है, परंतु आत्मा अनंत, अजर और अमर है। जब मनुष्य आत्मा के प्रति जागृत होता है, तभी वह मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होता है।

दीक्षा के पश्चात जीवन : दीक्षा के पश्चात मुनि गणेशीलाल जी म.सा. का जीवन पूर्णतः तप, ध्यान, और स्वाध्याय में व्यतीत होने लगा। उन्होंने नग्नता, भूख, प्यास, और कठोर मौसम को सहन करते हुए भी आत्मशक्ति और संयम का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका प्रत्येक क्षण धर्म, ध्यान और लोकमंगल में बीतने लगा। उन्होंने प्रवचनों के माध्यम से समाज को अहिंसा, सत्य और नैतिक जीवन के महत्व की शिक्षा दी।

वे सदैव यह कहते थे कि - 'आत्मा की विजय ही सच्ची विजय है। जो स्वयं को जीत लेता है, वह संसार को भी जीत लेता है।'

उनकी विनम्रता, करुणा, और वचन-शक्ति ने हजारों लोगों को धर्ममार्ग की ओर प्रेरित किया। उनके उपदेशों से अनेक गृहस्थों में वैराग्य की भावना उत्पन्न हुई और उन्होंने संयम जीवन अपनाने की प्रेरणा ली।

दीक्षा का सामाजिक और धार्मिक प्रभाव : मुनि गणेशीलाल जी म.सा. की दीक्षा का प्रभाव केवल उनके व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जैन समाज में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। युवाओं में संयम और तप की भावना प्रबल हुई। समाज ने यह अनुभव किया कि भले ही भौतिकता के युग में लोग भटक रहे हों, परंतु आज भी कुछ आत्माएँ ऐसी हैं जो सत्य और आत्मकल्याण के लिए अपना सब कुछ त्याग सकती हैं। दीक्षा समारोह ने समाज में यह संदेश दिया कि धर्म आज भी प्रासंगिक है - यह केवल अतीत की परंपरा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता है।

मुनि श्री गणेशीलाल जी म.सा. की दीक्षा ग्रहण केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मजागरण की गाथा है। यह हमें सिखाती है कि त्याग, तप और संयम ही सच्चे सुख के स्रोत हैं। सांसारिक भोग और संग्रह के पीछे भागने वाला मनुष्य कभी संतुष्ट नहीं हो सकता, क्योंकि वास्तविक शांति तो आत्मा के भीतर ही निहित है।

उनकी दीक्षा यह प्रेरणा देती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर झाँके, अपनी आत्मा को पहचाने और उस मार्ग पर चले जहाँ से मुक्ति की दिशा प्रारंभ होती है। मुनि श्री गणेशीलाल जी म.सा. का जीवन इस बात का प्रतीक है कि जब मनुष्य का लक्ष्य उच्च और निश्चय दृढ़ होता है, तब वह संसार के बंधनों को तोड़कर मोक्षमार्ग का पथिक बन सकता है। ❖❖

आत्म-कल्याण

जीवन की सार्थकता और सच्ची सफलता आत्म-कल्याण में है। आत्म-कल्याण का अभिप्राय है, आत्मा का अपने विशुद्ध स्वरूप की प्राप्ति कर लेना। जो महामानव अपनी आत्मा का कल्याण करना चाहते हैं वे सांसारिक या इहलौकिक सुखों को अनित्य और हेय समझते हैं। क्योंकि वे जान लेते हैं, ये सांसारिक सुख या सफलताएं आत्मा को अपने विशुद्ध रूप में लाने के बदले और भी अशुद्ध बना देते हैं। परिणाम यह होता है कि यह मानव जीवन जिसके द्वारा सदा के लिए इस संसार से मुक्त हुआ जा सकता है, पुनः अनंत काल के लिए चौरासी लाख योनियों में भटका देता है तथा एक बार इसके व्यर्थ चले जाने पर पुनः प्राप्त होना भी दुर्लभ हो जाता है। अतएव इस अमूल्य जीवन को संसार के क्षणभंगुर सुखों की प्राप्ति में नष्ट कर देना महामूर्खता है। आत्म-कल्याण के इच्छुक प्राणी ऐसी मूर्खता नहीं करते तथा कोई भी क्रिया ऐसी नहीं करते जिससे आत्मा का अहित हो।

यह मनुष्य शरीर समस्त शुभ फलों की प्राप्ति का मूल है और अत्यंत दुर्लभ होने पर भी अनायास सुलभ हो गया है। इस संसार से पार उतरने के लिए एक सुदृढ़ नौका है तथा शरण ग्रहण करने से गुरुदेव इसके केवट बनकर पतवार का संचालन करने लगते हैं। इतना ही नहीं, स्मरण मात्र से ही अनुकूल होकर मैं (शुद्धता) लक्ष्य की ओर बढ़ने लगता हूँ। इतनी सुविधाएं पाकर भी जो इस शरीर के द्वारा संसार सागर से पार नहीं हो जाता, वह अपनी आत्मा का घातक है। ❖❖

जन्म जयंति दिवस पर विशेष...

पूज्य गुरुदेव जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमल जी म. सा. का जीवन चरित्र एवं योगदान

- **रमेश भण्डारी जैन**-चेयरमैन-विश्वस्त मण्डल, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

जैन धर्म के इतिहास में अनेक ऐसे संतों ने जन्म लिया जिन्होंने अपनी साधना, तप, त्याग और ज्ञान से धर्म-ज्योति को पुनः प्रज्वलित किया। परम पूज्य जगदवल्लभ, प्रसिद्ध वक्ता, पंडित रत्न जैन दिवाकर परम पूज्य गुरुदेव श्रद्धेय मुनिश्री चौथमलजी महाराज सा. उन्हीं परम साधकों में से एक थे जिन्होंने आध्यात्मिक अनुशासन, संयम, वैराग्य और लोक-कल्याण के मार्ग को अपने जीवन का ध्येय बनाया। वे न केवल एक तपस्वी और ज्ञानी साधु थे, बल्कि समाज-सुधारक, शिक्षा-प्रवर्तक और मानवता के सच्चे उपासक भी थे। उनका जीवन एक दीपक की तरह है - जो आत्मज्ञान की ज्योति से युगों को आलोकित करता रहा है।

जन्म एवं बाल्यकाल : मुनिश्री चौथमलजी महाराज का जन्म कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी वि.सं. 1934 में मध्य प्रदेश के नीमच जिले में हुआ। उनके पिता का नाम गंगारामजी और माता का नाम केसरबाई था। परिवार जैन धर्म का अनुयायी, धर्मपरायण एवं सदाचारपूर्ण था। घर में संत-महात्माओं का सत्संग होता रहता था, जिससे बालक चौथमल के मन में प्रारंभ से ही धर्म के प्रति गहरा आकर्षण उत्पन्न हुआ।

बाल्यावस्था में ही उनमें असाधारण शांत स्वभाव, अध्ययन-निष्ठा और सत्य के प्रति गहरी जिज्ञासा दिखाई देने लगी थी। उनके मित्र और परिवारजन बताते हैं कि वे खेलकूद की अपेक्षा धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में अधिक समय बिताते थे।

शिक्षा एवं प्रारंभिक जीवन : चौथमलजी ने प्रारंभिक शिक्षा नीमच और आस-पास के नगरों में प्राप्त की। उन्होंने हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी और अंकगणित जैसे विषयों का अध्ययन किया। उनका मन संसारिक विषयों में नहीं रमाया बल्कि वे सदैव जीवन के सत्य की खोज में रहते थे। उनकी युवावस्था ज्ञान और अध्यात्म की खोज का काल थी। वे विभिन्न आचार्यों और साधुओं के सत्संग में जाते और आत्मा के शुद्ध स्वरूप को जानने का प्रयास करते। धीरे-धीरे उनमें वैराग्य की भावना दृढ़ होती चली गई।

वैराग्य की जागृति और दीक्षा : कहते हैं कि एक बार चौथमलजी ने किसी तपस्वी संत को निर्लिप्त भाव से ध्यान करते देखा। उस दृश्य ने उनके भीतर गहरा परिवर्तन कर दिया। संसार के भोग-विलास उन्हें अस्थायी प्रतीत होने लगे। उन्होंने अपने परिवार से विरक्ति ग्रहण की और जीवन के वास्तविक उद्देश्य - आत्म-मोक्ष - की ओर बढ़ने का निश्चय किया।

फाल्गुन शुक्ल तृतीया वि.सं. 1952 के पावन दिवस पर, उन्होंने राजस्थान के पूज्य श्री हीरालालजी महाराज के सान्निध्य में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के साथ ही उन्होंने संसारिक वस्त्र उतारकर संयम-जीवन का आरंभ किया और मुनि चौथमलजी कहलाए। यही वह क्षण था जब उनकी आत्मा ने सांसारिक मोह-बंधन से पूर्ण मुक्ति पाई।

संयम-जीवन की विशेषताएँ : मुनिश्री चौथमलजी महाराज का संयम-जीवन अनुशासन, तप, अहिंसा और करुणा का आदर्श उदाहरण था। वे हर नियम का अत्यंत कठोरता से पालन करते। उनके दिनचर्या का प्रत्येक क्षण धर्म-साधना में समर्पित होता था।

पैदल विहार : वे आजीवन पैदल ही विहार करते रहे। राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र जैसे प्रदेशों में उन्होंने धर्म-प्रचार किया।

आहार-संयम : वे केवल एक बार आहार लेते थे, वह भी पात्रता-विचार कर और नपा-तुला।

मौन और ध्यान : वे प्रतिदिन घंटों ध्यान, स्वाध्याय और प्रतिक्रमण में लीन रहते।

अहिंसा का पालन : उनके जीवन का मूल तत्व अहिंसा था - न केवल कर्म से, बल्कि वाणी और मन से भी। उनके शिष्यों का कहना है कि उनके समीप पहुँचने मात्र से व्यक्ति के मन में शांति का अनुभव होता था।

ज्ञान-प्राप्ति और अध्यात्म-साधना : मुनिश्री चौथमलजी ने केवल बाह्य आचार का पालन ही नहीं किया, बल्कि आत्म-अनुभूति की गहराइयों तक पहुँचे। उन्होंने जैन आगम, प्राकृत ग्रंथ, दर्शन-शास्त्र, तर्क और योग का गहन अध्ययन किया। उनकी वाणी में अद्‌भुत प्रभाव था। जब वे प्रवचन देते, तो श्रोता मौन होकर सुनते रहते। वे कठिन दार्शनिक विषयों को सरल भाषा में इस तरह प्रस्तुत करते कि सामान्य गृहस्थ भी सहजता से समझ सके। उनकी साधना का लक्ष्य केवल आत्म-कल्याण नहीं था, बल्कि समग्र समाज को ज्ञान-ज्योति

से आलोकित करना भी था।

प्रवचन-कार्य और लोक-कल्याण : मुनिश्री चौथमलजी ने धर्म-प्रचार के लिए भारत के अनेक नगरों और ग्रामों में विहार किया। उन्होंने प्रवचन, साधना-शिविर, अध्ययन-सत्र और धर्म-सभा के माध्यम से लोगों को संयम, करुणा, क्षमा और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनकी वाणी में गूढ़ता और करुणा का समन्वय था। वे कहते थे - 'मनुष्य का वास्तविक सौंदर्य उसके संयम में है और सच्चा वैभव उसकी आत्म-शुद्धि में।' उनके उपदेशों में किसी भी प्रकार का संकीर्णता या अंधविश्वास नहीं था। वे सभी मतों के प्रति सम्मान रखते और तर्क तथा विवेक के आधार पर जीवन-मार्ग सिखाते थे।

साहित्य-सेवा एवं ग्रंथ-रचना : मुनिश्री चौथमलजी महाराज न केवल वाचक थे, बल्कि रचनाकार भी थे। उनके प्रवचनों को बाद में उनके शिष्यों ने संकलित किया। उनके नाम से प्रकाशित प्रमुख ग्रंथ हैं :-

1. निर्ग्रंथ प्रवचन - यह उनके उपदेशों का संग्रह है जिसमें आत्म-विकास, संयम, तप और मोक्ष के गूढ़ सिद्धांतों की व्याख्या है।

2. दिवाकर दिव्य ज्योति - यह ग्रंथ उनके जीवन और शिक्षाओं पर आधारित है।

3. जम्बू स्वामी चरित - जिसमें अंतिम श्रुत-केवली जम्बूस्वामी के जीवन का सुंदर चित्रण है।

4. मांगलिक संग्रह - इसमें उनके मंगल-पाठ, आराधना-सूत्र और आशीर्वचन संकलित हैं।

उनके साहित्य में भाषा की सादगी और भावों की गहराई है। हर रचना आत्म-जागरण का आह्वान करती है।

समाज-सुधार एवं मानवता-संदेश: मुनिश्री चौथमलजी ने केवल धर्म-उपदेश तक ही अपने जीवन को सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज-सुधार को भी साधना का अंग बनाया। वे अंधविश्वास, जातिवाद और बाह्य आडंबरों के विरोधी थे। उन्होंने शिक्षा, नारी-सशक्तिकरण और सहिष्णुता का समर्थन किया। उन्होंने लोगों को सादगी, परस्पर प्रेम और सत्यनिष्ठा का जीवन जीने का उपदेश दिया।

उनका संदेश था : 'धर्म का अर्थ केवल पूजा नहीं, बल्कि दूसरों के प्रति संवेदना रखना ही सच्चा धर्म है।'

प्रमुख शिष्यों एवं गुरु-परंपरा : मुनिश्री चौथमलजी की दीक्षा-परंपरा श्री हीरालालजी महाराज से जुड़ी थी। वे जैन दिवाकर परंपरा के प्रमुख आचार्य माने जाते हैं। उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों को आगे बढ़ाया और जैन दिवाकर संघ की स्थापना की, जो आज भी उनके आदर्शों पर चलकर धर्म-कार्य कर रहा है।

महान व्यक्तित्व के गुण : मुनिश्री चौथमलजी महाराज के व्यक्तित्व में निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय थीं:-

1. गंभीरता एवं सरलता - वे गहन चिंतनशील थे, परंतु व्यवहार में अत्यंत सरल और सहज।

2. करुणा एवं विनम्रता - हर व्यक्ति से मधुरता और समानता का व्यवहार करते।

3. तप-शक्ति एवं आत्म-संयम - वे अत्यंत कठोर तपस्वी थे, जिन्होंने सुख-सुविधाओं को सदा त्यागा।

4. अभिव्यक्ति की शक्ति - उनकी वाणी में ऐसा चुंबकत्व था कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते।

5. अडिग विश्वास - वे हमेशा सत्य और धर्म पर अडिग रहे, चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों न रही हो।

अंतिम वर्ष और निर्वाण : दीर्घ तप-साधना और धर्म-प्रचार के पश्चात भी उन्होंने अपने अंतिम समय तक प्रवचन और ध्यान जारी रखा। उन्होंने शारीरिक दुर्बलता को कभी बाधा नहीं बनने दिया। मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी वि.सं. 2004 के दिन उन्होंने समाधिक मुद्रा में आत्म-ध्यान में लीन होकर निर्वाण प्राप्त किया। उनका अंतिम संदेश दिया : 'आत्मा ही परम देव है। उसे पहचानो, उसे निर्मल बनाओ, वही मोक्ष-मार्ग है।'

विरासत और प्रेरणा : मुनिश्री चौथमलजी महाराज की विरासत उनके उपदेशों से कहीं व्यापक है। उनके नाम से अनेक धार्मिक, सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाएँ स्थापित की हैं जैस :- जैन दिवाकर ट्रस्ट, शिक्षा-सहाय केंद्र, धर्म-ग्रंथालयें। हर वर्ष कार्तित शुक्ल त्रयोदशी (जन्म दिवस), फाल्गुन शुक्ल तृतीया (दीक्षा दिवस) और मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी (स्मृति दिवस) बड़े श्रद्धा और भावनाओं से मनाए जाते हैं। देश-भर में उनके अनुयायी 'दिवाकर-वाणी' का पाठ कर अपने जीवन को दिशा देते हैं।

उनके उपदेशों के अमर सूत्र : संयम ही जीवन की वास्तविक शोभा है।, अहिंसा केवल हिंसा-रहितता नहीं, बल्कि प्रेम की अभिव्यक्ति है।, जो स्वयं को जीत लेता है, वही सच्चा विजेता है।, धर्म वही है जो आत्मा को निर्मल बनाता है।, संसार का वैभव क्षणिक है, आत्मा का वैभव अनंत है।

❖❖

उनके दृष्टिकोण में पद पर नीचता न रहकर धर्म-संवाद की प्रधानता थी।

2. निष्कपट नेतृत्व : पद त्यागने का साहस, निर्लिप्त रहना, वक्रता से परे दृष्टिकोण - ये गुण उन्हें अन्य संतों से अलग करते हैं। उनके नेतृत्व में, भक्त और संघ ने 'सेवा भक्ति, अनुशासन, दार्शनिक विमर्श और उच्च नैतिक मूल्यों' को महत्व दिया।

3. शिक्षा एवं जनसाधारण पहुँच : आगम अनुवाद, सरल भाषा ग्रंथ, प्रवचन आदि के माध्यम से उन्होंने धर्मशास्त्रों को जैन समुदाय के सामान्य वर्गों तक पहुँचाया। इस दृष्टि से, वे शिक्षण एवं धर्मप्रचार के क्षेत्र में आधुनिक सन्तोत्कर्ष कहे जा सकते हैं।

4. मानवीय दृष्टिकोण : उनके उपदेशों में प्रेम, मधुरता, सहिष्णुता, विनय और आत्मशुद्धि की महत्ता थी। 'मीठा मिश्री' नाम इसी गुण का प्रतीक है - वे अपने वचन और व्यवहार में मधुरता बनाए रखते थे।

प्रेरणा एवं उत्कृष्टताएँ : उन्होंने दिखाया कि पद की लालसा न रखते हुए भी, व्यक्ति उच्चतम सेवा प्रदान कर सकता है। उनका जीवन बताता है कि साधना, संयम और अध्ययन यदि सुसंतुलित हों, तो व्यक्ति समाज एवं धर्म की दिशा बदल सकता है।

उनका व्यक्तित्व हमें सिखाता है कि सरलता, विनय और निष्कपटता ही सच्ची महानता की पहचान हैं। उन्होंने यह संदेश दिया कि धर्म उस समय प्रभासित होता है, जब वह जनता तक सरलता से पहुँचे - जटिलता नहीं।

आज का महत्व : आज भी उनका ऊँचा आदर्श जैन समाज में श्रद्धा का केंद्र है। उनके स्मृति दिवसों पर धर्मसभा और गुणगान समारोह आयोजित होते हैं।

वर्ष दर वर्ष उनके योगदानों का गुणगान किया जाता है और उनकी शिक्षाएँ अध्ययन का विषय बनती हैं। श्रमण संघ और स्थानकवासी जैन समाज उन मूल्यों को आज भी स्वीकार करता है, जिन्हें उन्होंने घोषित किया। इस प्रकार, उनकी विरासत केवल अतीत का नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक है। ❖❖

अमरत्व किसे मिला ?

मृत्यु से अमरता की ओर जाने का अर्थ है जन्म-मरण से मुक्त हो जाना। यह अभिलाषा रहती तो प्रत्येक प्राणी में है, हमारी और आपकी भी इच्छा यही है। पर केवल इच्छा मात्र से तो सिद्धि मिल नहीं सकती। व्यक्ति अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच जाना चाहता है, किन्तु चले एक कदम भी नहीं तो क्या वह अपने इच्छित स्थान पर पहुंच जाएगा? नहीं, उसे चलना तो पड़ेगा ही।

हम भी जन्म मरण की श्रृंखला को तोड़ना चाहते हैं पर मोह, ममता और आसक्ति को नहीं छोड़ सकते, त्याग और तपस्या के मार्ग पर नहीं बढ़ सकते। फिर आत्मा कल्याण कैसे होगा? हम भूल जाते हैं कि यह संसार असार है, सांसारिक सुख झूठे हैं इसमें दिखाई देने वाले सभी दृश्यमान पदार्थ नश्वर हैं और तो और, यह देह भी तो अपनी देह नहीं है, फिर भी कहते हैं यह मेरा यह मेरा है! यह इसी भावना को लेकर हम अपने कर्मों को नष्ट कर सकेंगे।

कहा है - 'भोले जीव! तू कहता है यह मेरा मकान है, मेरा बगीचा है, यह मेरे घोड़े की घुड़साल है तथा ये हाथी और बैल सभी मेरे हैं। मेरे अनेक भृत्य हैं और उन सबका स्वामी हूँ। किन्तु जब मृत्यु समीप आ जाएगी तब तेरा अपना क्या रहेगा? क्या इन वस्तुओं और प्राणियों में से कोई भी तेरा साथ देगा? नहीं, तेरे साथ रह सकेगा एक धर्म। वह भी तभी, जब कि जीवन में तू अर्जन करेगा। बाकी सब तो यहीं रह जाने वाला है, कुछ भी साथ नहीं जाएगा। उलटे, इन सब में रही हुई तेरी आसक्ति तुझे अधोगति की ओर ढकेल देगी।'

तो जब यह सब अर्थात् संसार के समस्त पदार्थ, सारे संबंधी और अपार धन-वैभव इस शरीर के नष्ट होते ही यहीं छूट जाने वाला है, हम क्यों न इन्हें पहले ही छोड़कर अपनी आत्मा को कर्म रहित बनाने का प्रयत्न करें ताकि यह इस देह रूपी पिंजरे से मुक्त होते ही अपने स्वाभानुसार ऊपर की ओर गमन करें, अपनी स्वाभाविक गति से विपरीत कर्म-भार के बोध से लदकर नीचे की ओर न जाए। ❖❖

95वीं जन्म जयंती विशेष

प्रज्ञा पुरुष - साहित्य दिवाकर आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.

- प्रशांत जैन 'गांधरा', मुख्य राष्ट्रीय समन्वयक-जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

जिस प्रकार सूर्य अपनी तेजस्विता से संपूर्ण सृष्टि को आलोकित करता है, उसी प्रकार श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर, आचार्य सम्राट् परम पूज्य गुरुदेव श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का साहित्यिक जीवन अनगिनत आत्माओं के लिए आत्मोत्थान का आलोक स्तम्भ बनकर जगमगाया है।

आपका समग्र जीवन इस सत्य का साक्षी है कि 'विचारों से ही समाज बदलता है और विचारों का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है -साहित्य।'

इतिहास साक्षी है कि जब-जब किसी समाज या राष्ट्र में चेतना का संचार हुआ, तब-तब उसके मूल में किसी साहित्यकार की लेखनी का तेज रहा। चाहे वह स्वतंत्रता का संग्राम रहा हो या सामाजिक चेतना की क्रांति कृ हर बार शब्दों ने ही जन-जन को जगाया है।

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज वह युगद्रष्टा साहित्यकार हैं, जिनकी लेखनी ने जैन दर्शन को आधुनिक चिंतन के साथ जोड़कर एक जीवंत दिशा दी। आपका साहित्य न केवल पठन योग्य है, अपितु आचरण योग्य भी है। उसमें निहित जीवन-दर्शन साधक को आत्मा के गूढ़ रहस्यों तक पहुँचाने की प्रेरणा देता है।

आपकी लेखनी के विविध आयामों में गद्य, पद्य, कथा, निबंध, उपन्यास, आगम-संपादन, अभिनंदन ग्रंथ, इतिहास-ग्रंथ, शोध-प्रबंध कृ सभी रूपों का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आपने माँ भारती की वाणी 'सरस्वती' को अपने जीवन से समृद्ध किया। लगभग चार सौ से अधिक ग्रंथों की रचना व संपादन कर आपने जैन साहित्य की उस अमूल्य निधि का निर्माण किया, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञानामृत बनकर सदियों तक प्रवाहित होती रहेगी।

आपका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही अप्रतिम थे। आपमें शिशु-सी सरलता, युवक-सा उत्साह, साधक-सी विनम्रता, ऋषि-सी दृष्टि और आचार्य-सा तेज समाहित था। आपकी आंखों में करुणा, वाणी में मधुरता और हृदय में सार्वभौमिक प्रेम का सागर लहराता था।

आप अध्यात्म जगत के 'अचल दीपस्तंभ' थे - स्थितप्रज्ञ, संयमी, मौलिक चिन्तक और अद्वितीय योगी। आपके साहित्य को पढ़कर विद्वान भी विस्मित रह जाते थे, क्योंकि उसमें केवल शब्द नहीं, बल्कि अनुभव का सौंदर्य और आत्मा की अनुभूति प्रवाहित होती थी।

श्रमण संघ के आचार्य पद पर आसीन होकर आपने संत परंपरा की गरिमा को और अधिक ऊँचाई प्रदान की। आपने संघीय एकता, अहिंसा, करुणा और पारस्परिक सद्भाव के सूत्र को दृढ़ता से पिरोया। जिसने भी आपके सान्निध्य में कुछ क्षण बिताए, उसने जीवन में शांति, सन्तोष और समता का अनुभव किया।

आपके मधुर संभाषण, शालीन व्यवहार और समभावपूर्ण दृष्टि ने जन-जन के हृदय को स्पर्श किया। आज, जब हम पूज्य आचार्यश्री की 95वीं जन्म जयंती (धनतेरस) के पावन अवसर पर स्मरण कर रहे हैं, तब मन श्रद्धा और भाव-विभोरता से भर उठता है।

आपके प्रति हमारी श्रद्धा, आस्था और विश्वास अटूट है हमारे लिए आप केवल एक आचार्य नहीं, बल्कि प्रेरणा-स्रोत, पथप्रदर्शक और प्रकाशस्तंभ हैं।

आपकी कृपादृष्टि संघ समाज और समस्त जैन जन पर सदैव बनी रहे - यही हमारी हृदय की प्रार्थना है।

आपका जीवन स्वयं में एक ग्रंथ है, एक ऐसा ग्रंथ जो पढ़ा नहीं जाता, जिया जाता है।

आपके चरणों में अनंत श्रद्धा, कोटि-कोटि वंदन एवं नमन।

❖❖

क्या आप सामाजिक जीवन में उन्नति के शिखर छूना चाहते हैं ?

- **शशिकान्त 'पिन्टू' कर्नावट जैन**-राष्ट्रीय अध्यक्ष-आत्म ध्यान योजना, मालेगांव (महाराष्ट्र)

उपरोक्त शीर्षक से मैं उन युवाओं से प्रश्न करना चाहता हूँ जो सामाजिक जीवन में उन्नति के शिखर छूना चाहते हैं। मेरा पहला प्रश्न है क्या आप वो ज्ञान रखते हैं जो समाज में सामान्य से अधिक होना चाहिए? यदि हाँ तो जान लीजिये कि इस कैलेण्डर वर्ष में आपको यह सिद्ध करना है कि आप अपने आप पर कितने प्रतिशत विश्वास रखते है। आपकी श्रद्धा स्वयं के प्रति कितनी है। क्योंकि यहां स्वयं के प्रति श्रद्धा आस्था से मेरा आशय है, आत्म-विश्वास, क्योंकि आत्म विश्वास के अभाव में व्यक्ति का भटकना निश्चित है, हताशा में भटकन होती है ! **अतः आचारवान बनकर आत्म विश्वासी भी बनें। आत्म विश्वास के बिना किसी भी प्रकार का ज्ञान होना असंभव है।**

पुरुषार्थी बनें दृढ़ संकल्पी बनें : अक्सर देखा गया है कि अच्छा भली मेहनती पुरुषार्थी व्यक्ति भी बीच में रूक जाता है यदि वह कष्ट सहिष्णु एवं साहसी नहीं होता। पुरुषार्थ की प्रदीप्त लौ असहिष्णुता एवं अविश्वास से आहत होकर बुझ जाती है। अनेक ऐसी हस्तियाँ हैं जिनमें साहस है, पुरुषार्थ है, काम करने की धुन है और समय भी है, पर सहिष्णुता एवं आत्म-विश्वास की कमीं के कारण उनके कार्य में अवरोध आ जाता है। ये चलते-चलते रूक जाते हैं। इसका परिणाम होता है असफलता, कुंठा और निराशा। इंसान अगर ये बातें सीख लें तो वह ऊंचे-ऊंचे लक्ष्य तक बहुत जल्दी व आराम से पहुंच सकता है। **आत्म-विश्वास, पुरुषार्थ और कष्ट सहिष्णुता का विकास करने के लिए प्रत्येक इंसान में नई आस्था का संचार होना जरूरी है।**

सामाजिक जीवन में साहसी पुरुषार्थी अवसर देखकर अवसर का लक्ष्य लेने वाले लोग आगे आ जाते हैं और अपनी हिम्मत, अपने साहस से सफलता कर लेते हैं। विचार कीजिये क्या आप ऐसे चतुर है, समय का महत्व समझने वाले है? यदि है तो आप अवश्य ही आगे बढ़ जाएंगे।

ईर्ष्या नहीं प्रतियोगिता में भाग लें : स्मरण रहे ! यदि आगे बढ़ना आपका लक्ष्य है तो ईर्ष्या नहीं प्रतियोगिता को चुनें। सफल लोगों से सीखे, अनुशरण करना बुरा नहीं है। क्योंकि केवल आप ही नहीं हर व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है। आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ, आत्म-विश्वास और सहिष्णुता जरूरी है। पुरुषार्थ में जिसका विश्वास होता है, वह कठिन काम करने में भी झिझकता नहीं। उन्नति के शिखर पर वहीं पहुंच सकता है, जो पुरुषार्थ में आस्था नहीं रखता, बल्कि उसे जीना भी जानता है। यही सोच सफल, संतुलित एवं सार्थक जीवन की सीढ़ी है। सफलता के रहस्य को केवल जानने भर से कुछ नहीं होगा, हमें उस पर काम भी करना पड़ेगा। इसी तरह केवल सोचते रहने या इच्छाएं होने से कुछ हाथ नहीं आता। हम यदि अपनी चाहतों को पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाना चाहते हैं तो हमें करा बहुत कुछ होता है, पर काम करते कुछ भी नहीं और औरों की सफलता से ईर्ष्या करते है तो हम अपना ही नुकसान कर रहे होते हैं।

याद यह भी रखना कि समाज चमत्कार को नमस्कार करता है, हम करने और करते जाने के विश्वासी हैं, तो मानकर चलें कि हम एक खुली प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे हैं और हमें हर हाल में जीतना है। अपनी मानसिकता सकारात्मक रख कर आगे बढ़े तो समाज भी आपका साथ देगा, अपना आचार, व्यवहार, आहार ठीक रखें तथा नकारात्मक विचार से अलग रहें यही सफलता की कुंजी है। अंत में भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। ❖❖

स्मृति दिवस पर विशेष...

मेवाड़ गौरव, प्रवर्तक पू. श्री अम्बालाल जी म. : एक आदर्श जीवन

- **नरेश लोढ़ा जैन**-राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, उदयपुर (राजस्थान)

भारत की आध्यात्मिक भूमि पर युग-युगांतर से अनेक महान संतों, आचार्यों और मुनियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने त्याग, तपस्या, और अहिंसा के मार्ग से मानवता को दिशा दी। इन्हीं विभूतियों में एक तेजस्वी नाम है जैन मुनि अंबालाल जी महाराज का, जिनका जीवन सत्य, संयम और समर्पण की मूर्ति रहा। उनकी पुण्य स्मृति में मनाया जाने वाला 'जैन मुनि अंबालाल जी स्मृति दिवस' न केवल उनके महान कार्यों को याद करने का अवसर है, बल्कि आत्ममंथन का भी दिन है - कि हम अपने जीवन में उनके उपदेशों को कितना आत्मसात कर पा रहे हैं।

जीवन परिचय : मुनि अंबालाल जी का जन्म एक धार्मिक और संस्कारवान परिवार में हुआ। बचपन से ही उनमें सत्य के प्रति आग्रह और अध्यात्म के प्रति झुकाव स्पष्ट दिखाई देता था। सांसारिक सुख-सुविधाओं के बीच भी उनका मन भौतिकता से विमुख होकर अध्यात्म की ओर आकर्षित रहा। युवावस्था में ही उन्होंने यह निर्णय ले लिया कि जीवन का सच्चा उद्देश्य भोग नहीं, बल्कि योग और आत्म-साक्षात्कार है। उन्होंने जैन साधना पथ को अपनाया और दीक्षा लेकर मुनि अंबालाल जी म.सा. बने। उनका जीवन तप, त्याग और साधना का पर्याय बन गया। वे दिन-रात आत्मविकास, प्राणीमात्र के कल्याण और समाज में शांति-संदेश फैलाने में लगे रहे।

आध्यात्मिक साधना और त्याग का आदर्श : मुनि अंबालाल जी म.सा. का जीवन सच्चे अर्थों में तपस्वी जीवन था। उन्होंने न केवल भौतिक वस्त्रों का परित्याग किया, बल्कि अहंकार, लोभ और क्रोध जैसे आंतरिक शत्रुओं को भी जीतने का प्रयास किया। उनकी साधना का केंद्र था - 'स्वयं को जानो और संसार को त्यागो'। मुनि श्री का मानना था कि सच्चा त्याग केवल वस्तुओं का नहीं, बल्कि वासनाओं और विकारों का होता है। वे कहा करते थे - 'जो स्वयं को जीत लेता है, वही संसार का विजेता होता है।'

उनके जीवन की कठोर तपस्या, उपवास, और ध्यान-प्रयोग केवल व्यक्तिगत मुक्ति के लिए नहीं थे, बल्कि समाज को यह दिखाने के लिए थे कि संयम और आत्मनियंत्रण से ही मनुष्य सच्चे सुख की प्राप्ति कर सकता है।

अहिंसा और करुणा का संदेश : जैन दर्शन का मूल तत्व है अहिंसा - विचार, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी को कष्ट न देना। मुनि अंबालाल जी म.सा. इस सिद्धांत के मूर्त रूप थे। उनके प्रवचनों में सदैव यह संदेश झलकता था कि हिंसा केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और वाणी की भी होती है। वे कहते थे - 'यदि तुम्हारे शब्द किसी के हृदय को चोट पहुँचाएँ, तो वह भी हिंसा है।'

उन्होंने अनेक जनसमूहों में यह शिक्षा दी कि करुणा, सहिष्णुता और क्षमा ही मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाती है। उनकी उपस्थिति में लोग अपने भीतर की कटुता और द्वेष को भूलकर शांति का अनुभव करते थे।

सामाजिक सुधार और मानवता की सेवा : मुनि श्री अंबालाल जी म.सा. ने न केवल धर्म के क्षेत्र में, बल्कि सामाजिक सुधारों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने जातिवाद, अंधविश्वास, और भेदभाव का विरोध किया और समाज को समानता की भावना से जोड़ने का प्रयास किया।

उनका कहना था - 'धर्म वह नहीं जो विभाजन करे, धर्म वह है जो सभी को एक सूत्र में बाँध दे।' उनके प्रवचनों में मानवता सर्वोपरि थी। वे हर व्यक्ति से आग्रह करते थे कि पहले मनुष्य बनो, फिर धार्मिक बनो। उन्होंने शिक्षा, स्वच्छता और नशामुक्ति जैसे अभियानों को भी धर्म से जोड़ा, जिससे समाज में व्यापक परिवर्तन आए।

साधुता और आधुनिकता का संगम : मुनि अंबालाल जी केवल पारंपरिक साधु नहीं थे, बल्कि आधुनिक चिंतन के भी समर्थक थे। वे समाज में विज्ञान और धर्म के संतुलन के पक्षधर थे। उनका मानना था कि विज्ञान हमें सुविधा देता है, जबकि धर्म हमें दिशा देता है।

उन्होंने युवाओं को प्रेरित किया कि वे तकनीकी युग में भी संयम, सत्य और करुणा के आदर्शों को न भूलें। उनका

जीवन इस बात का प्रमाण था कि साधुता किसी युग की मोहताज नहीं - यदि व्यक्ति ईमानदारी से साधना करे तो वह हर युग में आदर्श बन सकता है।

संघ निर्माण और अनुयायी समाज : मुनि अंबालाल जी म.सा. ने अपने जीवनकाल में अनेक शिष्यों को दीक्षा दी और कई लोगों को धर्ममार्ग पर अग्रसर किया। उनके अनुयायी आज भी देश के विभिन्न भागों में अहिंसा, सत्य और आत्मसंयम का संदेश प्रसारित कर रहे हैं। उन्होंने जो संघ की नींव रखी, वह आज भी समाज में शांति और सद्भाव का आधार बना हुआ है। उनकी प्रेरणा से स्थापित धर्मसभा और साधना केंद्र आज हजारों लोगों के जीवन को दिशा दे रहे हैं।

साहित्यिक और आध्यात्मिक योगदान : मुनि अंबालाल जी म.सा. एक उत्कृष्ट प्रवचनकार ही नहीं, बल्कि साहित्य प्रेमी और दार्शनिक विचारक भी थे। उन्होंने अपने उपदेशों और लेखों में जैन दर्शन को सरल भाषा में जन-जन तक पहुँचाया। उनकी वाणी में ओज और करुणा दोनों का संगम था। उनके शब्द केवल ज्ञान नहीं देते थे, बल्कि आत्मा को झकझोरते थे। उनके द्वारा दिए गए सूत्र आज भी प्रेरणास्रोत हैं, जैसे :-

धर्म दूसरों पर थोपना नहीं, स्वयं में उतारना है।

संयम से बड़ा कोई सुख नहीं।

जो दूसरों में दोष देखता है, वह स्वयं के गुण खो देता है।

मुनि श्री का अंतिम समय और विरासत : जीवन भर दूसरों को सत्य, करुणा और अहिंसा का संदेश देने वाले मुनि अंबालाल जी म.सा. ने अपने अंतिम क्षणों में भी शांति और समता का परिचय दिया। उन्होंने मृत्यु को मोक्ष के द्वार के रूप में स्वीकार किया। उनके महाप्रयाण के समय वातावरण में एक अद्भुत शांति छा गई थी - मानो स्वयं प्रकृति भी उन्हें प्रणाम कर रही हो।

उनकी विरासत आज भी जीवित है - उनके अनुयायियों, उनके प्रवचनों और उनके द्वारा स्थापित संस्थानों के रूप में। हर वर्ष मुनि श्री अंबालाल जी म.सा. स्मृति दिवस पर श्रद्धालु उन्हें स्मरण करते हैं, उनके उपदेशों पर मनन करते हैं और अपने जीवन में संयम, क्षमा और करुणा का पालन करने का संकल्प लेते हैं।

स्मृति दिवस का महत्व : मुनि श्री अंबालाल जी म.सा. स्मृति दिवस केवल श्रद्धांजलि का अवसर नहीं है, बल्कि यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि धर्म केवल पूजा-पाठ में नहीं, बल्कि व्यवहार में है। इस दिन देशभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं - प्रवचन, ध्यान-शिविर, रक्तदान शिविर, पर्यावरण अभियान और प्राणीमात्र की सेवा के कार्य। इन सभी का उद्देश्य एक ही है - मुनि श्री के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना।

आज के युग में मुनि श्री अंबालाल जी म.सा. की प्रासंगिकता जब समाज भौतिकता, तनाव और प्रतिस्पर्धा में उलझा हुआ है, ऐसे समय में मुनि श्री अंबालाल जी म.सा. के उपदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं।

उन्होंने जो रास्ता दिखाया - सादा जीवन, उच्च विचार, करुणा और क्षमा - वही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि हम उनके आदर्शों का पालन करें, तो परिवारों में शांति, समाज में सौहार्द और राष्ट्र में एकता स्थापित हो सकती है। ❖❖

मनुष्यत्व की महत्ता

मानव जीवन को उन्नत बनाने का प्रथम साधन है मनुष्यता की प्राप्ति करना। दूसरे शब्दों में उन्नति के शिखर पर पहुंचने के लिए मनुष्यता प्रथम चरण है। मनुष्य और मनुष्यता शब्दों के उच्चारण में विशेष अन्तर नहीं है, किन्तु उसके अर्थ में जमीन-आसमान का अन्तर है। इसीलिए सभी भाषाओं में मनुष्य के लिए मनुष्यता का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाता है। हिन्दी में हम मनुष्यता कहते हैं, उर्दू में इन्सानियत, गुजराती में माणसाई और मराठी भाषा में इसे माणुसकी कहा जाता है। इस मनुष्य में मनुष्यत्व नहीं है, आ माणस भी माणसाई नथी, या इस इंसान में इंसानियत नहीं है, ये सभी वाक्य एक ही अर्थ को प्रगट करते हैं।

स्मृति दिवस पर विशेष...

पूज्य श्री मधुकर मुनि जी महाराज साहब : एक अद्वितीय प्रतिभा के धनी

- **कमला सज्जनराज मेहता जैन**-पूर्व राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा-जैन कॉन्फ्रेंस, चेन्नई (तमिलनाडु)

भारतीय धार्मिक एवं दार्शनिक परंपरा में साधु-संतों का जीवन न केवल आत्मानुशासन का उदाहरण होता है, बल्कि वे समाज को मूल्य, आदर्श और नैतिक मार्गदर्शन भी देते हैं। जैन धर्म की श्रमण संघीय परंपरा में ऐसी कई विभूतियाँ हुई, जिन्होंने आत्मसंयम, लेखन, उपदेश और संप्रदाय की एकता के कार्यों से महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनमें से एक नाम है - युवाचार्य मिश्रीमल 'मधुकर' मुनि। उनके व्यक्तित्व में सरलता, मधुरता, असुरक्षा से भटके बिना ज्ञानाभिरुचि आदि विशेषताएँ विद्यमान थीं।

जन्म, परिवार एवं प्रारंभिक जीवन : संत श्री मिश्रीमल जी म.सा. 'मधुकर' का जन्म वि.स. 1970 मार्गशीर्ष शुक्ल 14 (संकेततः 12 दिसंबर 1913) को तिंवरी ग्राम, जोधपुर (राजस्थान) के समीप हुआ था।

पारिवारिक पृष्ठभूमि : उनके पिता का नाम जमनालाल जी धारीवाल (कोठारी) था और माता का नाम तुलसाबाई। बहुत कम आयु में ही उनका पिता देवलोक सिधार गया, जिससे उन्होंने बाल्यकाल से ही कठिन परिस्थितियों का सामना किया।

धार्मिक अभिरुचि का प्रारंभ : बचपन से उनमें धर्म, गुरुओं के प्रति श्रद्धा और साधना की प्रवृत्ति थी। एक प्रसंग वर्णित है कि जब अन्य बच्चे खेलते थे, तब वो मिट्टी का चबूतरा बनाकर बच्चों को 'व्याख्यान' सुनाते थे - इस प्रकार उन्होंने बचपन में ही नेतृत्व और उपदेशात्मक स्थिति ग्रहण की थी।

माता तुलसा जी ने जब उनके धार्मिक प्रकाश को देखा, तो उन्होंने तीर्थंकरों से आग्रह किया कि छोटे मिश्रीमल को दीक्षा दें। परिवार में विरोध और विघ्न उत्पन्न हुए - मामला न्यायालय तक पहुँच गया। अंततः एक मजिस्ट्रेट ने बालक की सत्यनिष्ठा देख कर दीक्षा की अनुमति दी। इन प्रारंभिक प्रसंगों से यह स्पष्ट होता है कि मिश्रीमल जी का जीवन ही साधना-उन्मुख था और बाह्य परिस्थितियाँ उन्हें विचलित न कर सकीं।

दीक्षा एवं अध्ययन : वि.स. 1980 वैशाख शुक्ल 10 (26 अप्रैल 1923) को अजमेर के भिणाय ग्राम में उन्होंने स्वामी श्री जोरावरमल जी म.सा. के पास दीक्षा ग्रहण की। इस अवसर पर दीक्षा की समृद्धि में लोगों ने हर्ष व्यक्त किया। उनके दीक्षा नामकरण के बाद, उनकी माता तुलसा जी ने भी दीक्षा ली।

संयम आरंभ और अध्ययन : दीक्षा के बाद उन्होंने मौन व्रत धारण किया और संस्कृत, प्राकृत, व्याकरण, जैन आगम, न्याय, दर्शन आदि विषयों का गहन अध्ययन प्रारंभ किया। लगभग 20–22 वर्षों तक उन्होंने मौन व्रति जीवन अपनाया और साधना में एकाग्रता रखी। अध्ययन काल में उनके गुरु भ्राता स्वामी हजारीमल जी तथा स्वामी ब्रजलाल जी ने मार्गदर्शन दिया।

उपाधियाँ एवं सम्मान : समय के साथ उन्होंने विद्वता, बहुश्रुतता, ज्ञान, आगम मनीषी आदि गुणों में प्रतिष्ठा प्राप्त की और अनेक उपाधियों से विभूषित हुए। इस प्रकार, दीक्षा के बाद उन्होंने साधना और अध्ययन में अत्यंत निष्ठा और अनुशासन अपनाया और धर्म एवं विद्या दोनों में अपनी छाप छोड़ी।

पदारोहण, त्याग एवं संघ-कार्य : आचार्य पदारोहण (जयगच्छ आचार्य): वि.स. 2004 वैशाख कृष्ण 2 को नागौर में उन्हें जयमल गच्छ के नवमें आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इस अवसर पर उनका नाम मिश्रीमल से यशवंतमल कर दिया गया (जिसका अर्थ 'यश का स्वामी')।

आचार्य पद का त्याग : पद ग्रहण के पश्चात, उन्हें मानवीय और आध्यात्मिक द्वन्द्वों का सामना करना पड़ा। पद और प्रतिष्ठा के मोह से दूर रहते हुए उन्होंने आचार्य पद त्याग करने का निर्णय लिया। उनका कथन था कि 'मैं अनुशासन में रह सकता हूँ, पर किसी को अनुशासन में रखना मेरी आदत नहीं है।' इस पदत्याग ने स्थानकवासी समाज में एक क्रांतिकारी चेतना को जन्म दिया। पद की भूमिका को पीछे रखते हुए संघ की एकता और साधु समुदाय

की निर्लिप्तता को प्राथमिकता देना।

युवाचार्य पद एवं श्रमण संघीय भूमिका : वि.स. 2036 (25 जुलाई 1979) को श्रवण शुक्ला 1 तिथि को हैदराबाद में आचार्य सम्राट आनंदऋषि जी म.सा. की प्रेरणा एवं समर्थ द्वारा उन्हें श्रमण संघ का प्रथम युवाचार्य घोषित किया गया।

इसके बाद, वि.स. 2037 चैत्र शुक्ल 10 को जोधपुर में उन्हें युवाचार्य चादर धारण करने का अवसर मिला। श्रमण संघ में उनकी इस भूमिका ने विभिन्न संप्रदायों को मिलाकर संघ एकीकरण के मार्ग प्रशस्त किए। उनके उच्च नैतिक व्यक्तित्व और निष्कपट दृष्टिकोण ने संघीय स्थायित्व की नींव रखी। इस प्रकार, पदारोहण और त्याग दोनों ही उन्होंने स्वीकृति एवं विरोध की स्थितियों में समझदारी के साथ निभाया और श्रमण संघ की सेवा को सर्वोपरि रखा।

साहित्यिक एवं आध्यात्मिक योगदान : युवाचार्य मधुकर मुनि का सबसे महत्वपूर्ण योगदान आगम अनुवाद और संपादन, उपदेश, कथाएँ, उपन्यास और साधना-सूत्र की रचना रहा है।

आगम अनुवाद एवं संपादन : उन्होंने कुल 32 आगमों का हिंदी अनुवाद एवं संपादन किया। इस कार्य की महत्ता इसलिए बढ़ जाती है क्योंकि आगम ग्रंथों को समझने और जन-जन तक पहुँचाने के लिए यह अनुवाद और विवेचन अनिवार्य हैं। उनकी अनुवाद शैली सरल, स्पष्ट एवं जनसाधारण भाषा से जुड़ी रही, जिससे आम पाठकों तक भी जटिल धार्मिक दृष्टांतों का अर्थ पहुँच पाया। उनके देहावसान के बाद, उनमें से 16 आगमों का प्रकाशन उनकी शिष्या श्री उमराव कुँवर जी (अर्चना) ने सम्पूर्ण पुरुषार्थ से पूरा किया। इस प्रकाशन अभियान से जैन समाज को अगाध सामग्री मिली और धर्मशास्त्र की पहुँच विस्तृत हुई।

उपदेश, कथा एवं अन्य लेखन : उन्होंने प्रवचन, धर्मसभा भाषण, कथा साहित्य, उपन्यास आदि अनेक ग्रंथ लिखे। उनकी कथामाला कुल 51 भागों की थी, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में सराहा गया। अन्य प्रकाशन में 'साधना के सूत्र', 'अम्रत्व की ओर', 'पर्युषण प्रवचन', 'तीर्थंकर महावीर' आदि विषय शामिल थे।

उनकी लेखनी न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समृद्ध है, बल्कि सामाजिक और दार्शनिक विषयों को भी स्पर्श करती है। उनके प्रवचनों व उपदेशों में मधुरता, सरलता, विनम्रता प्रमुख रूप से झलकती है। उन्हें 'मीठा मिश्री' की उपाधि इसी मधुर वाणी और सद्व्यवहार से मिली।

साधना-सिद्धांत एवं जीवनदर्शन : युवाचार्य मधुकर मुनि का व्यक्तित्व निर्लिप्तता, वक्रता से परहेज, सहजता, आत्मसंयम आदि गुणों का संगम था। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति रही - मैं अनुशासन में रह सकता हूँ, पर किसी को अनुशासन में रखना मेरी आदत नहीं है।'

उन्होंने अपने जीवन को पद और प्रतिष्ठा से ऊपर रखा। पद का मोह न रखते हुए, उन्होंने साधना और संघ-एकता को अधिक महत्व दिया। उनका सिद्धांत था कि धार्मिक संदेश और मूल्य जनता तक पहुँचने चाहिए इसलिए उन्होंने ग्रंथों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया। उन्होंने संघ-समुदाय में राजनीति का हस्तक्षेप न होने का लोक आदेश दिया। उनका मत था कि संघ को संतों के चरणों में रहना चाहिए, न कि राजनीतिक विचारों से प्रभावित होना चाहिए। इन साहित्यिक एवं आध्यात्मिक योगदानों की दृष्टि से, उनका कृतित्व न केवल जैन धर्म हेतु रहा, बल्कि व्यापक सामाजिक-मानवीय विमर्श को भी इंगित करता है।

देवलोकगमन एवं अंतिम संस्कार : वि.स. 2040 मार्गशीर्ष कृष्ण 7, दिनांक 26 नवंबर 1983 को नासिक (महाराष्ट्र) में उनका अचानक देवलोकगमन हुआ। उस समय वे चातुर्मास पूरा कर लौट रहे थे। अपने देहावसान के समय उन्होंने वह चादर, जो उन्हें आचार्य पद से दी गई थी, आचार्य भगवंत के चरणों में समर्पित कर दी। उनके प्रस्थान से न सिर्फ श्रमण संघ, बल्कि सम्पूर्ण जैन समाज में एक बड़ी रिक्तता उत्पन्न हुई। कहा जाता है कि उनकी छाया आज भी उनकी शिक्षाओं, ग्रंथों और अनुयायियों में जीवित है। उनका दिव्य प्रस्थान, अनुयायियों के लिए दुःखद था, लेकिन उनकी विरासत आज भी प्रेरणा देती है।

महत्व, प्रेरणा एवं विरासत : 1. संघ एकता व दृष्टिकोण सुधार- युवाचार्य मधुकर की भूमिका संघ एकीकरण एवं विभिन्न संप्रदायों को एक सूत्र में बाँधने में निर्णायक रही।

क्या आप चुनौतियों से लड़ने को तैयार हैं?

- **अंकुर जैन**-राष्ट्रीय युवा चेयरमैन-जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

इस दुनिया में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति है जो जिसके मन में शिखर पर पहुँचने की इच्छा न होती हो। हर व्यक्ति का मन होता है कि वह जिस क्षेत्र में रूचि रखता है, उसके प्रमुख पद पर हो। चाहे वह किसी राजनैतिक पार्टी का प्रमुख होना हो, किसी बड़ी कम्पनी का नेतृत्व करना, टीम का अग्रणी बनना, या समाज का नेतृत्व करना हो, सभी को अच्छा लगता है। लेकिन नेतृत्व की दमदार कला कैसे आती है? कैसे कुछ लोग बड़ी चुनौतियों को झेलते हुए बड़े से बड़े संगठन या कम्पनी का नेतृत्व आसानी से करते हैं? अगुवा में क्या-क्या गुण होते हैं, जो उसे औरों से अलग बनाते हैं? इस बात को प्रसिद्ध लेखक प्रकाश अय्यर ने अपनी पुस्तक **'नेतृत्व के गुर'** नामक पुस्तक में ऐसे ही अनेक सवालों का उत्तर दिया है जो यह बताती है कि कैसे कुछ लोग अपनी कड़ी मेहनत और लगन के साथ कहाँ से कहाँ पहुँच गये?

'थॉमस जे. वाटसन' ने अपनी एक पुस्तक के एक अध्याय में एक सलाह दी थी जो आज भी उतनी ही हृदय को छूती है, जितनी उस समय लोगों को छुई थी। वॉटसन ने अपने उपाध्यक्ष को मूल्यवान सलाह देते हुए कहा था कि - **'अगर आप सफल होना चाहते हैं तो अपनी हार की दर को दुगुना कर दें, क्योंकि असफलता हमारे लिए मूल्यवान सीख लेकर आती है, लेकिन तभी जब हम सीखने के लिए पूरे मन से तैयार हों।'**

आज के दौर में कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो कार्यक्षेत्र में आने वाली कुछ ही समस्याओं से इतना परेशान हो जाते हैं कि उसके प्रति नकारात्मक सोच उत्पन्न कर लेते हैं और उस कार्य को छोड़ देते हैं। जिसका परिणाम होता है कि वे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते और पूरे जीवन मन मसोस कर अपने भाग्य को ही कोसते रहते हैं। ऐसे लोगों को थॉमस अल्वा एडिसन के एक प्रसंग से सीख लेनी चाहिए। थॉमस अल्वा एडिसन बल्ब के आविष्कार के लिए रात-दिन जागा करते थे। थॉमस इसी कार्य को पूरा करने के लिए पाँच-सौ बार प्रयोग कर चुके थे, लेकिन इसके बाद भी वह असफल साबित हुए। इसी समय एक पत्रकार ने उनका साक्षात्कार किया और पूछा - 'पाँच-सौ बार असफल होने पर कैसा महसूस होता है? आप हार क्यों नहीं मान लेते?' एडिसन ने पलटकर जवाब दिया - 'कभी नहीं, मैं पाँच-सौ बार असफल नहीं हुआ हूँ। मैंने तो सिर्फ उन पाँच-सौ तरीकों की खोज की है, जो कारगर नहीं हैं। मैं उस तरीके के बहुत ही करीब हूँ, जो कारगर साबित होगा।' हुआ भी ऐसा ही। एडिसन के तंतुयुक्त लाइट बल्ब के आविष्कार ने दुनिया को बदल दिया।

ऐसी ही एक और प्रेरणादायी का जिक्र भी आता है कि 500 रूपये का एक नोट और उसकी दो सीखों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि एक गुरु ने 500 रुपये का एक नोट निकालकर सभा में ऊपर उठाते हुए प्रश्न किया कि - **'इसकी कीमत क्या है?'** उत्तर आया - **'पाँच-सौ रुपये।'** वक्ता ने फिर उसी नोट को मोड़कर एक गेंद का आकार देकर पूछा कि - **'अब इसकी कीमत क्या है?'** आवाज आयी - **'पाँच-सौ रुपये।'** फिर उन्होनें उसी नोट को जमीन पर फेंका और उसे पैरों से कुचलने के बाद फिर भीड़ से पूछा - **'अब इसका मूल्य क्या है?'** फिर एक ही स्वर से आवाज आयी - **'पाँच-सौ रुपये।'** यहीं पर गुरु ने एक प्रेरक बात कही कि - 'नोट को किसी ने मरोड़ दिया, कुचल दिया लेकिन नोट का मूल्य नहीं घटा। हम सभी को भी ऐसे ही पाँच-सौ रुपये के नोट जैसा होना चाहिए। हमारे जीवन में अनेक बार ऐसे समय आते हैं, जब हम कुचले हुए, पिटे हुए या लाचार महसूस करते हैं, लेकिन इन सबके बाद भी हमें अपने मूल्य को, अपनी कद्र को खत्म नहीं होने देना चाहिए।

सफलता के लिए सदैव याद रखें! जब आप अपने लक्ष्यों, अपने सपनों और अपनी महत्वाकांक्षाओं के पीछे भाग रहे होते हैं तो ऐसे लोगों की उपेक्षा करें, जो आपसे कहते हैं कि यह नहीं हो सकता है। आलोचकों और प्रतिवाद करने वालों की बातों को अनसुना कर दें और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें। अपने सपनों का पीछा करें। हार मान लेना आसान है क्योंकि अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है।' ❖❖

एकता, आध्यात्मिकता और मानवता का संदेश देने वाला पर्व : दीपावली

- **अनामिका कुलदीप तलेसरा जैन**-राष्ट्रीय महिला चेयरमैन-जैन कॉन्फ्रेंस, सूरत (गुजरात)

दीपों से जगमगाता भारत : दीपावली सिर्फ एक पर्व नहीं, बल्कि एक अनुभूति है जो हर भारतीय के हृदय में प्रकाश का दीप जलाती है।, भारत विविधता की भूमि है जहाँ हर धर्म, हर संस्कृति अपने रंगों से इस मिट्टी को सजाती है और जब इस विविधता के बीच दीपों का महासागर जगमगाता है, तो वह क्षण होता है दीपावली का।

जैन धर्म में दीपावली का विशेष महत्व है, किंतु इसका अर्थ और उद्देश्य भिन्न है। जहाँ हिंदू धर्म में दीपावली भगवान श्रीराम के अयोध्या लौटने की खुशी में मनाई जाती है, वहीं जैन धर्म में यह मोक्ष और आत्मा के उजाले का प्रतीक है।

महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस : जैन परंपरा के अनुसार, दीपावली का दिन अत्यंत पवित्र इसलिए माना जाता है क्योंकि इसी दिन भगवान महावीर स्वामी ने निर्वाण अर्थात मोक्ष प्राप्त किया था। इ.स. पूर्व 527 में, कार्तिक मास की अमावस्या की रात को महावीर स्वामी ने बिहार के पावापुरी में अपना देह त्याग किया और अनंत आनंद की अवस्था को प्राप्त हुए। उनकी आत्मा ने जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाई और उस क्षण को उनके अनुयायियों ने दीप जलाकर अमर बना दिया। ये दीप उस आध्यात्मिक प्रकाश के प्रतीक थे जो महावीर स्वामी ने संसार को दिया - अज्ञान के अंधकार में ज्ञान का दीपक जलाने का संदेश।

धर्म, तप और आत्मस्मरण का पर्व : जैन धर्म में दिपावली भोग-विलास का नहीं, बल्कि आत्म-स्मरण और साधना का पर्व है। इस दिन जैन अनुयायी अपने मंदिरों में विशेष आराधना करते हैं, पाठ, ध्यान और तप में लीन रहते हैं। कई लोग इस दिन उत्तम तप करते हैं, प्रतिक्रमण करते हैं (अपने पापों का प्रायश्चित) और दान व पुण्य के कार्यों में संलग्न रहते हैं। इस दिन लक्ष्मी पूजा नहीं होती, बल्कि ज्ञानदीपक जलाया जाता है - जो यह दर्शाता है कि सच्चा प्रकाश बाहर के दीपों से नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर से आता है। दीपों की यह ज्योति व्यक्ति को स्मरण कराती है कि 'मोक्ष का मार्ग आत्मज्ञान से ही संभव है।'

दीपावली का जैन दर्शन : जैन दर्शन के अनुसार, संसार का सारा दुःख और बंधन अज्ञान से उत्पन्न होता है। जब मनुष्य अपने भीतर के सत्य को पहचानता है, तो वही उसका प्रकाश बन जाता है। इसीलिए जैन अनुयायी दीपावली को 'आत्मज्योति जागरण दिवस' के रूप में भी मनाते हैं।

इस दिन वे महावीर स्वामी के उपदेशों - 'अहिंसा परम धर्म है' और 'जीयो और जीने दो' - को याद करते हैं। वे यह संकल्प लेते हैं कि वे अपनी जीवन यात्रा में क्रोध, लोभ, हिंसा और मोह जैसे अंधकार को दूर कर, आत्मा के प्रकाश की ओर अग्रसर होंगे।

दान और करुणा का संदेश : जैन समाज दीपावली के अवसर पर दान-पुण्य के कार्यों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेता है। वे गरीबों की सहायता करते हैं, अस्पतालों, गौशालाओं और विद्यालयों में दान देते हैं। उनके लिए यह दिन केवल त्योहार नहीं, बल्कि सेवा और करुणा का अवसर है। इस दिन वे मांस, मद्य या किसी प्रकार की हिंसा से दूर रहते हैं।

जैन धर्म का यह सादगीपूर्ण उत्सव हमें सिखाता है कि वास्तविक आनंद भोग में नहीं, बल्कि त्याग और आत्म-संयम में है। इस प्रकार, जैन धर्म में दीपावली केवल दीपों की रोशनी का नहीं, बल्कि आत्मा के आलोक का पर्व है। यह हमें सिखाती है कि जैसे दीप अंधकार मिटाता है, वैसे ही ज्ञान और सत्य का दीप भीतर के भ्रम और अज्ञान को मिटा सकता है।

हिंदू धर्म में दीपावली : भगवान के लौटने का प्रकाश हिंदू धर्म में दीपावली का अर्थ है अर्थात् अंधकार पर प्रकाश की विजय। कथाओं के अनुसार, जब भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास पूरा कर अयोध्या लौटे, तब नगरवासियों ने उनके स्वागत में दीप प्रज्वलित किए। उन दीपों ने केवल घरों को नहीं, बल्कि जन-जन के हृदय को भी आलोकित कर दिया।

पाँच दिवसीय उत्सव : दीपावली सिर्फ एक दिन नहीं,

बल्कि पाँच दिवसीय पर्व श्रृंखला है।

1. धनतेरस - आरोग्य और संपन्नता की देवी लक्ष्मी व धनवंतरि देव की पूजा।

2. नरक चतुर्दशी (छोटी दिवाली) - नकारात्मकता पर विजय का प्रतीक।

3. मुख्य दिवाली दिवस - लक्ष्मी-गणेश पूजन, दीपदान, मिठाइयाँ और उत्साह का चरम।

4. गोवर्धन पूजा - भगवान कृष्ण के गोवर्धन पर्वत उठाने की कथा का स्मरण।

5. भाई दूज - भाई-बहन के स्नेह का पवित्र बंधन।

पूजन और परंपराएँ : घर-घर दीपों की पंक्तियाँ सजती हैं, लक्ष्मी-गणेश की आरती होती है, परिवार एक साथ बैठकर मिठाइयाँ बाँटते हैं। व्यापारी वर्ग इस दिन नए खातों की शुरुआत करता है, इसे 'मुहूर्त ट्रेडिंग' कहा जाता है।

सिख धर्म में दिवाली : बंदी छोड़ दिवस की कहानी। सिख धर्म में दिवाली का दिन 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इतिहास के पन्नों में लिखा है कि गुरु हरगोबिंद साहिब जी को मुगल बादशाह जहाँगीर ने कैद कर लिया था। परंतु जब वे रिहा हुए, तो उन्होंने 52 राजाओं को भी साथ मुक्त कराया। अमृतसर लौटने पर स्वर्ण मंदिर को दीपों से सजाया गया और तभी से यह दिन सिख इतिहास में अमर हो गया।

सेवा और भक्ति का उत्सव : आज भी स्वर्ण मंदिर में लाखों दीप जलाए जाते हैं। कीर्तन, अरदास और विशाल लंगर का आयोजन होता है। सिख समाज के लिए यह दिन केवल उत्सव नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, त्याग और सेवा का प्रतीक है। यह दीपक सिखाता है - स्वतंत्रता का प्रकाश सबसे उज्ज्वल होता है।

बौद्ध धर्म में दीपावली : बौद्ध धर्म में दिवाली को दीपदान पर्व के रूप में देखा जाता है। कुछ बौद्ध परंपराओं के अनुसार, इस समय सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था और हिंसा का मार्ग त्याग दिया था। इस दिन बुद्ध के अनुयायी ध्यान करते हैं, बुद्ध वचन का पाठ करते हैं और दीपदान करते हैं - जो करुणा और प्रबुद्धता का प्रतीक है। बौद्ध दृष्टिकोण में दीप यहाँ 'माइंडफुलनेस' या सचेतना का प्रतीक है। बौद्ध मत कहता है कि जब हम अपने भीतर के अंधकार को पहचानते हैं और करुणा का दीप जलाते हैं, तभी सच्ची दीपावली होती है।

सौहार्द की मिसाल : भारत में दीपावली केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक एकता का उत्सव है। मुस्लिम और ईसाई समुदाय के लोग भी अपने मित्रों के साथ दीपावली मनाते हैं। वे मोमबत्तियाँ जलाते हैं, मिठाइयाँ बाँटते हैं और इस दिन को आपसी भाईचारे का प्रतीक मानते हैं।

कुछ पारसी और यहूदी परिवार भी इस दिन घर सजाते हैं, जरूरतमंदों की मदद करते हैं - क्योंकि उनके लिए भी यह दिन नए आरंभ और शुभता का प्रतीक बन गया है।

वास्तव में, दीपावली वह अवसर है जब धर्म सीमाएँ नहीं बनाते - दिलों को जोड़ते हैं।

दुनिया में फैलता भारतीय प्रकाश : दीपावली केवल भारत की नहीं रही। अमेरिका के व्हाइट हाउस से लेकर लंदन के ट्राफलगर स्क्वायर, सिंगापुर की गलियों से लेकर फिजी के समुद्र तट तक - हर जगह दीपावली का उजाला फैल चुका है। विभिन्न देशों में इसे 'Festival of Lights and Harmony' कहा जाता है। यह विश्व को सिखाती है कि जहाँ प्रकाश है, वहाँ प्रेम है, जहाँ प्रेम है, वहाँ ईश्वर है।

समान सूत्र : सबका संदेश एक हिंदू, जैन, सिख या बौद्ध - हर धर्म इसे अपने ढंग से मनाता है, पर संदेश एक ही है - 'अंधकार से प्रकाश की ओर।'

जैन धर्म कहता है - आत्मा का दीप जलाओ।
हिंदू धर्म कहता है - प्रेम और धर्म का प्रकाश फैलाओ।
सिख धर्म कहता है - सेवा और स्वतंत्रता का दीप जलाओ।
बौद्ध धर्म कहता है - करुणा और ज्ञान का दीप जलाओ।
और सभी मिलकर कहते हैं - जहाँ दीप है, वहाँ आशा है।

दीपावली हमें याद दिलाती है कि सच्चा प्रकाश वही है जो हृदय के अंधकार को मिटा दे। तो आइए, इस बार केवल घर नहीं, बल्कि मन को भी प्रकाशमान करें-जहाँ दीप हो, वहाँ प्रेम हो, जहाँ प्रेम हो, वहाँ दीपावली हर दिन हो।

❖❖

स्मृति दिवस पर विशेष...

संयम और समय के प्रहरी उपाध्याय श्री मूलमुनि जी म.सा.

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

श्रमण संघीय उपाध्याय श्री मूलमुनि जी म.सा. का जन्म वि.सं. 1980 के मार्गशीर्ष माह में पाली (राजस्थान) में हुआ। जब उनकी उम्र मात्र नौ वर्ष की थी, तब थोड़े-थोड़े अन्तराल में उनकी माँ सुश्राविका निखीबाई गादिया तथा भाई-बहन का देहान्त हो गया। उसके तीन वर्ष बाद ही यानी जब उनकी उम्र मात्र बारह वर्ष की थी तब उनके पिता श्री बस्तीमलजी गादिया भी चल बसे। मासूम बचपन ने इन वज्रपातों को कैसे सहा होगा, इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

गुरुकुल में शिक्षण के दौरान श्री जवाहराचार्य के शिष्य मुनि श्री कन्हैयालालजी के व्याख्यान में जैन दिवाकर रचित जम्बूकुमार चरित्र सुना तो उन्हें सांसारिक भोगों से विरक्ति हो गई। उसके बाद प्रवर्तक मुनि श्री वृद्धिचंदजी म.सा. का बाल मुनियों के प्रति अगाध वात्सल्य देखकर संयम-जीवन के प्रति अनुरक्ति और बढ़ गई। मात्र 17 वर्ष की तरुणाई में बीसवीं शताब्दी के महान प्रभावक श्रमणवर जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज से उन्होंने फाल्गुन कृष्ण 5, वि.सं. 1997 में समदड़ी में दीक्षा अंगीकार कर ली। उन्हें एक दशक तक श्री जैन दिवाकरजी के पावन सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिला।

उपाध्यायश्री ने दीक्षा के बाद हर रविवार आयंबिल तप की आराधना शुरू कर दी। लगभग आठ दशक से उनकी यह साप्ताहिक मंगल तप आराधना अनवरत रूप से गतिमान है। इसे वर्तमान समय में एक कीर्तिमान कहा जा सकता है।

श्री मूलमुनिजी चौदह वर्षों तक ज्योतिषाचार्य उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी महाराज के सान्निध्य में रहें। उपाध्याय श्री मूलमुनिजी म.सा. के लिए सामान्य और विशिष्ट जैसा कोई भेद नहीं है। वे छोटों को भी सम्मान देते हैं। उनमें ऋजुता, मृदुता तथा अप्रतिबद्ध, फक्कड़ता का अनूठा सम्मिश्रण है। जो भी उपाध्याय मूलमुनिजी म.सा. के प्रवचन सुनता है, वह उनसे और उनके प्रवचनों से बहुत प्रभावित होता है। साहित्य के नौ ही रस उनके प्रवचनों में विद्यमान हैं। मधुर गायक होने की वजह से वे गीत कविताओं के माध्यम से प्रवचनों को अधिक सरस व प्रभावी बना देते हैं। हर विषय का समावेश उनके प्रवचनों में रहता है। वे अपने गुरुदेव जैन दिवाकर जी की भाँति हर प्रवचन की शुरूआत भक्तामर स्तोत्र के श्लोक से करते हैं और हर विषय को आगम के आधार पर स्पष्ट करते हैं। वे बार-बार कहते हैं कि हम एकता की शुरुआत अपने परिवार से करें। प्रेम से मिलजुल कर रहें, अप्रिय और आवेशपूर्ण भाषा का प्रयोग नहीं करें। वे प्रकृति और संस्कृति की मौलिकताओं के जीवन्त प्रतीक और उपदेष्टा हैं। उनके व्याख्यानों और व्याख्यान के आख्यानों में वैसी ही सहजता है, जैसी प्रकृति के किसी सघन कुंज में बहने वाले झरने में।

इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व के धनी उपाध्याय पू. श्री मूलमुनिजी म.सा. को एकता और अनुशासन बहुत प्रिय है। वैचारिक असहमतियों को वे एकता के लिए बाधक नहीं बनने देते हैं। उपाध्यायश्री गद्य-पद्य के अच्छे रचनाकार हैं। कुछ ऐतिहासिक कथाओं को उन्होंने सरल सुबोध काव्य में पिरोया है, जिन पर धारावाहिक रूप में व्याख्यान दिये जा सकते हैं, शोधालेख तैयार किये जा सकते हैं। करीब दो दर्जन कृतियाँ उनकी साहित्यिक प्रतिभा का प्रमाण हैं। अनेक भाषाओं के जानकार उपाध्यायश्री का व्यक्तित्व वट वृक्ष जैसा और कृतित्व उसकी छाँव जैसा है। साहित्यसेवी विपिन जारोली के संपादन में जैन दिवाकर वांगमय के पुनरुद्धार का ऐतिहासिक कार्य आपकी प्रेरणा से संपन्न हुआ ।

उपाध्याय पू. श्री मूलमुनिजी की विद्वत्ता और प्रभावकता का मूल्यांकन करते हुए प्रवर्तक पू. श्री रूपमुनिजी म.सा. 'रजत' के सुझाव पर आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेन्द्रमुनि जी म. सा. ने उन्हें वि.सं. 2051 (सन् 1994) में 'उपाध्याय' पद प्रदान किया। समयबद्धता उनकी चर्या और प्रवचनों की एक अनूठी विशेषता थी। वे कभी भी समय का अतिक्रमण नहीं करते थे।

यह सौभाग्य है कि ऐसे वयस्थविर, संयमस्थविर और ज्ञानस्थविर उपाध्याय मुनिराज का दर्शन, वंदन, प्रवचन श्रवण और मंगल श्रवण सबको मिला, उनका पावन सान्निध्य अनुभवपूर्ण मार्गदर्शन सबको मिला। ऐसे ओजस्वी पुरुष के स्मृति दिवस पर वंदन, नमन ! ❖❖

मरने के बाद भी परोपकार का अवसर

जीते जीते रक्त दान, जाते जाते नेत्र दान, अंग दान या देह दान

- सी.ए. अजीत पटवा जैन, फरीदाबाद (गुरुग्राम)

पिछले 40 वर्षों से अधिक समय से निःस्वार्थ सेवा करते करते हुए मुझे अनुभव हुआ कि परोपकार करने वाले को कभी स्वयं के लिए कोई चीज की जरूरत ही नहीं पड़ती। जैसे रक्तदाता को जीवन में अपने लिए रक्त की जरूरत पड़ती नहीं देखी गई। जीवन में परोपकार से धन वृद्धि, स्वस्थ व सुखी जीवन, संतुष्टि प्राप्त होती है, इसका मात्र कारण है प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दुआओ का मिलना ।

मेरी भावना नामक गीत के चौथे पद्म में लिखा है:-
अहंकार का भाव न रखें, नहीं किसी पर क्रोध करूं,
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या भाव धरू।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं,
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूं।।

इस चार पंक्तियों में पूरे जीवन का चरित्र परिलक्षित होता है। स्वयं पर नियंत्रण, सीधी व सही सोच और दूसरों की सेवा। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर मैं सभी गृहस्थ पुरुष या महिला, सभी साधु-साध्वी, स्वामी, से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि ज्यादा नहीं तो मरने के बाद नेत्रदान का संकल्प जरूर लें, जिससे भारत में अंधनिवारणता में सहयोग हो सके।

ऐसा कार्य करने में किसी भी शास्त्र में बंदिश नहीं है। ऐसा माना जाता है और शास्त्रों, पुराणों में यह अंकित है कि आत्मा शरीर से अलग है और आत्मा कभी मरती नहीं, जो मरता है वह शरीर है और उसे विनष्ट करना होता है। अतः मृत शरीर से नेत्र या कोई अंग ले लें तो आत्मा के उत्थान में कोई बाधा नहीं होती, क्योंकि आत्मा तो व्यक्ति के कर्मों के अनुसार अन्य गति प्राप्त कर लेती है और जो लोग आत्मा में विश्वास ही नहीं करते, उनके लिए तो शरीर ही सब कुछ है तो उस विनिष्टकारी शरीर से कुछ भी यंग लेलो या पूरा शरीर दान कर लो क्या फर्क पड़ता है।

शरीर के विनष्ट करने से पूर्व अगर नेत्रदान किए जाएं तो दो व्यक्तियों को रोशनी मिलती है, इसी तरह अगर अंग दान करने से छह लोगों के जीवन रक्षण की संभावना बनती है और अगर संपूर्ण शरीर को दान किया जाए तो शरीर शिक्षा, अन्वेषण, विज्ञान की उन्नति में उपयोगी बन जाता है और एक महत्वपूर्ण कार्य हो जाता है कि शरीर विनष्ट करने में जो पाप क्रिया होती है वह बच जाती है। जीवन जीने में तो जाने अनजाने में पाप होते ही हैं, तो मरने के बाद पाप क्यों कर हो ।

ऐसे परोपकारी कार्यों में भागीदार बनने के लिए हार्दिक अपील करता हूँ।

प्रथम शिक्षा

शास्त्र मनुष्य को पहली शिक्षा देते हैं - अनुशासन में रहना। अनुशासन का अर्थ क्या होगा? शासन यानी आज्ञा और अनु का अर्थ है अनुसार चलना। तो अनुशासन में रहना अर्थात् आज्ञा के अनुसार चलना या पालन करना। संस्कृत में एक धातु है - शासु अनुशिष्टौ। जैसी आज्ञा हो, उसके अनुसार चलना।

अनुशासन शब्द में केवल पांच अक्षर है, किन्तु ये अपने आप में बड़ा महत्व छिपाए हुए हैं। संसारनीति, राजनीति और धर्मनीति सभी में इनकी बड़ी भारी आवश्यकता रहती है। हम यह कह सकते हैं कि इनके बिना कहीं भी काम नहीं चलता।

संसार नीति में अगर पुत्र, माता-पिता व गुरुजनों की आज्ञा का पालन नहीं करता है तो वह कुपुत्र कहलाता है, राजनीतिक में शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत काम करने वाले कर्मचारी राजा अथवा सरकार की आज्ञा का पालन नहीं करते तो गद्दार कहलाते हैं तथा धर्मनीति में वीतराग के वचनों का तथा धर्माचार्यों की आज्ञा का पालन न करने वाले नास्तिक या मिथ्यात्वी साबित होते हैं और अन्त में उनकी क्या दशा होती है?

समाचार प्रकाश

युवाचार्य श्री महेंद्रऋषिजी का 59वाँ जन्मोत्सव पनवेल में श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया गया

युवाचार्यश्री जी का आगामी चातुर्मास 2026 भीलवाड़ा में घोषित

कापड़ बाजार जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण संघीय युवाचार्य पूज्य श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. का 59वाँ जन्मोत्सव शनिवार को पनवेल स्थित बैंक्वेट हॉल में देशभर से पधारे हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में तप, त्याग और गुरु-भक्ति से परिपूर्ण वातावरण में भव्यता के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ मे प्रेरणा महिला मंडल और मेवाड़ महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रस्तुत भावपूर्ण स्वागत गीत से हुआ। मंचासीन एवं अतिथियों का चातुर्मास समिति के अध्यक्ष राजेश बांठिया और शैलेन्द्र खेरोदिया ने शब्दों से स्वागत कर युवाचार्यश्री की दीर्घायु की मंगलकामना की।

इस अवसर पर पू. श्री हितेंद्रऋषिजी म.सा. और पू. श्री धवलऋषिजी म.सा. ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि युवाचार्यश्री भले ही युवाचार्य बन गए हैं, पर उनमें आज भी वही सरलता और सहजता विद्यमान है, जब मैं वैराग्य में आया था, तब उन्होंने कहा था - 'मुझे गुरुदेव मत कहना, गुरुदेव तो केवल आचार्य सम्राट आनंदऋषिजी हैं।' महापुरुषों की यही विशेषता होती है कि वे कोई कार्य अधूरा नहीं छोड़ते।

सभा में उपस्थित अनेक श्रावकों ने भी युवाचार्यश्रीजी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए कहा कि उन्होंने अपने प्रेरणादायी जीवन से कई आत्माओं को धर्म मार्ग पर अग्रसर किया है। वे आचार्य सम्राट आनंदऋषिजी म.सा. की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने में एक सशक्त सेतु बने हैं। उनकी सरलता, विनम्रता और समर्पण भाव से संपूर्ण जैन समाज गौरवान्वित है। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में पनवेल विधायक प्रसाद ठाकुर, नगरसेवक राजू सोनी, प्रीतम म्हात्रे, तथा देशभर से पधारे अनेक श्रद्धालु, श्रीसंघों के प्रतिनिधि और राष्ट्रीय जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्य रूप से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारस जी मोदी जैन, विश्वस्त मण्डल सदस्य श्री रमणलाल जी लुंकड़ जैन, राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन श्री नरेश जी बोहरा जैन, राष्ट्रीय समन्वयक ज़ोन-1 श्री सुरेश जी लुणावत जैन, श्री कंवरलालजी सूरिया जैन ज़ोन-3, वैय्यावच्च योजना राष्ट्रीय मंत्री श्री रतनचंद जी सिंघवी जैन, हर प्रांत जैन भवन योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अशोककुमार जी एन. पगारिया जैन, आत्म-ध्यान प्रसार योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकुमारजी 'पिन्टू' कर्नावट जैन, पूर्व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी पगारिया जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, मुंबई-पुणे प्रांतीय अध्यक्ष श्री नितिन जी बेदमुथा जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सागर जी सांखला जैन, पूर्व राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती रूचिरा जी सुराणा जैन, श्रीमती विमल सुदर्शन जी बाफना जैन, श्रीमती कल्पना जी कर्नावट जैन-पंचम ज़ोन महिला अध्यक्षा, श्री सुभाष जी ललवानी जैन, श्री प्रवीण जी लुणावत जैन, श्री अभिषेक जी दुग्गड़ जैन, श्री अमोल जी नाहर जैन, श्री चतरलाल जी लोढ़ा जैन, श्री भैरूलाल जी लोढ़ा जैन, श्री दिलीप जी नाबेड़ा जैन, श्रीमती कंचन जी सिंघवी जैन, श्रीमती चंदना जी कोठारी जैन आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

राष्ट्रीय महिला जैन कॉन्फ्रेंस की चेयरमैन श्रीमती अनामिका जी तलेसरा जैन ने इस अवसर पर आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. का बधाई संदेश भी पढ़कर सुनाया। चातुर्मास समिति के मंत्री श्री रणजीत जी कांकरेजा और श्री अशोक जी बोहरा जैन ने संचालन करते हुए बताया कि जन्मोत्सव उपलक्ष्य में गीतांजलि जैन ने 100 उपवास, मंगला जी मुनोथ जैन ने 15 उपवास तथा मीरा बाई जी लुणिया जैन ने 268 आयंबिल तप की भेंट दी। श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की मुख्य शाखा ने मुख्यमंत्री सहायता कोष में 11 लाख रुपये राशि मानव सेवा के लिए देने की घोषणा की। वहीं पनवेल श्रीसंघ ने स्वधार्मिक सहायता फंड की स्थापना की, जिसमें बड़ी राशि एकत्रित हुई।

युवाचार्यश्री के सान्निध्य में दीक्षार्थी बहन शीतल सोलंकी और बहन कोमल छाजेड़ का श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया। युवा साथी परिवार की ओर से विहार एवं वैयावच्च सेवा क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले देशभर के 16 विहार ग्रुपों को श्री आनंद-शिव-महेंद्र सेवा रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया। डोंबिवली के श्याम जी कांकरेचा को विशेष सेवा रत्न सम्मान से अलंकृत किया गया।

युवाचार्य पूज्य श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. ने अपने आशीर्वचन में कहा कि मैं अपने माता-पिता, आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषिजी, आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म. सा. तथा अपने गुरु भाइयों के प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही आप सभी श्रावक-श्राविकाओं का अपार स्नेह और अटूट भक्ति मेरे लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत है। यह दिन मेरे जीवन में आत्मचिंतन और कृतज्ञता का अवसर है।

सभा के समापन पर उन्होंने मेवाड़ सिंहनी यशकंवर जी म.सा. की शिष्या महासती पू. श्री सुधाकंवर जी आदि ठाणा का वर्ष 2026 का चातुर्मास साधना सदन पनवेल एवं युवाचार्यश्रीजी ने अपने स्वयं का होली चातुर्मास खाचरोद (मध्य प्रदेश) तथा आगामी वर्ष 2026 चातुर्मास राजस्थान में भीलवाड़ा शांतिभवन में चातुर्मास करेंगे की घोषणा की।

इस अवसर पर भीलवाड़ा शांति भवन श्रीसंघ के संरक्षक श्री नवरतनजी बंब जैन, अध्यक्ष श्री राजेंद्र प्रसाद जी चीपड़ जैन, मंत्री श्री नवरतनमल जी भलावत जैन, श्री कंवरलालजी सूरिया जैन, श्री मदनलालजी चोरड़िया जेन सहित 50 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने जयघोष करते हुए युवाचार्यश्री से आशीर्वाद लिया और चातुर्मास प्रदान करने पर हार्दिक आभार व्यक्त किया।

प्रेषक : सुनील चपलोत जैन

जैन कॉन्फ्रेंस, प्रांतीय शाखा गुजरात द्वारा आयोजित गुजरात प्रांतीय श्रमण संघीय श्री संघ संवाद संगोष्ठी एवं द्वितीय कार्यकारिणी मीटिंग का आयोजन

सूरत (गुजरात) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्री गुरु पुष्कर देवेंद्र चैरिटेबल ट्रस्ट, श्री गुरु पुष्कर भवन, वेसू, सूरत के तत्वावधान में तथा श्रमण संघीच प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा., साहित्य दिवाकर पू. डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म.सा., विदुषी महासाध्वी पू. डॉ. श्री सुलक्षणाजी म.सा., मधुर व्याख्यानी महासाध्वी पू. डॉ. श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा. के पावन सान्निध्य में रविवार, दिनांक 5 अक्टूबर 2025 को जैन कॉन्फ्रेंस, प्रांतीय शाखा गुजरात द्वारा आयोजित गुजरात प्रांतीय श्रमण संघीय श्री संघ संवाद संगोष्ठी एवं द्वितीय कार्यकारिणी मीटिंग का आयोजन किया गया।

सभा की शुरुआत श्री समरथलालजी खाब्या (अध्यक्ष, प्रांतीय ज्ञान प्रकाश योजना) के मंगलाचरण द्वारा की गई। दिवंगत साधु-संतों और श्रावक-श्राविकाओं को मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांतीय अध्यक्ष श्री संपतजी खाब्या जैन द्वारा स्वागत उद्बोधन किया गया। प्रांतीय महामंत्री श्री विनोदजी धोका जैन द्वारा प्रथम मीटिंग की कार्यवाही का पठन किया गया, जिस पर सदन द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई। प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री लोकेशजी मादरेचा ने प्रथम मीटिंग से अब तक का आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया, जिसकी सभा ने सर्वसम्मति से मंजूरी प्रदान की। प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सरिताजी कूकड़ा जैन द्वारा अभी तक किए गए सेवाकीय कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं आगामी कार्यों की जानकारी प्रदान की।

प्रांतीय महामंत्री श्री विनोदजी धोका जैन द्वारा प्रथम मीटिंग के पश्चात हुए सभी कार्यों की जानकारी देकर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्रांतीय ज्ञान प्रकाश योजना के अध्यक्ष श्री समरथजी खाब्या जैन एवं महामंत्री श्री धर्मीचंदजी चोपड़ा जैन द्वारा अब तक के कार्यों की रिपोर्ट पेश की गई। यह भी कहा कि संपूर्ण भारत में ज्ञानशाला का पाठ्यक्रम एक ही हो और वो केंद्रीय कार्यालय से संचालित हो। प्रांतीय विहारधाम योजना के महामंत्री श्री मनीषजी टुकलिया जैन ने गुजरात में बन रहे एवं संभावित विहारधामों की जानकारी दी। इसके बाद प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री देवेन्द्रजी बोकडिया जैन, प्रांतीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री प्रकाशजी तातेड जैन, श्री ललितजी ढालावत जैन, श्री विपुलजी भोगर जैन, राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना के अध्यक्ष श्री विकासजी सिंघवी जैन इत्यादि ने प्रासंगिक उद्‌बोधन दिया। तत्पश्चात गुजरात प्रांतीय श्रमण संघीय श्रीसंघ संवाद संगोष्ठी का आगाज हुआ एवं गुजरात भर से पधारे सभी संघों के पदाधिकारियों के बीच संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ।

गुजरात प्रांतीय अध्यक्ष श्री संपतजी खाब्या जैन द्वारा अपने उद्‌बोधन में धर्म, सेवा, संगठन, संस्कार पर प्रकाश डाला गया। प्रांतीय चेयरमैन श्री लक्ष्मीलालजी नाहर जैन ने अपने ओजस्वी तेजस्वी उद्‌बोधन में सभी संघों के विकास में जैन कॉन्फ्रेंस की भूमिका बताई। साथ ही आगामी समय में होने वाले कार्यक्रमों से सभी को अवगत किया। पूर्व अध्यक्ष श्री बंशीलालजी सूर्या जैन ने प्रासंगिक उद्‌बोधन के साथ गुजरात में 'जैन भवन' का निर्माण होवे ऐसी इच्छा जताई और कहा शीघ्र ही इस कार्य की शुरुआत हो।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय समन्वयक एवं प्रांतीय निवर्तमान अध्यक्ष श्री जयंतीलालजी कूकड़ा जैन ने प्रासंगिक उद्‌बोधन के साथ-साथ खारेल विहारधाम की जानकारी दी। आज के सामारोह के मेहमान, मार्गदर्शक और मुख्य वक्ता जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ श्री अमितरायजी जैन द्वारा मार्मिक उद्‌बोधन के साथ मार्गदर्शन प्रदान किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस की स्थापना में गुजरात के योगदान, श्रमण संघ की एकता, संघों में संगठन की शक्ति पर प्रकाश डाला गया। जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात के पदाधिकारीयों द्वारा आदरणीय डॉ. अमितरायजी जैन का शाल, माला और स्मृति चिन्ह से अभिनंदन किया गया। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ वेसु के अध्यक्ष श्रीमान गणेशलालजी भोगर जैन ने सभी संघों एवं पधारे हुए सभी मेहमानों का अभिनंदन किया और जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात के शीर्ष पदाधिकारियों का आभार प्रकट किया कि आज की ये संगोष्ठी श्री गुरु पुष्कर धाम वेसु में रखी जिससे हमारे संघ के गौरव में अभिवृद्धि हुई।

तत्पश्चात आशीर्वचन के रूप में गुरुदेव डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. का प्रवचन हुआ। गुरुदेव श्री ने बताया कि आज पुष्कर धाम में गुजरात कॉन्फ्रेंस के नेतृत्व में लोकसभा सज रही हैं। आयोजक जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात के लिए कहा कुछ लोग ऐसे होते है जो इतिहास बनाया करते हैं। गुरुदेव का मंगल पाठ होने के पश्चात श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ वेसु सूरत के अध्यक्ष श्री गणेशलालजी भोगर जैन, महामंत्री श्री मदनलालजी दोशी जैन, कोषाध्यक्ष श्री किरणजी दोशी जैन एवं जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली के राष्ट्रीय मंत्री एवं स्थानीय संघ के उपाध्यक्ष एवं ट्रस्टी श्री आकाशजी मादरेचा जैन का शाल और माला से गुजरात पदाधिकारियों द्वारा स्वागत अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर प्रांतीय शाखा गुजरात के पूर्व अध्यक्ष श्री प्रकाशचंद्रजी सिंघवी जैन एवं राष्ट्रीय वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री हीरालालजी खाब्या जैन ने घोषणा की कि गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस के वर्तमान कार्यकाल में जितने भी विहारधाम गुजरात में बनेंगे उनमें RS 108000/- की धनराशि सप्रेम प्रदान करेंगे। गुजरात भर के सभी संघों का गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा अभिनंदन पत्र की फोटो फ्रेम प्रदान कर गुजरात पदाधिकारियों द्वारा सम्मान किया गया। अंत में प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री लोकेशजी मादरेचा जैन की आभारविधि के साथ श्री गुरु पुष्कर धाम वेसु संघ की सुंदर व्यवस्थाओं एवं आज के संपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन हेतु ऋण स्वीकार करते हुए, सभा का समापन कर सभी ने साथ में भोजन लिया।

प्रेषक : विनोद धोका जैन

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा चेन्नई में दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन का भव्य आयोजन

चेन्नई (तमिलनाडु) : देव-गुरु-धर्म के प्रबल पुण्य प्रताप से श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस ज़ोन 1 (दक्षिण भारत) के तत्वावधान में चेन्नई शहर में चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण संघीय चारित्र आत्माओं के पावन सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में आयोजित दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन का आयोजन श्रमण संघीय मंत्री, राष्ट्र संत पूज्य गुरुदेव श्री कमलमुनि जी म.सा. 'कमलेश' आदि ठाणा 5, आगम ज्ञाता, वाणी के जादूगर पूज्य गुरुदेव श्री समकितमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3, स्वर्ण संयम आराधक पूज्य गुरुदेव श्री विरेन्द्रमुनि जी म.सा., ओजस्वी वक्ता पंडित रत्न पूज्य गुरुदेव श्री

कपिलमुनि जी म.सा., महासाध्वी पूज्या गुरुवर्या श्री धर्मप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 2 के पावन सान्निध्य में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 9 बजे श्री राजा अन्नामलई मंडरम, चेन्नई में 12 अक्टूबर को तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की तमिलनाडु इकाई द्वारा दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन का भव्य आयोजन से हुआ। जैन कॉन्फ्रेंस की दक्षिण भारतीय इकाई जोन 1 के राष्ट्रीय समन्वयक श्री सुरेश कुमारजी लुणावत जैन ने अपनी टीम के साथ चेन्नई शहर में चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण संघीय साधु-साध्वियों से निरंतर परामर्श कर उन सबके सान्निध्य और आशीर्वाद से कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की और दक्षिण भारत में प्रथम बार इस तरह के शानदार सम्मेलन का आयोजन हुआ

पंडित रत्न पू. श्री वीरेंद्रमुनिजी म.सा. ओजस्वी वक्ता पू. श्री कपिलमुनिजी म.सा. एवं महासाध्वी पूज्य गुरुवर्या धर्मप्रभाजी म.सा. ने अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्यक्रम की सफलता के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। इसी के साथ श्रमण संघ आचार्य ध्यानयोगी परम पूज्य गुरुदेव डॉ. शिवमुनिजी म.सा. एवं श्रमण संघीय युवाचार्य पू. श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. ने अपना शुभकामना संदेश प्रेषित किया। वरिष्ठ प्रवर्तक पू. श्री सुकनमुनिजी म.सा. का शुभकामना संदेश भी प्राप्त हुआ। ये समस्त संदेश कार्यक्रम में पढ़कर सुनाए गए।

इसी के साथ पूरे देश से आमंत्रित जैन कॉन्फ्रेंस के विभिन्न पदाधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने अपने प्रबोधन से श्रमण संघ की उत्तरोत्तर प्रगति और उज्जवल भविष्य के लिए अपने विचार और सुझाव रखे और एकमेव स्वर में श्रमण संघ की उन्नति के लिए हर संभव प्रयास करने के उपायों पर सहमति बनी।

सम्मेलन में राष्ट्र संत पूज्य गुरुदेव कमलमुनिजी म.सा. की सद्प्रेरणा से वीरांगना सम्मान के रूप में एक अनूठी पहल की गई। गौरतलब है कि पूज्य गुरुदेव कमलमुनिजी म.सा. सामाजिक सद्भाव के रूप में समाज में उपेक्षित समझी जाने वाली विधवा महिलाओं को उचित सम्मान दिलाने के लिए लगातार पहल कर रहे है। उनका मानना है कि ऐसी महिलाओं को प्रत्यक्त समझने के बजाए उनको वीरांगना कहकर संबोधित किया जाए और उन्हें परिवार में सबसे वरिष्ठ स्थान प्राप्त होना चाहिए तथा हर तरह के शुभ कार्यों में उनकी विशेष भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। गुरुदेव की इसी पहल को आदर्श मानते हुए सम्मेलन में सैकड़ों वीरांगना बहनों को आमंत्रित किया गया एवं सभा के समक्ष उन सबको मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। अब तक अपशकुन की प्रतीक मानी जाने वाली ये महिलाएं पहली बार इस तरह का सम्मान पाकर भावुक हो उठी और सभा में उपस्थित श्रद्धालुगण भी गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता से भर उठे। सबने एक स्वर में विधवा महिलाओं के प्रति अपनी स्थापित राय को बदलने का प्रण लिया।

सम्मेलन में अपने संबोधन में पू. डॉ. समकित मुनिजी म.सा. ने श्रमण संघ की हालिया चुनौतियों पर गहन विचार की आवश्यकता पर बल दिया और संघ को सुदृढ़ और सशक्त बनाने के लिए सभी के सहयोग का आह्वान किया। अपनी ओजस्वी वाणी से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करते हुए गुरुदेव ने पुरजोर रूप में श्रमण संघ को अटूट और मजबूत बनाने के लिए सभी प्रयासों को संत मंडल के पूर्ण आशीर्वाद का आश्वासन दिया। समकित मुनिजी ने साफ शब्दों में चेताते हुए श्रमण संघ पर विभिन्न रूपों में आने वाली समस्याओं के प्रति संघ को आगाह किया और उनको नींद से जागने का संदेश दिया। गुरुदेव ने कहा कि श्रमण संघ भले ही उदार है लेकिन ये उदारता ही इसकी विशेषता है लेकिन हालिया रूप में इस विशेषता को कमजोरी माना जा रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस के महामंत्री डॉ. अमितराय जी जैन ने भी अपने उद्बोधन से श्रमण संघ की राह में आ रही विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला और उनके समसामयिक समाधान के लिए अपने सुझावों से अवगत कराया। इसी के साथ अन्य कई पदाधिकारियों और गणमान्य व्यक्तियों का संबोधन हुआ और सबने समेकित स्वर में श्रमण संघ की एकता और उन्नति के लिए अपना पूर्ण प्रयास देने के लिए प्रतिबद्धता जाहिर की।

इसी के साथ समारोह में उपस्थित वरिष्ठ पदाधिकारियों की मौजूदगी में जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा द्वारा तमिलनाडु प्रांतीय महिला शाखा की समस्त पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण करवाया गया और उनके आगामी उज्जवल एवं ऐतिहासिक कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की।

श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म.सा. के आध्यात्मिक वर्षावास की गतिविधियाँ

सूरत (गुजरात) : श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का आध्यात्मिक वर्षावास सम्पन्नता की ओर गतिमान है। नित्य सुबह 6:15 से 7:30 बजे तक आत्म-ध्यान होता है।

1 अक्टूबर को आचार्य भगवन् के मंगल आशीर्वाद से तेरापंथ श्रीसंघ चलथान ने अणुव्रत सप्ताह आरम्भ किया। इस अवसर पर श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म.सा. ने आशीर्वाद दिया एवं उद्‌बोधन में श्रमण संघ और तेरापंथ समाज के सौहार्दपूर्ण व स्नेहपूर्ण सम्बन्धों के बारे में विस्तृत रूप से बताया। इस अवसर पर श्री अर्जुन मेड़तवाल, श्री ज्ञानचन्द दुग्गड़, श्री संजय बाफना, श्रीमती पायल चोपड़ा आदि उपस्थित थे।

2 अक्टूबर को आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से प्रभु महावीर की अंतिम देशना श्री उत्तराध्ययन सूत्र के 21 दिवसीय अनुष्ठान का आरम्भ हुआ। युवामनीषी मधुर गायक श्री शुभममुनि जी म.सा. के मुखारविंद से भगवान महावीर स्वामी की अंतिम देशना जन-जन को पावन करने वाली, भवी जीवों को संसार-सागर से पार करने वाली वाणी आरम्भ हुई। प्रथम दिन प्रथम अध्याय की 48 गाथाओं का वाचन हुआ एवं श्री उत्तराध्ययन की महिमा तथा श्री उत्तराध्ययन का महत्त्व विस्तार से समझाया गया।

चण्डीगढ़ से महन्त गोविन्दाचार्य जी महाराज उपस्थित हुए जिन्होंने अपने गुरु द्वारा संपादित यथार्थ गीता की प्रति श्री शिरीषमुनि जी म.सा. को भेंट की। आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ रायपुर (छत्तीसगढ़), भीलवाड़ा, गोड़ादरा, चलथान आदि जगहों के श्रद्धालु उपस्थित हुए।

8 अक्टूबर को शाश्वत आयंबिल ओली का समापन हुआ। आयंबिल ओली करने वाले श्री शोकीन पोखरना एवं सुश्री ज्योति मेहता का स्वागत अभिनन्दन अवध श्रीसंघ एवं महिला मण्डल ने किया। मनमाड़ से श्रावक-श्राविका मण्डल एवं शिरड़ी से आदर्श बहु मण्डल ने दर्शन लाभ प्राप्त किया। शाम को मुम्बई मेवाड़ संघ ने गुरु दर्शन, जिनवाणी का लाभ प्राप्त किया।

14 अक्टूबर को आचार्य भगवन् के दर्शन एवं दीक्षा की आज्ञा हेतु परम विदुषी उपप्रवर्तिनी महासाध्वी डॉ. श्री सत्य साधना जी म.सा. के चरणों में अध्ययनरत मुमुक्षु डॉ. कोमल छाजेड़ का आना हुआ, जिनकी दीक्षा 16 जनवरी, 2026 को जामनेर श्रीसंघ में सम्पन्न होगी। इस अवसर पर अवध की महिला मण्डल द्वारा मुमुक्षु बहन का मंगल तिलक लगाकर माला, शाल द्वारा स्वागत-अभिनन्दन किया गया। मुमुक्षु बहन ने अपने हृदय के उद्‌गार भी सभा के मध्य रखे। आज की सभा में पूना श्रीसंघ के वरिष्ठ श्रावक श्री जुगराज पालरेचा, श्री बालचन्द संचेती, श्री पोपटलाल ओस्तवाल, श्री विलास भाऊ राठौड़ आदि गुरु दर्शन हेतु उपस्थित हुए।

22 अक्टूबर को विश्व शांति एवं सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय की पवित्र भावना के साथ आचार्य सम्राट ध्यान योगी पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. ने चार दिन की मौन ध्यान-साधना के बाद वीर निर्वाण संवत् 2552 का मंगल पाठ प्रदान किया। 21 दिवसीय श्री उत्तराध्ययन का अनुष्ठान भी आज सम्पन्न हुआ।

प्रातः श्री शुभममुनि जी म.सा. के द्वारा नवकार मंत्र की पावन पवित्र धुन के साथ सभा का शुभारंभ हुआ। श्री

उत्तराध्ययन के 36वें अध्ययन के मूल पाठ का वांचन किया। प्रवचन प्रभाकर श्री शमितमुनि जी म.सा. ने अर्थवाचना की। पूरे 21 दिनों में अधिकांश मूल वाचन एवं विवेचन प्रवचन प्रभाकर श्री शमित मुनि जी महाराज द्वारा सम्पन्न हुआ।

नये वर्ष के अवसर पर आये हुए श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं को उद्‌बोधन देते हुए आचार्य भगवन् ने फरमाया कि अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें। मैं शुद्धात्मा हूँ, मेरा घर सिद्धालय है और मैं निश्चित सिद्धालय जाऊंगा। सिद्धालय जाने के लिए मोह और मिथ्यात्व दूर करना होगा। इस देह को अपना मानस मिथ्यात्व है। हमारे चौरासी लाख जीवायोनि में भटकने का कारण है मिथ्यात्व और मिथ्या धारणा। मिध्यात्व के कारण मनुष्य संसार सागर में गोते खाता है। अनंत ज्ञान मेरे भीतर है, अनंत दर्शन मेरे भीतर है. आत्मा के अष्ट गुण मेरे भीतर हैं। इस नव वर्ष पर संकल्प लें कि मुझे सिद्धालय जाना है, जन्म-मरण के चक्कर से छूटना है। इस संसार में तुम्हारा कोई नहीं है, कोई सगा नहीं है, अपनी आत्मा का कल्याण कोजिए। इससे पूर्व श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म.सा. ने जिनवाणी का पान कराया।

23 अक्टूबर को महावीर हॉस्पिटल, सूरत की चेयरमैन रूपाबेन मेहता आचार्य भगवन् से आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु उपस्थित हुई। आचार्य भगवन् ने उन्हें आत्म ध्यान साधना के बारे में बताते हुए उनके मानव सेवा के कार्यों की अनुमोदना की अनुमोदना की एवं आशीर्वाद प्रदान किया। **- प्रवचन भास्कर श्री शमितमुनि जी म.सा.**

दुबई में पर्युषण महापर्व का सफल आयोजन - जैन स्थानक व भोजनशाला का उदघाटन

दुबई (यू.ए.ई.) : श्री सकल स्थानकवासी जैन संघ, दुबई (यू.ए.ई.) द्वारा प्रेषित पत्र के अनुसार पहली बार पर्युषण महापर्व के पावन अवसर पर स्वाध्यायी श्री अशोक जी नैनसुख जी पगारिया, श्री शांतिलालजी फुलफगर, श्री पूनमचंदी मोहनलाल जी संचेती का दुबई की पावन भूमि पर आगमन हुआ। स्वाध्यायियों का ज्ञान, मार्गदर्शन और उनका पावन सान्निध्य हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं था। उनके मार्गदर्शन से पर्युषण का आयोजन सफलता के साथ संपन्न हुआ और इस आयोजन ने हमारे समुदाय को नई दिशा दी।

इन आठ दिनों के दौरान पर्युषण महापर्व में भक्तों की उपसिंति अत्यधिक उत्साहजनक रही। दुबई जैसे शहर में रहते हुए भी कई श्रावक और श्राविकाओं ने उपवास, बेला, तेल और अठ्ठा जैसी तपस्याओं को अपनाकर समाज को प्रेरित किया जो इस पत्रि अवसर पर एक बड़ी और प्रेरणादायक उपलब्धि थी।

पर्युषण महार्व के अवसर पर हम दुबई में एक जैन स्थानक और भोजनशाला के शुभारंभ की घोषण करके अत्यंत गौरवान्ति महसूस कर रहे हैं। दुबई में जैन सीानक एवं भोजनशाला की शुरूआत एक ऐतिहासिक कदम रहा, जिसके लिए संघ को पूरे जैन समाज से भरपूर आभार और सराहना मिल रही है। इस महत्वपूर्ण कदम को लेकर संघ को जैन समुदाय से अपार धन्यवाद और प्रशंसा प्राप्त हो रही है जो हमें और अधिक प्रेरित करता है। यह केन्द्र केवल एक इमारत नहीं, बल्कि हमारे विश्वास, मूल्यों और सामूहिक एकता का प्रतीक है।

यहां का स्थानक 3300 वर्ग फुट में फैला हुआ है,ि जसमें धर्म साधना और सामुदायिक गतिविधियों के लिए समर्पित स्थान है। बारह महीने खुली रहने वाली भोजनशा, जहां शुद्ध और सात्विक जैन भोजन परोसा जाएगा। यह स्थानक दुबई में जैन समुदाय की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जरूरतों की पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण केन्द्र होगा। इस पर्व ने न केवल हमारी आस्था को मजबूत किया, बल्कि एकता को भी बढ़ावा दिया और दुबई समुदाय के लिए एक नई शुरूआत की नीवं रखी। इस परियोजनों की सफलता के लिए श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस से निरंतर आशीर्वाद और शुभकामनाओं की कामना पत्र में की गई। **प्रेषक : डॉ. धीर जैन-अध्यक्ष दुबई सकल स्था. जैन संघ**

साध्वीरत्ना पू. श्री निर्मितीप्रभा जी म.सा 'तप कौमुदी' पद से अलंकृत

सूरत (गुजरात) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की ओर से श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम विदुषी महासाध्वी पू. श्री सुशीलकंवर जी म.सा. की सुशिष्या जिनशासन प्रभाविका श्री चैतन्यश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में साध्वीरत्ना पू. श्री निर्मितीप्रभा जी म.सा. के 31 उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में 'तप कोमुदी' के पद से अलंकृत किया गया तथा आचार्य भगवन् की ओर से तप अभिनंदन पत्र प्रदान किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस का राष्ट्रव्यापी परिवार पूज्य साध्वी जी के उपवास की अनुमोदना करती है। **प्रेषक : विपुल जैन**

नादौन में पंजाब राज्यपाल ने लिया सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म. से आशीर्वाद

नादौन (हिमाचल प्रदेश) : पंजाब के राज्यपाल व चंडीगढ़ प्रशासक श्री गुलाबचंद जी कटारिया ने 9 अक्टूबर को नादौन में श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म.सा., पू. डॉ. श्री दीपेंद्रमुनि म.सा., पू. डॉ. श्री पुष्पेंद्रमुनि जी म.सा. के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्रातःकाल चंडीगढ़ से हैलीकाप्टर में विशेष रूप से गुरु दर्शनार्थ पधारे राज्यपाल श्री गुलाबचंद जी कटारिया क्रिकेट स्टेडियम (अमृतसर) पहुंचे। जहाँ उपायुक्त हमीरपुर अमरजीत सिंह जी तथा एस.पी. श्री भगतसिंह जी ठाकुर ने प्रशासन की ओर से उनका स्वागत किया। इसके बाद वह शहर में स्थित जैन स्थानक पहुंचे जहां श्री एस. एस. जैन सभा के अध्यक्ष श्री रमेश जी जैन की अगुवाई में सभा के पदाधिकारियों ने महामाहिम का स्वागत किया।

इस अवसर पर पंजाब राज्यपाल कटारिया जी ने अपने संबोधन में जैन धर्म की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि जैन धर्म अहिंसा, सत्य, त्याग और आत्मसंयम का प्रतीक है, जो सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मार्ग दिखाता है। राज्यपाल ने जैन साधु-साध्वियों की कठोर तपस्या और सादगीपूर्ण जीवनचर्या का विश्लेषण करते हुए कहा कि उनका जीवन समाज के लिए प्रेरणादायक है और उनकी शिक्षाएँ मानव जीवन को उत्कृष्ट दिशा प्रदान करती हैं। उन्होंने अपने गुरु उपाध्याय पू. श्री पुष्करमुनि जी म.सा. को प्रणाम करते हुए कहा कि 45 वर्ष के राजनीतिक जीवन में बेदाग जीवन जीना, यह उसी पुष्कर गुरु के आशीर्वाद से संभव रहा है। कार्यक्रम के दौरान जैन सभा के अध्यक्ष श्री रमेश जी जैन, मंत्री श्री मनोज जी जैन, कोषाध्यक्ष श्री रोहित जी जैन, संरक्षक श्री कीमती जी जैन आदि सदस्यों ने पारंपरिक हिमाचली टोपी पहनाई व शाल ओढ़ाकर स्वागत किया। राज्यपाल जी ने इस स्नेह और सम्मान के लिए जैन समाज का आभार व्यक्त किया तथा कहा कि उन्हें जैन संतों के दर्शन कर आत्मिक शांति और गहन प्रेरणा प्राप्त हुई है।

इस अवसर पर श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म.सा. ने राज्यपाल कटारिया जी के योगदान को स्मरण करते हुए उन्हें सच्चा श्रावक बताया। उन्होंने कहा कि सादा जीवन, उच्च विचार से युक्त कटारिया जी का व्यक्तित्व समाज के लिए आदर्श है। जैन समाज को गर्व है कि ऐसे संतस्वभावी और सेवा-निष्ठ गुरु भक्त पंजाब के राज्यपाल के रूप में कार्यरत हैं। पू. डॉ. पुष्पेंद्रमुनि जी म.सा. ने 'उत्तराध्ययन सूत्र' की व्याख्या की व श्री कटारिया जी द्वारा दिए गए धार्मिक योगदान के बारे बताते हुए उनके अनछुए पहलुओं की जानकारी समाज को प्रदान की। समारोह पश्चात हैलीपैड पर युवक मंडल के नीरज जैन, सक्षम जैन, महेंद्र जैन, आशीष जैन, राजीव जैन, भव्य जैन, सुनील जैन आदि सदस्यों ने राज्यपाल महोदय को गुलदस्ता देकर अभिनंदन किया। **प्रेषक : श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र**

श्रमण संघीय साध्वी पू. डॉ. हर्षप्रभाजी म.सा. का संथारापूर्वक देवलोकगमन

उदयपुर (राजस्थान) : उदयपुर में श्रमण संघीय साध्वी पू. डॉ. हर्षप्रभा का संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। 71 वर्ष की आयु में साध्वीजी ने 14 अक्टूबर को प्रातःकाल करीब 12:50 बजे अंतिम सांस ली। उनके देवलोकगमन से श्रमण संघ और आचार्य अमर पुष्कर देवेन्द्र संप्रदाय में शोक की लहर छा गई। साध्वी हर्ष प्रभा जी उपाध्याय पुष्कर मुनि व आचार्य देवेंद्र मुनि की सुशिष्या थी और वर्तमान आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनिजी की आज्ञानुवर्तिनी थी। वे पिछले 35 वर्षों से उदयपुर के तारक गुरु जैन ग्रंथालय परिसर में स्थिरवास कर रही थीं। **जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से पूज्य साध्वी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।**

।। श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ ।।

चेन्नई में आयोजित दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन में श्रमण संघीय मंत्री राष्ट्रसंत श्री कमलमुनिजी म. 'कमलेश', आगमज्ञाता डॉ. समकितमुनिजी म., स्वर्ण संयम आराधक श्री वीरेन्द्रमुनि जी म. ओजस्वीवक्ता श्री कपिलमुनिजी म. आदि संतगण अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए।

चेन्नई में आयोजित दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमेशजी भण्डारी जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजयजी जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. डॉ. अमितरायजी जैन एवं अन्य पदाधिकारीगण।

दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन के अवसर पर श्रमण संघीय मंत्री पू. श्री कमलमुनि जी म.सा. 'कमलेश' से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण।

दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमेशजी भण्डारी जैन, ज़ोन -1 के राष्ट्रीय समन्वयक श्री सुरेशकुमारजी लुणावत जैन आदि।

इसी अवसर पर पू. श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' के साथ मौजूद जैन कॉन्फ्रेंस परिवार के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण।

इस अवसर पर राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन की अध्यक्षता में उपस्थित जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा के पदाधिकारीगण।

चेन्नई में चातुर्मासार्थ विराजित पूज्य डॉ. समकितमुनि जी म. सा. के दर्शनार्थ पहुंचे राष्ट्रीय एवं प्रांतीय युवा पदाधिकारियों के मध्य मौजूद प्रो. डॉ. अमितरायजी जैन एवं अन्य पदाधिकारीगण।

चेन्नई में तेरे मेरे सपने संवाद केन्द्र के शुभारंभ के अवसर पर मौजूद राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जी जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचाजी जी जैन, तमिलनाडु प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संगीता जी बांठिया जैन एवं डॉ. अमितरायजी जैन आदि।

RNI NO.- 2123/1957
अक्टूबर 2025
Date of Publication : 23-24/10/2025

उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य श्री सुभद्रमुनि जी म.सा. से आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात् पुस्तिका का विमोचन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन एवं श्रावकगण।

महरौली में विराजित मधुर गायिका, साध्वी श्री सोनम जी म. के सान्निध्य में एक धार्मिक पुस्तिका का विमोचन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन एवं श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री अभयजी जैन तथा अन्य महानुभाव ।

चेन्नई में पू. श्री वीरेन्द्र मुनि जी म. सा. से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण श्री विजयजी जैन श्री सुरेशकुमारजी लुणावत जैन, डॉ. अमितरायजी जैन, श्री नरेश जैन एवं श्री विपुलजी जैन आदि।

इसी अवसर पर गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवा एवं महिला पदाधिकारीगण।

दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन के अवसर पर मौजूद राष्ट्रीय एवं प्रांतीय युवा शाखा के पदाधिकारीगण के मध्य मौजूद डॉ. अमितरायजी जैन आदि।

दक्षिण भारत श्रमण संघ सम्मेलन के अवसर पर मौजूद श्री सुरेशकुमारजी लुणावत जैन, श्री विपुलजी जैन, श्री मुनीशजी जैन।

जैन भवन दिल्ली में दिनांक 6 एवं 7 अक्टूबर 2025 को जैन विजनरी काउंसिल की प्रथम बैठक में उपस्थित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. डॉ. अमिताय जी जैन, हर प्रांत जैन भवन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अशोककुमार जी पगारिया जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुलजी जैन, श्रीमती पारूल जी जैन एवं अन्य सदस्यगण।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

अतुल जैन — राष्ट्रीय अध्यक्ष
डॉ. अमितराय जैन — राष्ट्रीय महामंत्री
विनय कुमार जैन — राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा
जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 बेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित